Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्ञान [मासिक]

माघ २०४०

१५ फरवरी से १५ मार्च तक

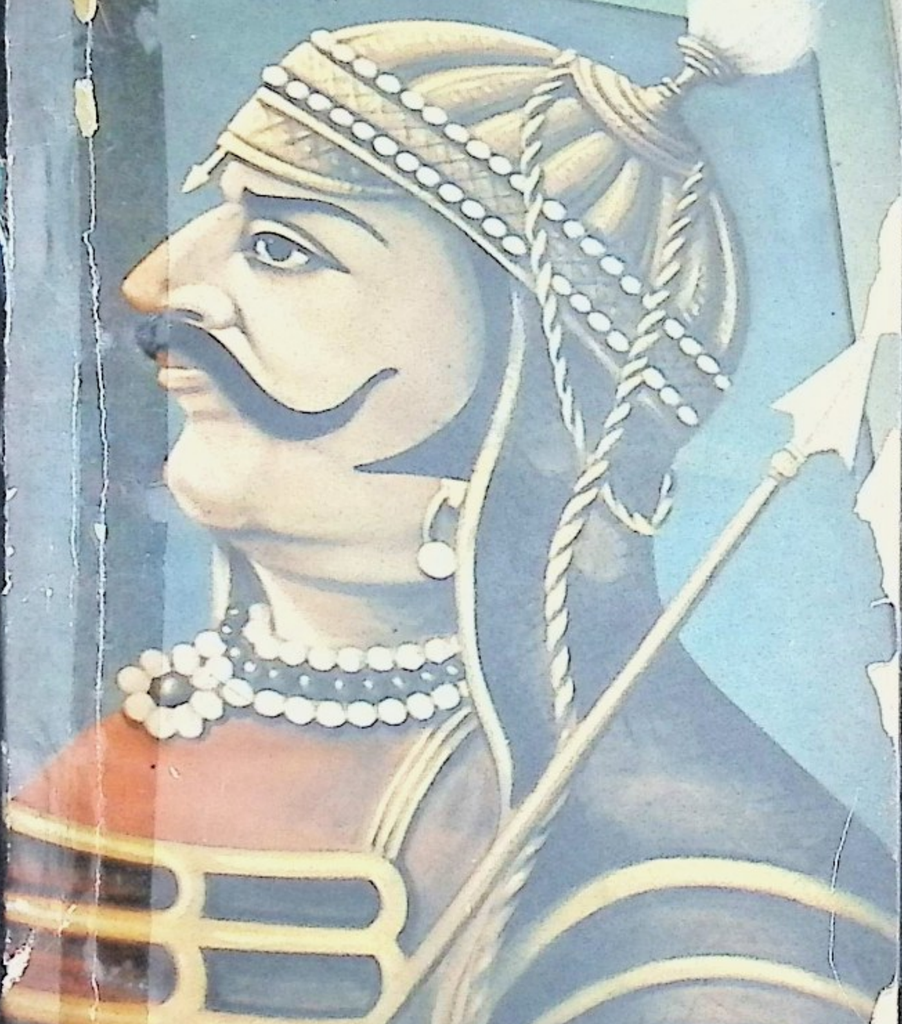

श्री महाराणा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

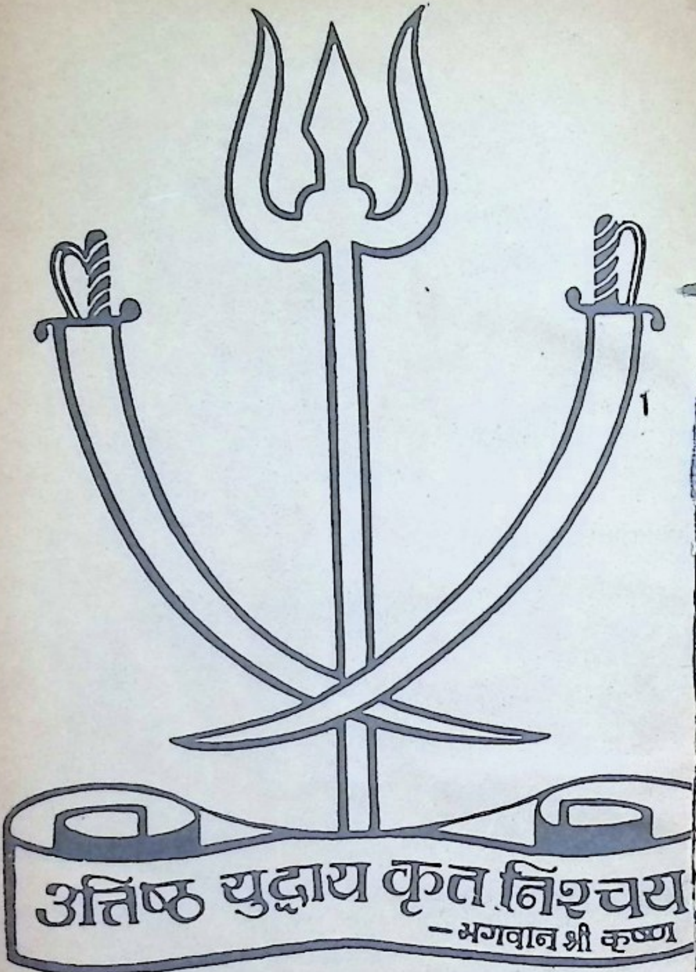

यह प्रतीक चिन्ह है हिन्दू रक्षा समिति का ।
इस में हमारा लक्ष्य बोलता है । इसे ही मोहर
[illegible] स्वीकारें । — वेद मिश्र:

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य स्थापना हेतु संघर्ष करो।

संस्थापक
स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु:
सम्पादक : राकेशरानी

१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग,
करौलबाग, नई दिल्ली-५
दूरभाष : ५६२६३९
५६४७४१
८०१२११
वार्षिक मूल्य : ३० रुपए
विदेश में : विमान से ४२ पौंड,
६० डालर
आजीवन : ५०१ रुपए
विदेश में : १००१)
यह प्रति : तीन रुपये

माघ संवत् २०४०
फरवरी, १९८४ वर्ष १६, अंक १०

महात्मा वेदभिक्षु: की थाती

प्राचीन हिन्दुस्तान, आर्यावर्त्त का मानचित्र कैसा था ? यज्ञ की ज्वाला के अनुरूप भगवा रंग विश्व के मानचित्र को प्रकाशित और आलोकित करता था। देश की सीमाओं का फैसला किसी भी राष्ट्र का शस्त्र बल ही करता है। यह एक इतिहास सिद्ध सत्य है। हमारा शस्त्रबल जब भी और जहां भी शत्रु की तुलना में कम होता है, तभी और उतनी ही हमारी सीमाएं सिकुड़ जाती हैं। १५ अगस्त १९४७ को देश का विभाजन होने के बाद ही खंडित भारत स्वतन्त्र हुआ था। हारे-थके और सत्तालोलुप नेताओं ने विभाजन को स्वीकार करते हुए कहा था कि "पाकिस्तान बन जाने से साम्प्रदायिकता की समस्या से देश को छुटकारा मिल जाएगा।" किन्तु उसी समय राष्ट्र की एकता के प्रति सजग और प्रबुद्ध एक संघर्षशील महापुरुष (वीर सावरकर) ने यह चेतावनी दी थी कि "इस विभाजन के फलस्वरूप देश के विभाजन की प्रक्रिया को ही गति मिलेगी। पाकिस्तान प्रचंड शस्त्र सामग्री जुटाकर आक्रमण करेगा। देश में फूट की प्रवृत्ति बढ़ेगी।"

स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु: जी ने अपनी दूरदर्शी दृष्टि से इन खतरों को भली-भांति परखा था। राष्ट्र को झकझोरा था। वे कहा करते थे कि आज देश के समक्ष दो ही विकल्प हैं—पुन: विभाजन या भारत की अखंडता।

उन्होंने चल-अचल सम्पति तो हमें नहीं सौंपी, लेकिन अपने सपनों की थाती हमें सौंप गए हैं। युवा पीढ़ी से हमारा आह्वान है कि उनके सपनों को वास्तविकता में बदलने के लिए आगे बढ़ें—आगे आने वाला युग उनका है।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िए

जीवन का क्या लाभ ? (महात्मा वेदभिक्षु: की अमर वाणी) ३

सम्पादकीय ५

नापें किस पैमाने से हम ऊंचाई आकाश की ? ८

लेखनी के भी धनी थे, लिख गए इतिहास (पत्रकारों का श्रद्धाज्ञापन) १३

आर्यजगत् के साहित्य सूर्य महात्मा वेद भिक्षु: —उमेशचन्द्र स्नातक १७

पैट्रो-डालर की करामात —राजीव मिश्र १९

मुसलमानों की निरन्तर बढ़ती आक्रामकता —वृजकिशोर 'अश्क' २१

क्या पाकिस्तान खालिस्तान आन्दोलन का समर्थ कर रहा है ?
—वि. स. विनोद २९

मालवीयजी राष्ट्रभक्ति के सतरंगी इन्द्रधनुष थे
—प्रभुनारायण श्रीवास्तव ३३

विश्व हिन्दू परिषद् का प्रधानमन्त्री के नाम खुला पत्र ३९

परोपकार का जीवन (उपदेश) —स्व० महात्मा नारायण स्वामी ४४

उग्रवाद को खुली छूट कब तक ? —क्षितीश वेदालंकार ५७

आयुर्वैदिक चिकित्सा पद्धति की श्रेष्ठता
—वैद्यराज जगदीश प्रसाद शर्मा ६०

वीर सावरकर: कुछ व्यक्तिगत प्रसंग —विश्वासराव सावरकर ६५

आपही के पत्र ७०

भारतभूमि: गणों और गणतन्त्रों की आद्य स्रोतस्विनी—रतनलाल जोशी ७६

हत्यारों का इतिहास (द्वितीय अध्याय) ८१

महात्मा वेदभिक्षु: को श्रद्धांजलियां ११३

पुत्र ने पिता को हराया (बाल जगत्) —प्रेमचन्द्र शास्त्री ११७

रंगीन चित्रों का परिचय

पृष्ठ १६ के सामने

आर्यसमाज के दीवाने प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् स्वर्गीय स्वामी समर्पणानन्द जी।

पृष्ठ १७ के सामने

आर्यसमाज के फील्डमार्शल स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी, जो फरवरी १९५४ में हमसे विदा हुए।

मुद्रक—प्रकाशक—संपादक—पंडिता राकेशरानी द्वारा जन-ज्ञान मुद्रणालय वेद मन्दिर दिल्ली-३६ में छपा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षु: की अमर वाणी

जीवन का क्या लाभ ?

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का कोई उद्देश्य होता है। हम सारे उद्देश्य पूर्ण कर चुके या भुला चुके। बात केवल एक स्मरण रह गयी देश-धर्म को ऊंचा उठाने की।

घर-परिवार-मित्र-संगी-साथी— किसी का लगाव नहीं, इसलिए सब छूट गया। जिससे नेह लगाया, वह रूठ गया। आग जलाई कूड़ा-करकट जलाने को—हम ही जल गए। एक स्वार्थ दीखता है सर्वत्र, प्यार तो कहीं दीखता नहीं।

नन्हे-नन्हे रुनझुन के गीत शून्य के स्वर में लीन हो गए। आत्मा की धारा का मंगल गान मरुस्थल का वासी बन गया। संघर्ष ही जीवन बन गया और स्नेह दूर पार की दुनिया में सो गया।

इसलिए आज सोचता हूं कि मेरे जीवन का क्या लाभ ? परिवार में कोई अपना नहीं, धरती पर कोई साथी नहीं, अकेले जाना है तो अकेले ही रहना है। यह अकेलापन मृत्यु नहीं तो क्या है ?

मन की बात कहूं—मैं अब जीना नहीं चाहता। कायर की उपाधि दीजिए या निराश व्यक्ति की, पर सच यही है कि अब जीवन में कोई सार नहीं। देश की हालत पर आंसू बहा लेता हूं; सबके सामने मुस्करा लेता हूं। पर क्या लाभ जब साथ चलने वाले २-४ अपने न हों।

गंगा के गीतों की लोरियों को मैंने प्रेरणा के संगीत के रूप में सुना है। वृक्षों के गीतों में मैंने जीवन-ज्योति को देखा है। जन-मानस के उभरते स्वरों में क्रांति को साक्षात् सम्मुख देखा है पर—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुझसे टूटता नहीं, छूटता नहीं, जो मैं चाहता हूं वह हो न सके तो क्या इस धरती से दूर चले जाना ही अच्छा नहीं ? आप ही कुछ बताओ, मैं क्या करूं ? मैं वर्तमान का प्रतीक हूं। युग की धारा को मैंने ललकारा ही नहीं, उस पर प्रहार भी किया है। सत्य के अस्त्र से दानवता के दैत्य को मानवता की राह पर चलाने की भावना को आप आज भले ही महत्त्व न दें किन्तु आने वाला कल यह स्वींकार करेगा कि किसीं ने समय को रोकने के प्रयत्न में अपनी आहुति दी थी और यही चिन्तनधारा मेरी विजय होगी।

विराट् देश में फैली धर्म की पवित्र ध्वजा वाहिनी के स्वर में कंपन का नहीं, गर्जन का मार्ग प्रशस्त करेगी, यह मेरा विश्वास है।

धर्म अमृत है। वह मनुष्य को देवता बनाता है। धर्म सत्य को, प्रेम को, शाश्वत दया, उदारता को जन्म देता है। वह मृत्यु की ओर ले जाए तो मेरे लिए भी मृत्यु वरण ही एक मात्र मार्ग रह जाता है।

मैं जीना चाहता हूं इसलिए कि आप जीवित रहें। मैं मरना चाहता हूं इसलिए कि मेरा धर्म जीवित रहे। कल्पना नहीं, यह सत्य है कि मृत्यु ने आकर मेरे द्वार खटखटा दिए हैं। मैंने उसकी आवाज सुन ली है। सोचता कि जब निमंत्रण मिल ही गया है तो क्यों न उसे स्वीकार कर लिया जाए ?

इसलिए आज मृत्यु का निमंत्रण स्वीकार कर हमने मृत्यु की चुनौती स्वीकार की है। अन्तर्राष्ट्रीय मुस्लिम षड्यन्त्रों और साम्राज्यवाद से टकराने के लिए हम तैयार हैं।

अकेले चलना, बढ़ना, मरना और विजय वरण करना ही हमारा एक मात्र लक्ष्य है—जीना और जीने के लिए मरना।

पं० राकेशरानी पर २६वां मुकदमा

नई दिल्ली, २० जनवरी। जन-ज्ञान मासिक की सम्पादिका एवं विख्यात धार्मिक हिन्दू नेत्री पं० राकेशरानी पर आज शासन नें दो अभियोग धारा १६५-ए व २५३-ए के तहत लगा दिये हैं। इस तरह उन पर शासन द्वारा चलाए जा रहे अभियोगों की संख्या २६ हो चुकी है।

(जन-ज्ञान मासिक के माघ सम्वत् २०३६ के अंक में प्रकाशित "मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूं" स्तम्भ से)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—राकेशरानी

सम्पादकीय

कोरे सहानुभूति पत्र नहीं चाहिए

पूज्य महात्मा वेदभिक्षु: जी के असामयिक निधन पर देश के कोने-कोने से हजारो सहानुभूति के जो पत्र मुझे प्राप्त हुए हैं, इस शोक की घड़ी में मेरा बहुत बड़ा संबल हैं। मैं उन सभी की भावनाओं का सम्मान करती हूं। किन्तु अब मेरे सामने सबसे बड़ा प्रश्न है उनके अधूरे काम को पूरा करने का। आश्वासन तो अनेक पत्रों में मिला है, किन्तु मेरा अनुरोध है, मेरी याचना है कि ये आश्वासन कोरे कागजी वचन ही न रह जाएं। यदि ऐसा हुआ तो मैं क्या करूंगी इन कागज के टुकड़ों का ? जी हां ! मुझे शिष्टाचार की पूर्ति करने वाले सहानुभूति पत्र नहीं चाहिए।

कार्यालय का बोझ पहले ही कितना था, इसकी कल्पना भी आप में से अनेक बन्धुओं को शायद ही हो। सोचती हूं कौन समझेगा ? कार्य संचालन का श्रम—उनके महाप्रयाण के बावजूद भागदौड़—मुकद्दमों की तारीखें—इसको संभालने का साहस है आपमें ? यदि है तो आइए और काम संभालिए।

वर्तमान का धर्म बन गया है औपचारिकता। आप भाई-बहनों की सहानुभूति भी कहीं मात्र औपचारिकता ही न बन जाय यह आशंका उभरती है मनमें। स्वार्थी है जनता, स्वार्थी हैं नेता—ऐसा मैं प्राय: सुनती रही हूं। सोचती हूं इतना विशाल कार्यक्षेत्र वे तो निभा रहे थे; मैं कहां तक निभा पाऊंगी ? कहीं कदम लड़खड़ा तो नहीं जाएंगे ?

कभी सोचती हूं कि शायद आपमें से कुछ में तो कर्म का मर्म उभरेगा। किसी में तो धर्म के प्रति, राष्ट्र के प्रति और मुझसे सहानुभूति से अधिक मेरे काम के प्रति प्रेरणा मिलेगी। जानती हूं मैं, जानते होंगे आप भी कि काम की सीमाएं बहुत लम्बी हैं।

मुकद्दमे तो लगभग दो दर्जन हैं। उनकी मुझे चिन्ता थी और न चिन्ता है। मुझे धमकियों की परवाह नहीं; मृत्यु का स्वागत तो मैं हर समय ही पलक पांवड़े बिछाकर और मुस्करा कर करूंगी। पर पीड़ा होती है यह सोचकर कि मेरे भारत में मेरे हिन्दुस्तान में वाक्शूर तो बहुत हैं, किन्तु कर्मशूरों से मातृभूमि शून्य होती जा रही है।

महात्मा जी ने वेद-मन्दिर का सपना संजोया था वह भी अभी अधूरा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वे उसे क्रान्ति का प्रेरणा स्रोत बनाना चाहते थे। क्रान्ति आज शब्द नहीं वह तो रक्त चाहती है। उन्होंने (महात्मा वेदभिक्षुः जी ने) अपने रक्तदान से क्रांति की देवी का अभिषेक किया था। निर्माण के लिए अपना बलिदान दिया है। वे कहा करते थे कि विचारधारा को पनपाने के लिए आहुति देनी पड़ती है। उन्होंने अपने जीवन की आहुति दे दी है। वे बलिदान की केवल गौरव-गाथा का गान ही नहीं करते थे, बल्कि उन्होंने तो स्वयं को बलिदान किया है। अनुरोध मेरा है आप सबसे। आपने उनके प्रति श्रद्धांजलियां-शोकांजलियां समर्पित की हैं। किन्तु आज मैं आपका आह्वान कर रही हूं कि उनको जो ध्येय प्यारा था, उनको जिस हिन्दू संगठन और हिन्दू राष्ट्रवाद से भारत का, आर्यावर्त्त का कल्याण दिखाई देता था, उस विचारधारा की अग्नि को प्रज्वलित रखने का भार आप पर है, हम सभी पर है।

इस सत्य को सोचिए और समझिए। मां का मन्दिर ऐसे वीरों की बलि चाहता है जो खुद को मिटा कर अपने सपने साकार कर सकें। हमें स्मरण रहे कि हमारा संघर्ष धरती के उन जंगली लोगों से है, जिनमें मानवता का स्पंदन नहीं है, अपितु पशुओं का तांडव जन्म से ही है। हमारा मुकाबला उन ताकतों से है, जिनके हजारों प्रतिनिधि सुदूरवर्ती वनखण्डों को भी, बीहड़ों-जंगलों को अपनी कुलांचों से अपने द्वारा फैलाई जा रही भारत के प्रति, आर्यजाति के प्रति, हिन्दू राष्ट्र के प्रति घृणा की आग से दहका रहे हैं, जला रहे हैं।

इन ताकतों पर विजय पाना जिन्हें इष्ट हो, वे आगे बढ़ें—जीवनदान दें इसलिए कि धरती से धर्म न मिटने पाए। वेद-ज्ञान की पताका जन-जन में फहराती रहे।। आज मुझे कागज पर लिखे पत्र-मात्र नहीं चाहिए। आप अपनी मनोव्यथा व्यक्त कर चुके। आप अपनी वन्दना और टीस की अभिव्यक्ति कर, चुके। आज मैं मांगती हूं उस महात्मा के सपनों को पूरा करने के लिए जीवनदानी—जो उनके जीवन की बलिदानी कहानी से प्रेरणा लेकर। उन आदर्शों से प्रेरणा लेकर कर्त्तव्य-पथ पर कदम बढ़ा सकें, जो उन्हें प्यारा था, जिसके लिए उन्होंने जीवन वारा है।

ज्वलन्त समस्याओं का जिन्हें समाधान पाना हो वे अब कागजों पर पत्र लिख कर ही सन्तोष न कर लें। आज मुझे वे बलिदानी युवक चाहियें जो उनके सपनों को साकार करने के लिए रक्त का टीका लगा सकें। उनके काम में सहयोगी बन सकें। कितने हैं जो कर सकेंगे यह काम—अविराम ? कौन आगे आकर मेरा हाथ बंटा सकेगा ? मैं सत्य का गीत गा रही हूं। जागरण का शंखनाद जो उन्होंने किया था उसी की ध्वनि मैं गुंजा रही हूं ताकि आपकी आखें खुल सकें और आप सोच सकें, सत्य और असत्य के, भावना और कर्त्तव्य के अन्तर को।

याद रखें, शब्द से कर्म अधिक मुखर होता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१४ मार्च—पूज्य महात्मा वेदभिक्षु: जी के जन्मदिवस पर जन-ज्ञान (मासिक) का अगला अंक वेदभिक्षु: स्मृति अंक होगा।

राष्ट्रीय हितों व हिन्दू अधिकारों की रक्षा हेतु आजीवन संघर्ष करने वाले स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु: जी विषयक संस्मरणों, घटना-प्रसंगों, विचारों एवं भाषणों का अनूठा संग्रह प्रकाशित हो रहा है। इस अंक के लिए अपनी रचनाएं १० फरवरी १९८४ तक जन-ज्ञान कार्यालय में भेजने की कृपा करें। —सम्पादक

हम सब के आभारी हैं

दयानन्द संस्थान के संस्थापक और अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु: जी के आकस्मिक निधन पर हमें शोक समवेदना और सहानुभूति के हजारों सन्देश टेलीफोन, तार, पत्र आदि द्वारा प्राप्त हुए हैं। सबको व्यक्तिगत रूप से उत्तर दे पाना सम्भव नहीं, इसलिए जन-ज्ञान के माध्यम से मैं और मेरा परिवार सब भाई-बहनों के प्रति आभार प्रकट करते हैं। कुछ भाई-बहनों ने तो अत्यन्त आत्मीयता और आध्यात्मिक प्रेम से सने पत्र लिखे हैं, जिनकी हम हृदय से सराहना करते हैं।

संवेदना प्रकट करने वाले सब भाई-बहनों के नाम अगले अंकों में प्रकाशित किए जा रहे हैं।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नापें किस पैमाने से हम ऊंचाई आकाश को?

विभिन्न संस्थाओं व संगठनों के शोक प्रस्ताव

हमें देश-भर की सैकड़ों संस्थाओं, आर्यसमाजों, हिन्दू महासभा एवं हिन्दू रक्षा समिति की शाखाओं के शोक प्रस्ताव मिले हैं। इन सभी ने गहरा दुःख व्यक्त करते हुए स्व० महात्मा वेदभिक्षु: जी की आत्मा की शांति हेतु परिवार और दयानन्द संस्थान को धैर्य प्रदान करने हेतु परमात्मा से प्रार्थना की है। हम उन सबके आभारी हैं जिन्होंने अपने नगरों-ग्रामों में शोक सभाएं आयोजित कर महात्मा जी को श्रद्धांजलियां और हमें मानसिक संबल दिया है।

कुछ चुने हुए शोक प्रस्तावों का संक्षिप्त रूप यहां दे रहे हैं —सम्पादक

विश्व हिन्दू परिषद्, बम्बई

सुषुप्त हिन्दू समाज को कर्त्तव्य बोध कराने वाले जाज्वल्यमान नक्षत्र महात्मा वेदभिक्षु: के असामयिक निधन पर हम गहरा शोक व्यक्त करते हैं। वे हिन्दू संस्कृति के जीवंत प्रतीक थे। वे कर्मयोगी थे और भारत माता तथा हिन्दू धर्म के लिए उन्होंने अपने प्राण न्यौछावर कर दिये।

युवा क्रान्ति परिषद्, हिन्दुस्थान शाखा, आर्यनगर, बरेली

हिन्दू धर्म के रक्षक, आर्य विद्वान्, प्रखर वक्ता, लेखनी पुरुष महात्मा वेदभिक्षु: के निधन पर विनम्र श्रद्धांजलि। हिन्दू समाज ने अपना महान् रक्षक खो दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज परमानन्द बस्ती, बीकानेर

पूजनीय महात्मा जी स्वयं अकेले संस्था थे। आर्यजगत् में उनकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती। बीकानेर समाज से उनका विशेष स्नेह था।

प्रभात आश्रम, भोलाभाल, मेरठ

भारत देश और आर्यजगत् को उनकी सेवाओं की बड़ी आवश्यकता थी। उनकी वह अपने कर्म पर दृढ़ रहने और कठिन से कठिन परिस्थिति में भी धैर्य न छोड़ने की अविचल भावना भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा की स्रोत बनी रहेगी।

आर्ष गुरुकुल एटा (उ० प्र०)

आर्यजगत् के मूर्धन्य लेखक, तपोनिष्ठ मनीषी, वेद भाष्य को घर-घर पहुंचाने वाले, वैदिक साहित्य प्रकाशन में क्रांति लाने वाले, निर्भीक एवं निडर वक्ता स्वनामधन्य श्री भारतेन्द्रनाथ जी के असामयिक निधन के अत्यन्त शोकदायक समाचार से कुलवासी सन्न रह गए।

आर्य परिवार, आगरा

आर्य परिवार दयानन्द संस्थान, दिल्ली के संस्थापक महात्मा वेदभिक्षु: के आकस्मिक निधन पर शोकाकुल और स्तब्ध हैं।

आर्यसमाज अजमेर

आर्य-हिन्दू जाति के संगठन एवं रक्षा कार्य का बीड़ा उन्होंने उठाया हुआ था। हम उनके निधन पर शोकाकुल हैं।

आर्यसमाज बांदीकुई (राजस्थान)

आर्यसमाज बांदीकुई महात्मा वेदभिक्षु: के देहावसान से अत्यन्त दु:खी है। आर्यसमाज ने उनके निधन से अपने बीच से अत्यन्त अमूल्य रत्न खो दिया है।

हिन्दू महासभा मध्यप्रदेश

भारतीय स्वतन्त्रता के अनन्य उपासक, क्रांति वीरों के एकमात्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विश्वास केन्द्र, हिन्दू जाति और आर्य संस्कृति के अनन्य रक्षक, ओजस्वी वक्ता, महर्षि दयानन्द के सच्चे भक्त महात्मा वेदभिक्षु: जी के देहावसान पर मध्यप्रदेश की समस्त हिन्दू-आर्य जनता उन्हें अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करती है।

विश्व वेदपरिषद्, चंडीगढ़

महात्मा वेदभिक्षु: जी के निधन पर हम गहरा दु:ख महसूस करते हैं। इनके महान् प्रकाशन संस्थान द्वारा जो अगणित वैदिक हिन्दी तथा अंग्रेजी साहित्य का सृजन किया गया है—विशेषकर चारों वेदों का सस्ता हिन्दी भाष्य—यह काम उनके नाम को सदा अमर बनाए रखेगा। इससे मानवता की सराहनीय सेवा हुई है।

वैदिक सत्संग, सिकन्दराबाद

महात्मा जी ने मन, वचन एवं कर्म से आर्यजगत् की सेवा की है, जिसके लिए वे सदैव स्मरण किये जाते रहेंगे।

आर्यसमाज, छीपा बड़ौद

पूज्य महात्मा जी के आकस्मिक निधन से आर्यजगत् की जो क्षति हुई है उसकी पूर्त्ति होना दुष्कर है।

आर्यसमाज, बहजोई

हिन्दू जाति के गौरव और भारत मां के सपूत के निधन से हिन्दू समाज और संस्कृति को जो क्षति पहुंचेगी, उसका अनुमान लगाना भी कठिन है।

छात्रावास हिन्दू रक्षा समिति, आसींद

वे हिन्दू समाज के ज्योतिः स्तम्भ थे। उनसे हिन्दुत्व को बड़ी-बड़ी उम्मीदें थीं। उनके लेख पढ़ने से लाखों हिन्दू युवाओं में वीरता का भाव उत्पन्न होता था। हमने एक महान् विभूति को खो दिया।

अलीगंज (भागलपुर) ग्राम निवासी

हिन्दू समाज उनके निधन से राजा से रंक हो गया। सावरकर के घाव को भरने वाला एकमात्र व्यक्तित्व हमारे बीच से उठ गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओजपूर्ण प्रेरणा एवं स्वतन्त्र चेतना का अद्भुत संस्थान हमने खो दिया।

आर्यसमाज, जोधपुर

कर्मयोगी, धर्मात्मा, वैदिक विद्वान्, आर्य रक्षक, निर्भीक स्वतन्त्रता सेनानी, महात्मा वेदभिक्षु: के निधन से सिर्फ आर्यजगत् की नहीं, सम्पूर्ण राष्ट्र की महान् क्षति हुई है।

नगर महिला आर्यसमाज, गाजियाबाद

हम सब को गहरा आघात पहुंचा है। उनका सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज के लिए समर्पित था। वैदिक साहित्य के प्रकाशन में उनका स्थान सर्वोपरि था।

गोदावरी आर्य बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, ब्यावर

आर्यजगत् के विख्यात विद्वान्, प्रवक्ता, समाज सुधारक, हिन्दुत्व के रक्षक एवं पोषक महात्मा जी के निधन से आर्यजगत् की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति हो पाना असम्भव है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली प्रदेश

महात्मा वेदभिक्षु: जी की मृत्यु हिन्दू समाज की अपूरणीय क्षति है। दयानन्द संस्थान के माध्यम से वेद भाष्य जनता को उपलब्ध कराना उनका अमूल्य कार्य था। उन्होंने देश-भर के हिन्दुओं में नई चेतना व जागृति की लहर चलाई। हिन्दू समाज के इस प्रहरी की सेवाएं देश व समाज के लिए एक उदाहरण हैं।

हिन्दू रक्षा समिति, पहासू

हिन्दू रक्षा समिति के संस्थापक अध्यक्ष व हिन्दू समाज के मार्गदर्शक तथा महान् नेता पूज्य महात्मा वेदभिक्षु: के अल्पायु में निधन पर गहरा दुःख है।

आर्यसमाज दयानन्द मार्ग, अलवर

आर्यसमाज को आगे ले जाने के लिए वे जीवन-भर संघर्षरत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
रहे। वास्तविकता तो यह है कि आज आर्यसमाज का एक चमकता हुआ नक्षत्र अस्त हो गया।

आर्यसमाज मुरादनगर, मेरठ

महात्मा जी के असामयिक निधन पर हम सब शोकाकुल हैं।

हिन्दू महासभा, भागलपुर

महात्मा वेदभिक्षु: अमर हैं। उनका आन्दोलन अवश्य सफल होगा।

गरीबदासी साधु आश्रम, हरिद्वार

निधन के समाचार से हम अत्यन्त दु:खी हैं। प्रभु की लीला अपरम्पार है। उनके कार्य को अबाध रखना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आर्यसमाज केसरबाग, लखनऊ

वैदिक संस्कृति के महान् पुजारी, जिन्होंने अपना सर्वस्व इस निमित्त अर्पित किया था, ऐसे सर्वहुत महात्मा वेदभिक्षु: के आकस्मिक निधन पर हम हार्दिक शोक व्यक्त करते हैं।

मोहनलाल बाल विद्या मंदिर, बदायूं

आज (२१.१२.८३ को) समाचारों में श्रद्धेय वेदभिक्षु: जी के देहान्त के समाचार से शिशु एवं आचार्य वृन्द शोक संतप्त हो गये।

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, अहमदाबाद

उनके देहावसान से आर्यसमाज अहमदाबाद के सभी सदस्य एवं अन्तरंग सभा के सभी सदस्य शोकाकुल हैं।

आर्यसमाज भिलाईनगर

आर्यसमाज भिलाईनगर की यह सभा महात्मा दयानन्द संस्थान के संस्थापक महात्मा वेदभिक्षु: जी के असामयिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है।

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

महात्मा वेदभिक्षु: जी का आर्यसमाज के क्षेत्र में, साहित्य के क्षेत्र में तथा हिन्दू जाति के उत्थान के लिए किया गया कार्य चिरस्मरणीय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रहेगा।

आर्यसमाज देवनगर, दिल्ली

आर्यसमाज के सुविख्यात पत्रकार और ख्यातिप्राप्त प्रकाशक महात्मा वेदभिक्षु: जी (पं० भारतेन्द्रनाथ साहित्यालंकार) के असामयिक निधन पर यह सभा गहरा शोक प्रकट करती है।

हिन्दू रक्षासमिति, ताखां, जिला जौनपुर

उनके निधन से हिन्दू समाज और भारत देश की अपूरर्णीय क्षति हुई है।

आर्यसमाज सण्डीला, हरदोई

आर्यजगत् की इस महान् विभूति के निधन के समाचार से आर्य समाज संडीला अत्यन्त दु:खी है।

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, सुलतानपुर

यह सभा महात्मा जी के निधन पर गहरा दु:ख व्यक्त करती है।

आर्यसमाज देहरादून

दयानन्द संस्थान के संस्थापक तथा बड़े पैमाने पर आर्य साहित्य प्रकाशित करने वाले वानप्रस्थी वेदभिक्षु: जी के निधन पर यह समाज गहरा दु:ख प्रकट करता है।

विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्, वाराणसी

वेदभिक्षु: जी ने आर्यसमाज और हिन्दुओं के लिए जो किया, उसे भुलाया नहीं जा सकता। दयानन्द संस्थान के माध्यम से आर्यसमाज तथा वैदिक साहित्य की जो सेवा उन्होंने की है, उसकी तुलना कठिन है।

आर्यसमाज रामगंज, फैजाबाद

हिन्दू और हिन्दुस्तान के लिए सर्वस्व समर्पण करके जन-जन में राष्ट्रीयता का संचार करने वाले, भारतीयता के प्रति दुर्भावना रखने वाली शक्तियों को खुली चुनौती देने वाले वाले मनीषी, कर्त्तव्य-पथ के व्रती और महान् साधक महात्मा वेदभिक्षु: जी के प्रति हमारी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पत्रकारों का श्रद्धाञ्ज्ञापन

लेखनी के भी धनी थे, लिख गए इतिहास

दयानन्द संस्थान और हिन्दू रक्षा समित के संस्थापक महात्मा वेदभिक्षु: एक सफल और निर्भीक पत्रकार भी थे। देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने दिवंगत नेता के निधन पर श्रद्धा-सुमन समर्पित किए हैं। यहां प्रस्तुत हैं उनकी श्रद्धांजलियों के कुछ अंश—

इतिहास के पृष्ठों पर पदचिन्ह

"जो समय की चुनौतियों के आगे सीना खोलकर खड़ा हो जाए और इतिहास के पृष्ठों पर अपने पदचिह्न छोड़ जाए, ऐसे पदचिह्न—जो अपने आप में एक अनुकरणीय आदर्श बन जाएं—इतिहास बन जाएं, वही विराट् व्यक्तित्व नवयुग निर्माता होता है, युग-पुरुष कहलाता है। ऐसे ही एक युग-पुरुष थे महात्मा वेदभिक्षु: (पूर्व नाम श्री भारतेन्द्र नाथ)।"

—दैनिक राष्ट्रदूत, जयपुर
३ जनवरी, १९८४

० ० ०

हिन्दू नव चेतना के अग्रदूत

"आप (महात्मा वेदभिक्षु:) ओजस्वी वक्ता और लेखक थे। दयानन्द संस्थान की मासिक पत्रिका (जन-ज्ञान) के माध्यम से तथा अन्य अनेक पुस्तिकाओं द्वारा हिन्दुओं में नवचेतना लाने का एक नवीन अभियान आपने प्रारम्भ किया था।"

—हिन्दूसभा वार्ता, इन्दौर

आर्य साहित्य भण्डार को समृद्ध बनाने में महान् योगदान

"श्री वेदभिक्षु: ने अपने संस्थान से उच्चकोटि का उपयोगी प्रचुर आर्य साहित्य प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त किया और आर्यसमाज के साहित्य भंडार को समृद्ध बनाने में उल्लेखनीय योगदान किया।"

सार्वदेशिक
एक जनवरी, १९८४

वैदिक धर्म के प्रबल प्रचारक

"वैदिक धर्म के प्रचारक तथा सबल समर्थक, दयानन्द संस्थान के संचालक, मासिक जनज्ञान के व्यवस्थापक, ओजस्वी वक्ता और सशक्त लेखक महात्मा वेदभिक्षु: (पूर्व पं० भारतेन्द्रनाथ) के अकस्मात् उठ जाने से संस्थान के अतिरिक्त देश, धर्म और समाज की जो क्षति हुई है, उसकी निकट भविष्य में पूर्ति होना कठिन है।

लोकशिक्षक, जयपुर
३० दिसम्बर, १९८३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

० ० ०

अराष्ट्रीय प्रवृत्तियों से जूझने वाले पुरोधा

"पिछले कई वर्षों से महात्मा वेदभिक्षु: हिन्दुओं के संगठन के लिए अपना जीवन अर्पण किए हुए थे और मासिक पत्रिका 'जन-ज्ञान' के माध्यम से हिन्दुओं को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए प्रेरित करते रहते थे। वह हिन्दू मात्र को अराष्ट्रीय व पृथक्तावादी साम्प्रदायिक शक्तियों से संघर्ष करने को प्रेरित किया करते थे।

दैनिक चक्रगति, हरदोई
२३ दिसम्बर, १९८३

० ० ०

हिन्दू जाति के महान् स्तम्भ

महात्मा वेदभिक्षु: जी के आकस्मिक निधन से हिन्दू जाति का एक प्रखर योद्धा महाप्रयाण कर गया है। वह हिन्दू जाति के महान् रक्षक थे, जिन्होंने अपने भाषणों और कलम दोनों से ही हिन्दू संस्कृति की रक्षार्थ महान् कार्य किया।

आर्य संदेश (गुजराती साप्ताहिक), बड़ौदरा (५ जनवरी, १९८४)

० ० ०

एक तूफानी व्यक्तित्व

"महात्मा वेदभिक्षु: एक तूफानी व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण उन्होंने अल्प समय में ही अपने वेद प्रचार के संकल्प को चालीस हजार वेद-प्रतियां घर-घर पहुंचाकर पूरा कर दिखाया था। वे शनैः शनैः आगे बढ़ने के स्थान पर तूफान की तरह छा जाना चाहते थे।"

दैनिक प्रलयंकर, गाजियाबाद
५ जनवरी १९८४

सफल प्रकाशक एवं कर्मठ व्यक्तित्व

वेदभिक्षु: जी कुशल वक्ता, सफल प्रकाशक एवं कर्मठ सक्षम व्यक्ति थे। उनके निधन के समाचार से आर्यमित्र परिवार शोकाकुल है।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
१ जनवरी, १९८४

० ० ०

हिन्दू हितों के प्रबल प्रवक्ता

हिन्दू हितों के प्रबल प्रवक्ता और वैदिक साहित्य के प्रकाशन में अग्रणी महात्मा वेदभिक्षु:, ने चारों वेदों के चालीस हजार सेट देश-विदेश में रिआयती मूल्य पर विक्रय कर वैदिक साहित्य के प्रचार का कीर्तिमान स्थापित किया था।

आर्यजगत् साप्ताहिक, नई दिल्ली
१ जनवरी, १९८४

तपोनिष्ठ वानप्रस्थी

आर्यसमाज के तपोनिष्ठ वानप्रस्थी थे महात्मा वेदभिक्षु:। उनके असामयिक निधन से आर्यजगत् का एक मूर्धन्य आर्य विद्वान् और पत्रकार सदा के लिए बिछुड़ गया है। उनके ही प्रयत्नों से सार्वदेशिक सभा एवं दयानंद संस्थान के चारों वेदों के सैट आज कई लाख हिन्दू परिवारों के पुस्तकालयों में सुशोभित हो गए हैं।

साप्ताहिक आर्य संदेश, नई दिल्ली
१ जनवरी, १९८४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Inside Congress

During the last year of his life Swami Shraddhanandji conducted an English weekly called "The Liberator".

This book contains 27 articles written by Swamiji in that weekly.

An absorbing book, commended by late Deshbandhu Gupta in his foreword, "to all those who esteem the late Swamiji, his name, his sterling sincerity and his mission."

Just out. Price : Rs. 30

वैदिक सम्पत्ति

स्वर्गीय पंडित रघुनन्दन शर्मा की अमर कृति—भारतीयता के प्रत्येक उपासक के लिए पठनीय। कपड़े की पक्की जिल्द।

मूल्य ८१ रुपये

स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु: जी के जन्मदिवस
(१४ मार्च) तक केवल ५१) में।

दयानन्द संस्थान

१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

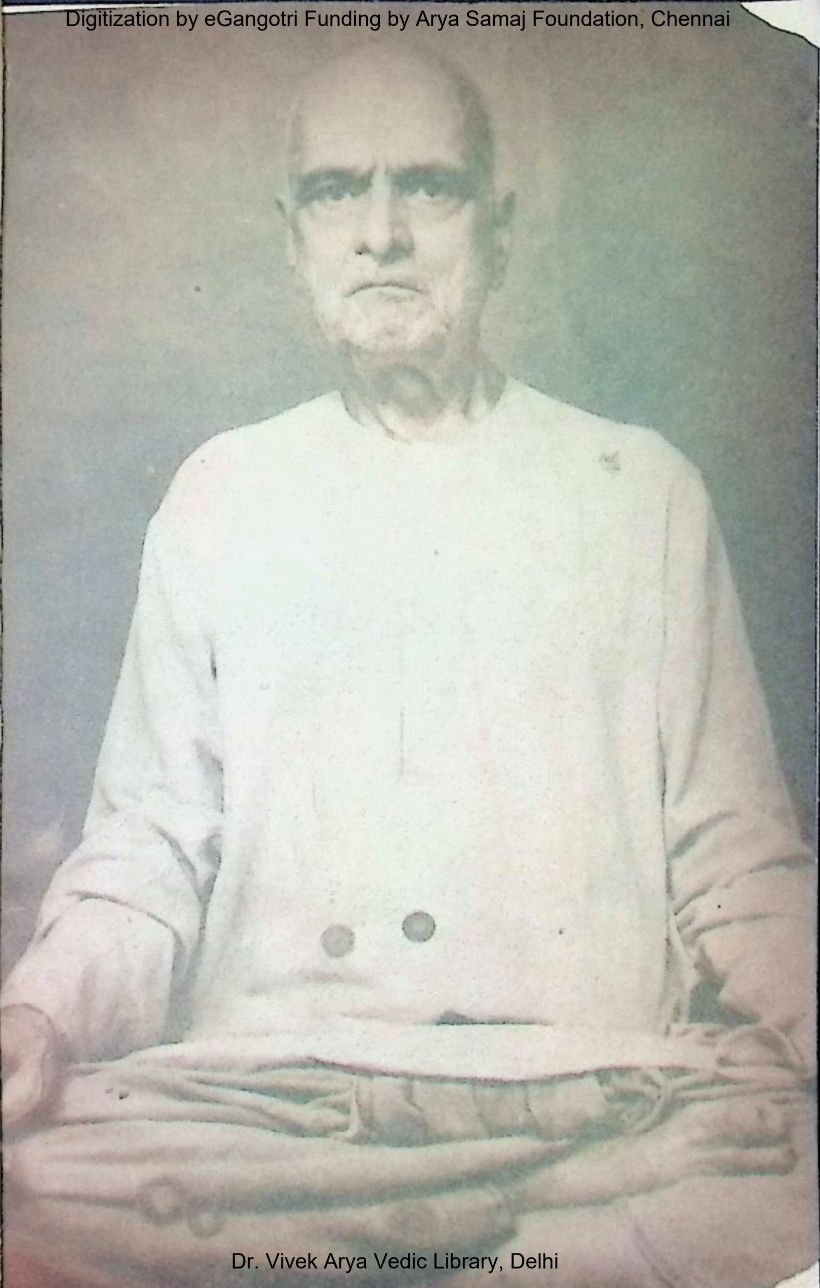

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

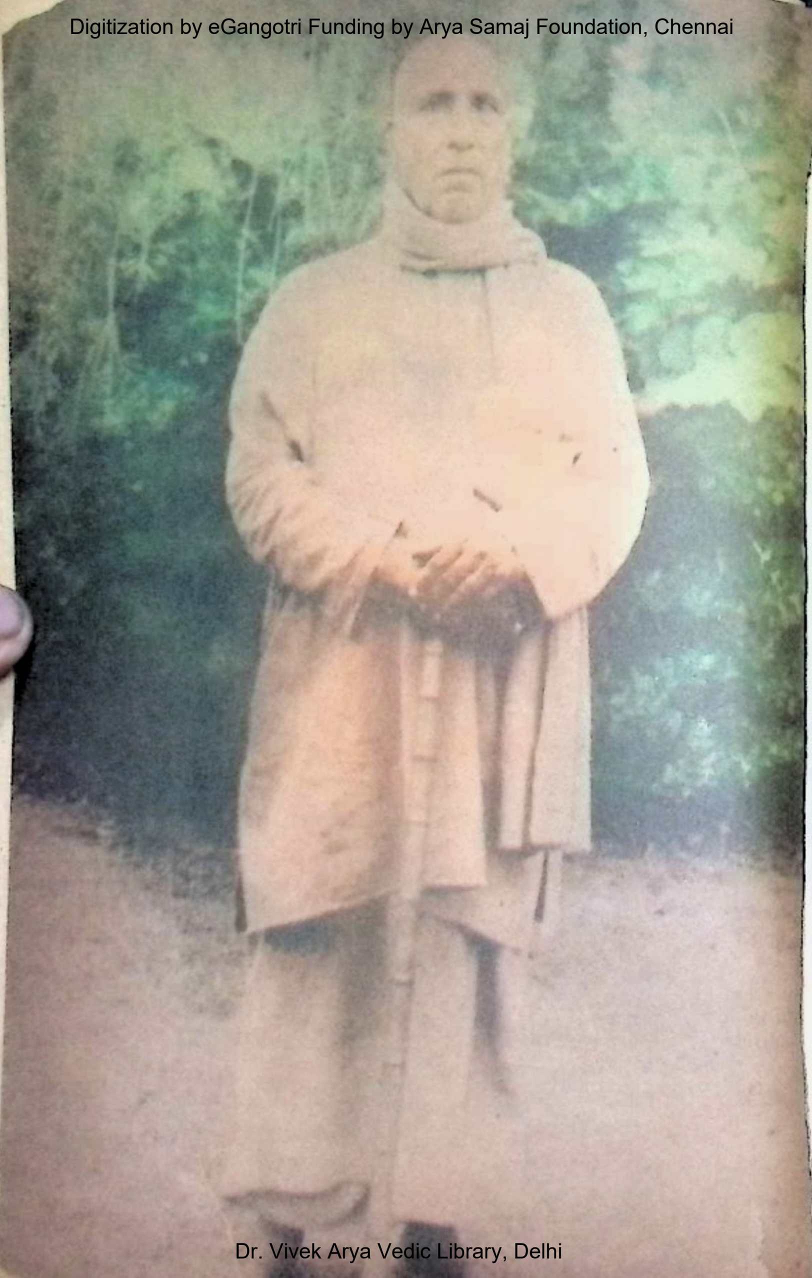

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यजगत् के साहित्य-सूर्य महात्मा वेदभिक्षु:

—उमेशचन्द्र स्नातक

महात्मा वेदभिक्षु: (भाई भारतेन्द्रनाथ) अब इस नश्वर जगत् में नहीं रहे परन्तु उनकी आत्मा की आवाज हम सभी के कानों में गूंज रही है और चिर-काल तक गूंजती रहेगी।

आर्यसमाज के इतिहास में उनका स्थान महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दर्शनानन्द, अमर हुतात्मा पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जैसे वैदिक साहित्य प्रचारकों-प्रसारकों की शृंखला में जुड़ा रहेगा।

आर्यसमाज की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए महर्षि दयानन्द ने वैदिक यन्त्रालय की स्थापना और स्वयं अपने सत्यार्थ-प्रकाशादि ग्रन्थों के अतिरिक्त हिन्दी-संस्कृत में वेदभाष्य का प्रकाशन कर जो मार्गदर्शन किया था उसके बाद वैदिक यन्त्रालय और परोपकारिणी सभा भी अधिक प्रगति न कर सके, आर्यसमाज की संगठनात्मक आर्य प्रतिनिधि सभाएं और सार्वदेशिक सभा भी अपने सीमित साधनों के नाम पर आगे कदम बढ़ाने में सदैव हिचकिचाती रहीं परन्तु महात्मा वेदभिक्षु: जी बड़ी तीव्र गति से आर्यसमाज को आगे ले जाना चाहते थे। वे सदैव आर्यसमाज को एक संस्था नहीं, एक आन्दोलन के रूप में ही जीवित रखना चाहते थे।

अपने पारिवारिक संस्कारों एवं गुरुकुलीय शिक्षा-दीक्षा के कारण उनमें समाज-सुधार और राष्ट्र-निर्माण की ज्वाला सदैव धधकती रही। कार्यक्षेत्र में उतरते ही आपको अध्यापक, उपदेशक और सम्पादक के रूप में आर्यसमाज के मिशन को गति देने का अवसर मिला। 'आर्य' के सम्पादक के रूप में आप धीमी चाल से चलते रहे। इस बीच राष्ट्रीय आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में आप राजनीति से भी परिचित हो गये थे।

'आर्य' के बाद लखनऊ से प्रकाशित आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के मुख पत्र साप्ताहिक 'आर्यमित्र' में पहुंचते ही आपकी प्रतिभा को स्वतन्त्र विचरण का अवसर मिला।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपने सभाधिकारियों को प्रेरित किया कि आर्यसमाज के कार्य को गति देने के लिए आर्यसमाज को अपना दैनिक पत्र निकालना चाहिये, इसलिए सभा "आर्यमित्र" को दैनिक बनाने का निश्चय करे।

सभा के गम्भीर हितचिन्तकों ने सारे आर्थिक प्रकरण पर विचार किया। सभा को सफलता की कोई सम्भावना न दिखाई दी परन्तु उस समय केवल भारतेन्द्रनाथ जी के संकल्प को देखकर सभा आशावान् हो उठी और सभा ने दैनिक "आर्यमित्र" के प्रकाशन की घोषणा कर दी। जिस अन्तरंग सभा में दैनिक आर्यमित्र के प्रकाशन का निर्णय हुआ था उसका मैं भी सदस्य था। मुझे प्रसन्नता है कि संकल्प पूर्णतया सफल हुआ।

श्री स्वामी अखिलानन्द जी (श्री बाबू कालीचरण जी, तत्कालीन सभा मन्त्री) और श्री प्रि० महेन्द्रप्रताप शास्त्री जी अधिष्ठाता आर्यमित्र ने योजना की पूर्ति में भारतेन्द्रजी को पूर्ण सहयोग दिया। दैनिक "आर्यमित्र" निकला। सारे आर्य जगत् और हिन्दी जगत् में उसकी धूम मच गयी। अपने अल्प जीवनकाल में दैनिक आर्यमित्र ने आर्यसमाज के मिशन को आगे बढ़ाने में जो योगदान दिया वह एक ऐतिहासिक तथ्य है। विषम आर्थिक परिस्थितियों के कारण सभा को दैनिक "आर्यमित्र" का प्रकाशन स्थगित करना पड़ा परन्तु इस योजना ने भारतेन्द्रनाथजी के रूप में आर्यसमाज को एक ऐसा सिद्धहस्त कलाकार, साहित्य-मर्मज्ञ और पत्रकार प्रदान किया जिसने अपने भावी जीवन में आर्यसमाज के साहित्य प्रकाशन के मिशन को एक नवीन स्वरूप प्रदान किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के "आर्योदय" पत्र का प्रकाशन एक गौरवपूर्ण घटना थी। "आर्योदय" के अंकों की छपाई और लेख-सामग्री सदैव उच्चकोटि की बनी रही। परन्तु साहित्यकार और कलाकार सदा बन्धनमुक्त ही रहना चाहते हैं। स्थितियों ने भारतेन्द्रजी को बन्धनमुक्त बना दिया पर साधनहीन बनाकर। वे निराश नहीं हुए। महात्मा आनन्दस्वामी जी के आशीर्वाद और १०० रु० की प्रेरणा धनराशि से उन्होंने जिस साहित्य संसार की सृष्टि की है मासिक जन-ज्ञान और दयानन्द संस्थान उस साहित्योद्यान के ऐसे आकर्षक एवं सुगन्धित पुष्प हैं जिनकी सुगन्ध से प्रत्येक हिन्दी प्रेमी और वैदिक साहित्य प्रेमी आनन्दित और उल्लसित हो रहा है। महर्षि दयानन्द के वैदिक सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आपने वेद-भाष्य प्रकाशन की योजना आरम्भ की। योजना बड़ी महंगी और व्यापक थी। महंगाई के भयंकर दानव ने सदा इस योजना को नोचा, खरोंचा और दबोचा और वेद के विश्व प्रचार का एकाधिकार रखने वालों ने भी योजना की उपेक्षा की। परोक्ष में बाधायें भी उपस्थित कीं प

(शेष पृष्ठ २० पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—राजीव मिश्र

पैट्रो-डालर की करामात

प्रयाग नगर में आजकल पैट्रो-डालर की नई करामात दिखाई पड़ रही है। मस्जिद से लगी हुई जमीन पर या मजार से लगी हुई जमीनों पर रातोंरात दूकानों का निर्माण हो रहा है। प्रशासन सोया पड़ा है। नगर महापालिका के कर्मचारी बाद में घूस लेकर इन अवैध निर्माणों को वैध करवाने का ठेका लेते हैं। पैसे की कमी तो है नहीं। इस प्रकार इन दूकानों के निर्माण से दो फायदे उन्हें स्पष्ट रूप से होते हैं।

पहला यह कि इन दूकानों के माध्यम से कुछ मुस्लिम नवयुवकों को उसमें खपाते हैं।

दूसरा फायदा यह है कि इस माध्यम से वे उस मजार या मस्जिद के पास बैठकबाजी का अड्डा बनाते हैं।

मेरी समझ से ये करामात मात्र प्रयाग नगर में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण देश में हो रही हैं।

इसके अतिरिक्त ये मुसलमान आजकल पैट्रो-डालर की कृपा से शहर की कोई महत्त्वपूर्ण जमीन जो हिन्दुओं के मन्दिर या मुहल्ले के नजदीक उपलब्ध होती है मुंहमांगे दाम पर खरीद लेते हैं। इस खरीद में उनका मुकाबला कोई नहीं कर पाता क्योंकि वे इसमें पानी की तरह पैसा बहा देते हैं।

इसके पश्चात् उस जमीन पर मस्जिद का निर्माण कराते हैं। इस प्रकार वे हिन्दुओं के मुहल्लों तथा मन्दिरों की चारों तरफ से नाकेबंदी कर रहे हैं। इसी योजना के तहत मस्जिदों के निर्माण में तेजी दिखायी पड़ती है।

इसके अतिरिक्त आजकल एक और कार्य इनकी तरफ से हो रहा है। किसी भी सार्वजनिक जगह पर—जो कि पार्क इत्यादि के लिए नगर महापालिका में दर्ज हो—कब्जा करने का प्रयास करते हैं। पहले ये रात में मिट्टी का टीला बनाते हैं और उसके चारों ओर ईंट लगाकर सफेदी करते हैं। फिर दूसरे दिन यह प्रचारित करते हैं कि यहां हमारा कब्रिस्तान है या यह हमारे पूर्वज की मजार है। हम यहां मस्जिद का निर्माण करेंगे। इस प्रयास में वे उग्र भी हो जाते हैं और कहते हैं कि यहां मस्जिद तो अवश्य बनेगी चाहे दो-तीन लाशें गिर पड़ें। साथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ही साथ वे स्थानीय सक्रिय हिन्दू कार्यकर्ताओं के खिलाफ रिपोर्ट भी दर्ज कराते हैं कि ये हमारे पवित्र स्थल पर कब्जा करने का प्रयास कर रहे थे। इसके लिए वे चिरपरिचित संगठन आर० एस० एस० का नाम लेते हैं।

हमारी सरकार या विपक्षी दल वोटों के लालच में इन प्रवृत्तियों का विरोध नहीं कर पाते, जिसका परिणाम यह होता है कि ये और सक्रिय हो जाते हैं। स्वयं को सताये जाने का नाटक करते हैं और हिन्दुओं को परेशान करते हैं।

प्रत्येक देशभक्त हिन्दू का यह कर्तव्य है कि वह इन प्रवृत्तियों का खुलकर विरोध करे। सत्य बात न कहना झूठ को बढ़ावा देना होता है। हमें चुपचाप मूक दर्शक बनकर नहीं बैठे रहना है वरन् इनका डट कर विरोध करना है।

(पृष्ठ १८ का शेष)

चरैवेति चरैवेति के मन्त्रद्रष्टा ने अपूर्व सफलता प्राप्त की। आज उनका स्वप्न साकार हो रहा है। अपने जीवनकाल में चालीस हजार से अधिक घरों में "वेद" पहुंचाकर वे धन्य हो गये। महर्षि दयानन्द की मानवीय गरिमा की इस घोषणा को कि "वेदमानव मात्र के लिए है," महर्षि के एक शिष्य ने पूर्ण किया, यह उनके लिए सन्तोष की बात थी ओर हम सबके लिए गर्व का विषय रहेगी।

महर्षि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश के प्रकाशन का कार्य भी उन्होंने बड़ी सफलता के साथ किया।

आज आर्यजगत् उनसे प्रेरणा लेकर वेद-भाष्य प्रकाशन, सत्यार्थ-प्रकाश और वैदिक साहित्य प्रकाशन की दिशा में आगे बढ़ रहा है। परन्तु आर्यसमाज के साहित्य प्रकाशन का कार्य बहुत व्यापक है। भारतेन्द्रजी ने साहित्य प्रकाशन को एक कार्य नहीं एक मिशन बना लिया था—एक आन्दोलन का रूप दे दिया था। उस कार्य को पूरा करना—आगे बढ़ाना उनके समानधर्माओं का—उनके श्रद्धालुओं का पवित्र कर्तव्य है।

वेद मन्दिर की स्थापना, प्रेस का निर्माण उनकी योजनाओं के सीमित साधन हैं। दयानन्द संस्थान उनके मिशन को आगे बढ़ाने में सफल हो, इसके लिए आवश्यक है कि दयानन्द संस्थान को पूर्ण सहयोग दिया जाय। यही हम सबकी उनके कार्यों और विचारों के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

अपने आत्मीय के वियोग में शोक विह्वलता स्वाभाविक है। हम सभी परस्पर समवेदना और सहानुभूति द्वारा इस विपत्ति को सहन कर सकेंगे। हमारी धैर्यशीलता, कर्मठता और उनके मिशन के प्रति आस्था ही हमारा सम्बल बनेगी। दयानन्द संस्थान की अमरता ही महात्मा वेदभिक्षु: की अमरता होगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—बृजकिशोर 'अश्क'

मुसलमानों की निरन्तर बढ़ती आक्रामकता

आज पुनः सम्पूर्ण भारत में मुस्लिम सम्प्रदायवादी मनोवृत्ति अपने मूल रूप को धारण कर निरन्तर उग्र एवं हिंसक होती जा रही है। जो उग्रवादिता, असहिष्णुता एवं क्रूर धर्मान्धता उनके तमाम तथाकथित महापुरुषों में पायी जाती थी उसका अबाध स्रोत पूर्ववत् प्रवाहित हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप अनेक स्थानों पर हिन्दू-मुस्लिम दंगे हो रहे हैं तथा बात-बात में मूर्खतापूर्ण ढंग से मुस्लिम गुंडागर्दी उभर कर स्पष्ट होती जा रही है। एकमात्र मुस्लिम उग्रवाद के कारण ही देश में यत्र-तत्र दंगे हो रहे हैं—यह कड़वा सत्य मैं किसी पूर्वाग्रह से या हिन्दू लेखक होने के कारण नहीं कह रहा अपितु तटस्थ लेखकीय भावना एवं प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर कह रहा हूं। प्रबुद्ध वर्ग इस कटु सत्य का प्रत्यक्षीकरण विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भी करते रहते हैं।

न्याय, शान्ति एवं व्यवस्था का सुर अलापने वाली इस सरकार को अगर सचमुच राष्ट्रीय सद्भावना एवं साम्प्रदायिक एकता की आवश्यकता आ पड़े तो उसे यह सीख दी जानी चाहिए कि किसी भी सम्प्रदाय, मत, पंथ,वाद या धर्म का कोई भी ग्रन्थ किसी भी माध्यम से मनुष्य को मनुष्य के विरुद्ध करता है तो उसे तत्काल जब्त कर समाप्त कर दिया जाये। मानवीय मूल्यों पर कुठाराघात कर द्वेष, ईर्ष्या एवं कटुता फैलाने वाले सभी मजहबी ग्रन्थों पर रोक लगा दी जाये। परन्तु निश्चित रूप से इतनी बड़ी बात कहने के लिए विशाल मानवीय भावना, धार्मिक सहिष्णुता, त्याग एवं साहस की आवश्यकता होगी जो आज भी प्रशासनिक रूप से अनुपलब्ध है।

युगप्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के बाद आज विश्व के अनेकानेक मानवतावादी विद्वान् एवं चिन्तक कुरान शरीफ की उन आयतों पर आपत्ति करने हेतु उठ खड़े हुए हैं जो मानवीयता की हत्या करती प्रतीत होती हैं। इतना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ही नहीं, खुद इस्लाम के धुरन्धर विद्वानों ने भी अक्ल में दखल देकर कुरान की हिंसात्मक एवं द्वेषात्मक आयतों पर कलम लगा दी है और अप्रत्यक्ष रूप से यह मांग भी कर दी है कि जैसे बाइबल में कालान्तर में संशोधन हुआ एवं उसका नवीन रूप सामने आया, वैसे ही कुरान से उन आयतों को अलग किया जाये जो कुरान को पवित्रता सूचक राष्ट्र से पृथक् करते हैं। हिन्दुस्तान की कई मुस्लिम महिलाएं इस्लामी व्यवस्था में नारी की शोषणपूर्ण स्थिति को मद्देनजर रखकर निरन्तर यह मांग कर रही हैं कि नारियों को इस्लाम में वही सम्मान दिया जाये जो अन्यत्र उन्हें प्राप्त है। इन्हें दो नम्बर का नागरिक या जड़ पदार्थ न समझा जाय।

इस्लाम एवं कुरान के जो विद्वान् हों या जो स्वयं को इस्लाम का पवित्र प्रतीक मानते हों या वे लोग जो 'लिख लोढ़ा पर पत्थर' हों और जो सिर्फ इस्लाम के नाम पर मुहम्मद बिन कासिम, मुहम्मद गौरी, अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद तुगलक, तैमूरलंग, नादिरशाह, अहमद शाह अब्दाली, औरंगजेब, हलाकू, चंगेज खां, याह्यां खां, इदी अमीन, आयतुल्ला खुमेनी इत्यादि मुस्लिम शासकों की क्रूरता को ही अपना धर्म मानकर चलते हैं, जरा धैर्य एवं ठंडे दिल से आलोचकों की बात तो सुनें। फिर यह सोचने या समझने का प्रयास करें कि सच्चाई क्या है ? तब वस्तुस्थिति उनके समक्ष स्पष्ट होगी। आज अनेक इस्लामी विद्वान् वैदिक धर्म का (हिन्दू धर्म का) परचय लिये देश भर में घूम रहे हैं और जन-सामान्य को प्रेरित कर रहे हैं कि वह इस्लाम की वास्तविकता को समझे। ऐसा वे इसलिए कर रहे हैं कि उन्होंने सच्चाई को बुद्धिमत्तापूर्वक स्वीकारने का प्रयास किया है। मताग्धता में सत्य की हत्या करने जैसा मूर्खतापूर्ण कार्य नहीं किया।

सत्य को पिस्तौल की गोली, चाकू या तलवार से समाप्त करने का प्रयास इस्लामपरस्त लोगों की ओर से निरन्तर होता रहा है। वे चाहे श्रद्धानन्द हों या पंडित लेखराम, राजपाल हों या श्यामाप्रसाद मुखर्जी, गुरु गोविन्दसिंह के चारों पुत्र अजीतसिंह, जोरावरसिंह, जुझारसिंह और फतेहसिंह हों या बन्दा वैरागी हों, हर तरफ इस्लामी हिंसक वृत्ति का नमूना देखने को मिलता है। इस्लाम और अल्लाह के नाम पर ढाए जा रहे जुल्मोसितम का दौर प्रारम्भ होकर समाप्त नहीं हुआ। गुरु गोविन्दसिंह ने अपने पत्र में औरंगजेब को लिखा था—

अगर सद वकुरआं बिखुरदी कसम।
मरा ऐतबारे न यक जर्रे दम॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चि कुरआं कसम रा कुनम ऐतबार।
वगरने तो गोई मन ईरा चिकार।।

न दीगर गिरायम् बनामे खुदात।
कि दीदम खुदाओ कलामे खुदात।।

अर्थात् अगर तू कुरान से सौ कसम खाये, तो भी मुझे कणमात्र भी यकीन नहीं है। तेरी कुरान की कसम का मैं क्या यकीन करूं ? तू काम निकलने पर कह देता है कि मुझे इससे क्या काम ? तेरे खुदा के नाम लेने से मैं और धोखे का शिकार न बनूंगा, क्योंकि मैं तेरे खुदा और तेरे खुदा के कलाम (कुरानी शिक्षा) को पहले देख चुका हूं।

अपने जन्म काल से ही चली आ रही सम्प्रदायान्धता (मैं इस्लाम को धर्म नहीं, सम्प्रदाय मानता हूं) का एक नमूना पिछले दिनों बिहार की राजधानी पटना में इस्लाम ने दिखाया। कलकत्ता के मछुआ बाजार निवासी २४-वर्षीय मुसलमान युवक मुमताज अहमद ने थ्री नॉट थ्री की गोली पटना हाई कोर्ट के जज न्यायमूर्ति श्री प्रेमशंकर सहाय पर दाग दी तो एकाएक न्यायालय में उपस्थित लोग स्तब्ध रह गये। परन्तु तत्काल ही वकीलों एवं कर्मचारियों की मदद से उस गुंडे को पकड़ लिया गया और ईश्वर की कृपा से न्यायमूर्ति प्रेमशंकर सहाय मृत्यु के मुख में जाने से बाल-बाल बच गये। कोतवाली थाना पटना में हाजत में बन्द मुमताज अहमद ने पुलिस दल एवं विशेष दल के समक्ष जो बयान दिया वह मुस्लिम मतान्धता एवं साम्प्रदायिक असहिष्णुता तथा गुंडागर्दी का पर्दाफाश करता है जो जन-सामान्य को चकाचौंध करने वाली तथा साम्प्रदायिक सद्भावना के खोखलेपन से ग्रस्त लोगों को स्तम्भत करने वाली है।

दो रिवाल्वरों से न्यायालय में न्यायाधीश पर प्रहार करने वाले मुमताज अहमद ने बताया कि वह भागलपुर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के रीडर श्री धनपति पांडेय एवं श्री महावीर प्रसाद "अकेला" को गोली मारने आया था (भेजा गया था)। उल्लेखनीय है कि उक्त दोनों व्यक्तियों ने क्रमशः "मध्यकालीन अरब" तथा "रोपा पेड़ बबूल का" नामक पुस्तकें लिखी हैं।

प्रोफेसर धनपति पांडेय के घर सशस्त्र पुलिस का पहरा देखकर मुमताज अहमद भागलपुर के होटल गेलार्ड से पटना में होटल ब्लूस्टार में आकर रहने लगा। इस तरह मौका मिलते ही ११ अक्तूबर को न्यायाधीश श्री प्रेमशंकर सहाय पर ही रिवाल्वर से प्राणघातक कर दिया। इतना ही नहीं, उसने पुलिस दल एवं गुप्तचर दल के समक्ष निर्भीकता पूर्वक यह स्वीकार किया कि वह जेल से मुक्त होते ही उक्त दोनों लेखकों को गोली मार देगा तथा इस तरह के कार्य के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिए देश-भर में अनगिनत मुसलमानों का जाल बिछा हुआ है और वे सब एक राष्ट्रव्यापी संगठन के अन्तर्गत (हत्या, तोड़फोड़ या आतंक की) यह कार्रवाई करते हैं।

गिरफ्तार युवक मुमताज अहमद के पास से एक डायरी भी प्राप्त हुई है, जिसमें विभिन्न व्यक्तियों के पते लिखे हैं, जो इस कार्य में अस्त्र-शस्त्रों से सहयोग करते हैं। उक्त डायरी के आधार पर देश-भर में कई स्थानों पर छापे मारे जा रहे हैं और इसी क्रम में भागलपुर से तीन, पटना से एक एवं बिहार शरीफ से दो संदिग्ध व्यक्तियों को पकड़ा गया है। बिहार शरीफ (जहां भयंकर दंगे हुए थे) के छापों में कुछ ऐसे कागजात प्राप्त हुए हैं जिनसे यह साबित हो रहा है कि इस तरह के कई (मुस्लिम) गिरोह देश के कई भागों में सक्रिय हैं तथा वहां निरन्तर अशान्ति तथा आतंक फैलने का कार्य कर रहे हैं।

एक प्रश्न मुमताज अहमद नामक अभियुक्त से पूछा गया था कि प्रोफेसर धर्मपति पांडे की पुस्तक के बारे में आपको पता कैसे चला और आपने इन्हें गोली मारने का निश्चय क्यों किया। उसके उत्तर में अभियुक्त मुमताज अहमद ने बताया कि कलकत्ता के कई अर्द अखबारों में उक्त पुस्तक के विषय में छपा था। कई अखबारों ने तो उस पुस्तक के ब्लाक बनवाकर भी छपवाये थे। कलकत्ता के मुस्लिम छात्रों ने इसके विरोध में प्रदर्शन भी किया था।

इस्लामपरस्त उर्दू अखबारों की साम्प्रदायिक हिंसा फैलाने में विशेष भूमिका रही है। जब अब्दुल्ला बुखारी ने कहा था कि "देश की वफादारी दूसरे नम्बर पर है और मुसलमान सबसे पहले अपने मजहब के प्रति वफादार है", तब सर्वप्रथम नरकटियागंज की जनता ने पोस्टर, पैंफ्लेट एवं शान्तिपूर्ण प्रदर्शन द्वारा उक्त राष्ट्रद्रोहितापूर्ण वक्तव्य का विरोध किया तथा प्रशासन से अब्दुल्ला बुखारी की गिरफ्तारी क मांग की थी। उक्त समाचार को कई समाचारपत्रों ने छापा, जिसमें कहीं भी हिंसक भावना, अशान्ति या अस्त्र-शस्त्र की चर्चा तक नहीं थी। परन्तु उर्दू 'ब्लिट्ज" ने इस घटना को अपने प्रतिनिधि रियाज अजीमाबादी के माध्यम से न सिर्फ साम्प्रदायिक रंग देकर छापा, बल्कि पैंफ्लेट का ब्लाक भी बनवाकर छापा जो राष्ट्रवादी संघर्ष समिति की ओर से निकाला गया था। २६ जुलाई १९८० के उर्दू ब्लिट्स ने जलूस को हथियारबन्द ठहराया तथा लिखा कि पैंफ्लेट में बुखारी को गालियां दी गई हैं। रियाज अजीमाबादी को अराष्ट्रीय शब्द गाली लगा जब कि उनके अन्य मुस्लिम भाई इस देश को तथा इस देश की मर्यादा को खुलेआम गाली दे रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमंत्रित्व काल में जब पाकिस्तानी क्रिकेट टीम भारत आई तो भारत के कुछ राष्ट्रवादियों ने इस खेल का विरोध करते हुए कहा कि जब इन्हीं के भाई बंगाल में हिन्दुओं के खून से होली खेल रहे हैं, तो फिर यह क्रिकेट मैच का नाटक किस लिए ? परन्तु स्व० जवाहरलाल नेहरू ने अपनी धर्मनिरपेक्ष भावना रखते हुए कहा कि "खेल में विरोध हल्कापन है।" परन्तु उन्हें भारीपन का आभास तब भी नहीं हुआ, जब लखनऊ टेस्ट मैच में भारतीय टीम हार गई और अनेक उर्दू अखबारों के साथ "पासबान" उर्दू समाचारपत्र ने लिखा कि "पाकिस्तान की क्रिकेट टीम ने हिन्दुस्तान के दांत खट्टे कर दिये और याद दिला दिया कि पाकिस्तान नया है। यदि कभी हिन्दुस्तान ने पाकिस्तान की ओर आंख भी उठाई तो उन्हें इसी तरह मार खानी पड़ेगी और चंगेज खां, महमूद गजनवी तथा तैमूर के हाथ देखने पड़ेंगे।"

अभी भारत और वेस्ट इंडीज के बीच हो रहे एक-दिवसीय मैच के अवसर पर जम्मू के मुसलमानों की वतनपरस्ती तब देखने को मिली जब वहां भारत-विरोधी नारे लगाए गए, भारतीय खिलाड़ियों को गालियां दी गईं और चप्पल तथा अण्डे चलाकर मारे गये। इतना ही नहीं, जब कभी कोई भारतीय खिलाड़ी आउट होता, खुशी के नारे लगाये जाते और कुछ मुसलमान युवक मैदान में जाकर आउट करने वाली मेहमान टीम के खिलाड़ी का हाथ चूम लेते। परन्तु जब भारतीय खिलाड़ी अच्छी बैटिंग का प्रयास करते, तब उन्हें गालियां दी जातीं तथा उन पर जूते-चप्पल फेंके जाते। यह था एक नया नमूना इस्लाम के राष्ट्रवाद का।

कहने का अर्थ यह है कि इस्लामी भावना से ग्रस्त गद्दारी की यह मनोवृत्ति कोई नई नहीं है। यह तो उन्हें विरासत में मिली है। जिस शौकतअली और मुहम्मदअली को महात्मा गांधी ने अंगुली पकड़ कर चलना सिखाया था, उन्हीं दोनों भाइयों ने कहा कि "एक गिरे से गिरा मुसलमान भी गांधी से लाख दर्जे बेहतर हैं, क्योंकि वह कुरान पर यकीन रखता है।" अत्यन्त नाटकीय ढंग से राष्ट्रीय गीत गाने वाले इकबाल ने इलाहाबाद के मुस्लिम लीग अधिवेशन (सन् १९३०) में स्पष्ट कहा कि "जिस राष्ट्रीयता में मुसलमानों को इस्लाम के सिद्धान्त की हत्या करनी पड़े उस पर तो उन्हें विचार तक नहीं करना चाहिए।" ३१ मार्च, १९४८ को इत्तेहादुल मुस्लिमीन के नेता कासम रिजवी ने कहा था कि "इस्लाम के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु एक हाथ में तलवार तथा दूसरे हाथ में कुरान लेकर शत्रुओं पर टूट पड़े।" कुरान ने कहा कि—

"अल्लाह ने मुसलमानों से उनकी जानें और उनके माल खरीद लिए हैं कि उनके बदले उनको बैकुण्ठ देगा ताकि वे अल्लाह की राह में लड़ें और मारें और मरें। यह खुदा की पक्की प्रतिज्ञा है।" (कुरान सूरे तोबा)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"मुसलमानों को चाहिये कि मुसलमानों को छोड़कर काफिरों (गैर-इस्लामी) को अपना दोस्त न बनायें और जो वैसा करेगा तो उसके और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं।" (कुरान सूरे अल इमरान)

"और ध्यान रखो जो चीज तुम लूट कर लाओ उसका पांचवां भाग खुदा का और पैगम्बर का और पैगम्बर के सम्बन्धियों का···।" (कुरान सूरे अन्फाल —दसवां पारा)

"जो औरत तुम्हें पसन्द हों उनसे निकाह कर लो, दो-दो या तीन-तीन या चार-चार से।" (कुरान सूरे ४ पैरा ३)

"और जो स्त्रियां ऐसी हों जिनकी सरकशी का तुम्हें डर हो, उन्हें समझाओ। सोने की जगह में उनसे अलग रहो और उन्हें मारो।" (कुरान सूर अननिसा पारा ५)

"सो जो लोग दुनिया की जिन्दगी के बदले आखिरत का सौदा करें उन्हें चाहिये कि अल्लाह की राह में लड़ें। जो अल्लाह की राह में लड़ेगा, तो चाहे वह मारा जाए या विजयी हो उसे जल्द हम बड़ा बदला देंगे।" (कुरान सूरे अननिसा पारा ५)

इस तरह की आयतों से कुरान भरा पड़ा है। तो फिर उसके अनुयायी क्यों न उसी भावना के मानने वाले हो जायें ? कुरान की आयतों की समीक्षा या भावार्थ पर विस्तारभय से न जाते हुए मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि विश्व के किसी भी देश में जहां मुसलमान अल्पसंख्यक हैं वे उस देश के प्रति वफादार नहीं हैं (और न वे इस्लाम को मानते हुए हो सकते हैं)।

१९८० में पाकिस्तान के डिक्टेटर जियाउलहक ने लाहौर के नागरिकों के समक्ष कहा कि "पाकिस्तान का पूर्ण इस्लामीकरण हमारा लक्ष्य है। यहां कोई भी सरकार या व्यक्ति नहीं रह सकता, जो गैर-इस्लामी है। पाकिस्तान इस्लाम के नाम पर बना था।" परन्तु इस्लाम का जो रूप जिया ने पाकिस्तान में दिखाया वह दुनिया के समक्ष है। जब पाकिस्तान का शासन यह सोचता है पाकिस्तान इस्लाम के नाम पर बना तो एक और प्रश्न भारत में उठना चाहिए था कि भारत किस नाम पर बना ? परन्तु गद्दारों को इससे कोई सरोकार नहीं और न कुर्सीवादिता के समक्ष भ्रष्ट नेता यह सोचने वाले हैं।

मेरे कहने का अर्थ यह है कि मुस्लिम अखबारों (अधिकतर), मुस्लिम मतान्धों एवं मौलवियों की भूमिका भ्रामक एवं संदिग्ध रही है। मुस्लिम अखबारों ने प्रो० धनपति पांडेय एवं महावीर 'अकेला' की पुस्तकों को निश्चित ही नमक-मिर्च लगाकर छापा होगा। उन्होंने उक्त पुस्तकों को न्यायालय में चुनौती देने या लेखक से बात करने का प्रयास नहीं किया, क्योंकि अगर वे इस रास्ते आते तो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वयं मुंह की खाते। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में स्वामी दयानन्दसरस्वती ने कुरान की भ्रामक, अवैज्ञानिक एवं बुद्धिमत्ताहीन बातों पर टिप्पणी की परन्तु उनकी इस टिप्पणी पर शास्त्रार्थ कर कई मौलवी पराजित हो चुके हैं। इसी तरह कई लेखकों एवं प्रकाशनों द्वारा इस्लाम पर गवेषणात्मक एवं तार्किक पुस्तकें लिखी गयीं परन्तु मुसलमानों ने कभी भी शास्त्रार्थ या बात-चीत का रास्ता नहीं अपनाया, क्योंकि वे अक्ल में दखल नहीं मानते। वे अपनी कमियां या खामियां नहीं देखते वरन् बताने वाले को ही समाप्त करने का प्रयास करते हैं। उनकी इसी मनोवृत्ति के कारण साम्प्रदायिक एकता एवं शांति स्थापित नहीं होती और इसी कारण भारत में आज एक नया पाकिस्तान सिर उटा रहा है।

जहां तक पटना हाई कोर्ट के जज श्री प्रेमशंकर सहाय पर गोली चलाने का प्रश्न है, इसके उत्तर में मुमताज अहमद ने बताया कि आज से ५० वर्ष पूर्व कलकत्ता के विद्वान् श्री भोलानाथ सेन ने भी इसी तरह की एक पुस्तक लिखी थी। तब लाहौर से दो युवकों अमीर और अब्दुल्ला ने कलकत्ता आकर उस लेखक को गोली मार दी। मुहम्मद मुमताज अहमद के इस बयान से ही स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार मुसलमान अपने पूर्वजों से हिंसा की तालीम प्राप्त करते हैं। उक्त प्रकार की हिंसात्मक घटनाएं निरन्तर चल रही हैं और उनका नया-नया रूप हम सबके सामने आता है।

उक्त गोलीकाण्ड के बाद तत्काल उच्च न्यायालय के वकीलों की एक बैठक हुई, जिसमें सरकार से इसकी पुनरावृत्ति रोकने तथा अपराधी को सख्त सजा देने की मांग की गई। एक विशेष पुलिस दल कलकत्ता प्रस्थान कर गया, जहां अभियुक्त मुमताज अहमद के निजी चरित्र एवं कार्य-कलाप का पता लगाया गया। उक्त गोली कांड की जांच अपराध अनुसंधान विभाग द्वारा सी० आई० डी० के सहयोग से की जा रही है। बिहार के मुख्यमंत्री श्री चन्द्रशेखर सिंह ने इस घटना की घोर निन्दा की है तथा कहा है कि न्यायपालिका पर इस तरह के हमले करने वाले अपराधी को सख्त सजा मिलनी चाहिए।

मुख्यमन्त्री की इस गुहार के बाद बिहार के गृह आयुक्त श्री अभिमन्यु सिंह ने घोषणा की है कि बिहार सरकार ने प्रोफेसर धनपति पांडेय द्वारा लिखित 'मध्यकालीन अरब' नामक पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगा दिया है और उसकी सभी प्रतियां जब्त कर ली गई हैं।

परन्तु प्रश्न यह है कि उक्त गोली कांड जैसी गुण्डागर्दी की जिम्मेवारी उस लेखक या उसकी कृति को दी जा रही है जिसने अपने अन्वेषण द्वारा सत्य को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामने रखा। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि इस्लाम विरोधी कोई भी पुस्त सम्भवत: पूरे विश्व में अस्तित्व में नहीं। इष्लाम विरोधी पुस्तकों में उन्हीं बा एवं मुद्दों को उठाया गया है जो इस्लाम द्वारा प्रतिपादित हैं। इस प्रसंग में क्रां द्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती के समय की एक घटना याद आती है। ज्येष्ठ व १ संवत् १९२३, दिनांक ३० मई १८६६ को दूसरी बार अजमेर पधारे ईसाई पादरी जे०ग्रे० रावसन और शूलब्रेड से शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित क के बाद दूसरा शास्त्रार्थ मौलवी मुरादअली से हुआ जो उस समय के प्रसि विद्वान् थे। मौलवी मुरादअली राजपूताना गजट के सम्पादक थे, इसलिए उन्हों अक्ल में दखल दिया और स्वामी जी के पास लगातार पांच बार अपने विभि प्रश्नों को लेकर प्रकट हुए। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उन्हें इतना संतुष्ट कि कि वे स्वामी जी के पूर्ण समर्थक बन गए और उन्होंने गोरक्षा पर विशेष बल दिया।

आज भी इस्लाम के समर्थक लोग उन पुस्तकों के लेखकों से सम्पर्क कर शंक समाधान कर लिया करें। मुमताज अहमद अगर सच्चा मुसलमान होता तो पह उस पुस्तक को पढ़ता, फिर अपने विद्वानों द्वारा लेखक से स्पष्टीकरण का प्रया करता तो यह स्थिति न आती। परन्तु यहां तो उस जैसे नादान व्यक्तियों शतरंज का मोहरा वनाकर चला जा रहा है। उनमें नफरत भरी जा रही है। मुमताज अहमद ने भी स्वीकार किया कि उसका एक संगठन है जिसमें सैक व्यक्ति हैं और सबके जिम्मे अलग-अलग काम है' जिसे वे गोपनीय ढंग से कर हैं। प्रशासन इस तरह के वक्तव्य को सुनकर भी मानो कुछ नहीं कर रहा है वोट की राजनीति ने समस्त प्रशासनिक क्षमता को पंगु कर दिया है और नेता की अक्ल कुर्सी की भूख ने सड़ा डाली है।

प्रशासन का उत्तरदायित्व है कि वह ऐसे गिरोह का पर्दाफाश करे जो मु ताज अहमद जैसे निर्दोषों को दांव पर लगाने एवं देश में हिंसा, अराजक अशान्ति तथा भय फैलाने तथा अराष्ट्रीयता का बीज बोने जैसा जघन्य एवं अक्ष अपारध करते हैं। ऐसे लोगों को अवश्य सजा मिलनी चाहिए। अन्यथा देश अस्तित्व संकट में है। भारत की राष्ट्रीय धारा से जुड़े समस्त हिन्दू समुदाय में एक होकर इस तरह की घटनाओं का देशव्यापी विरोध करना चाहिए। आप के छोटे-छोटे विवादों को भूल कर एक साथ पुन: सिंहनाद करने एवं भारत सभ्यता, संस्कृति, धर्म एवं सम्मान की रक्षार्थ खड्गहस्त होने तथा धनुष धार करने का वक्त आ गया है। ▭

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या पाकिस्तान खालिस्तान आंदोलन का समर्थन कर रहा है?

—वि० स० विनोद

कलकत्ता के स्टेट्समैन ने अपने प्रथम पृष्ठ पर एक समाचार छापा है, जिसके शीर्षक हैं 'खालसा के पाकिस्तान से सम्बन्ध' और 'पाकिस्तान का खालसा स्वप्न'। यह समाचार स्टैट्समैन के २२ संवाददाताओं के दल ने जो सर्वेक्षण किया है, उस पर आधारित है। रिपोर्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान द्वारा संगठित रूप से सिख नेताओं में सम्पर्क १९६५ से साधा गया है। यह इस उद्देश्य से किया गया कि सिखों में यह भावना पैदा की जाये कि वे भारत के अन्य वर्गों से भिन्न हैं और उनकी अनेक शिकायतें हैं और कि वे अलगाव अनुभव करें।

इस योजना में शक्ति के प्रयोग की बात रखी गई। इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए पुलिस तथा सेना में सैल बनाया जाना भी एक कार्यक्रम था। बलिदानी दस्ते बनाना, शस्त्रों को इकट्ठा करना, गोलाबारूद प्राप्त करना तथा अन्य सामान जुटाना। मुख्य उद्देश्य यह था कि पंजाब में हिन्दुओं और सिखों में मतभेद पैदा किये जायें।

लन्दन में ज्ञानी बख्शीश सिंह के समर्थकों ने १९७४ में कहा कि बंगलादेश की स्थापना हो गयी है। इसकी स्थापना भारत की सहायता से हुई है। फिर कोई कारण नहीं कि खालिस्तान की स्थापना पाकिस्तान की सहायता से न की जाये।

स्टेट्समैन का समाचार है कि ऐसी रिपोर्ट है कि उग्रवादियों को प्रशिक्षण अच्छे तौर पर तोड़फोड़ व उपद्रवों के लिए लाहौर के निकट शिविरों में दिया जा रहा है। इस प्रकार के प्रशिक्षण शिविर ऐमनाबाद, गुजरांवाला और शेपुखूरा में भी हैं।

दल खालसा के कार्यकर्ताओं ने एक भारतीय विमान का अपहरण किया और उसे लाहौर ले गये। उन्हें नजरबन्द कर दिया गया, लेकिन वे भारत में अपने साथियों से सम्पर्क में रहते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंजाब में जो उग्रवादी हिंसात्मक कार्रवाइयां कर रहे हैं; उन्हें आधुनिक शस्त्र पाकिस्तान से प्राप्त हो जाते हैं। कभी-कभी वे पकड़ भी लिये जाते हैं-तब उनकी तस्करी भारत में की जाती है।

बूटा बेग उर्फ बूटाखां का मामला लें। इस बूटासिंह ने सिख-मुस्लिम भा भाई का आन्दोलन शुरू किया और लन्दन के ज्ञानी बख्शीश सिंह से सम्पर्क स्थापित किया। इन सिख नेताओं को पाकिस्तानी राजनयिक पार्टियों में नि न्त्रित किया। यह कार्य अधिकतर बूटा बेग के माध्यम से होता था।

१९७१ में एक सिख पत्रकार तथा बूटा बेग ने डा० चौहान के लिए ए प्रेस कान्फरैन्स हिलटन होटल में २ सितम्बर को की। उसमें डा० चौहान ने क कि सिख राज्य के लिए सहायता किसी ओर से भी हो, उसका स्वागत कि जायगा।

स्टेट्समैन की रिपोर्ट यह भी कहती है कि उसी वर्ष (१९७१ में) पाकिस्ता हाई कमिश्नर ने डा० चौहान की अमरीका यात्रा का प्रबन्ध किया। अमरी में पाकिस्तानी राजदूत की शह पर अमरीकी सरकार का एक अधिकारी डा चौहान के स्वागत के लिए उपस्थित हुआ। न्यूयार्क टाइम्स में आधे पृष्ठ एक विज्ञापन निकाला गया, जिसकी कीमत ५ हजार डालर थी। इसका भुगता पाकिस्तानी दूतावास ने किया। डा० चौहान की अमरीका यात्रा की सा व्यवस्था अमरीका में पाकिस्तानी दूतावास के सूचना विभाग ने की थी।

१९७१ के अन्त में डा० चौहान, ज्ञानी बख्शीश सिंह तथा श्री चरणसिं पंछी ने पाकिस्तान की यात्रा पाकिस्तानी विमानों से बिना टिकट की। इन साथ नगा नेता फिजो भी था, जिन्हें ये टिकट बर्मिघम के एक होटल में दि गये।

अमरीका से श्री गंगासिंह ढिल्लों ने १९७८ में पाकिस्तान की यात्रा की उनका स्वागत पाक राष्ट्रपति जनरल जिया उल हक ने किया। उन्होंने १९८ में फिर पाकिस्तान की यात्रा की और १९८१ में वे पुनः पाकितान आये, ज उन्होंने यह घोषणा की थी कि सिख एक नेशन हैं। यह थ्योरी आपने चंडीगढ़ नवम्बर १९८१ और मई १९८२ में सिख शिक्षा सम्मेलन में पेश की।

उत्तरी अमरीकी अकाली दल की स्थापना १९८१ में की गई। जब पाकि स्तान के राष्ट्रपति ने अमरीका की यात्रा की तो अमरीका के अकाली दल एक शिष्टमंडल राष्ट्रपति जिया से वहां मिला था। जनरल जिया ने टोरन्टो एक सिख प्रतिनिधिमंडल से भी भेंट की। १९८२ में खालिस्तान आंदोलन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संचालकों ने खालिस्तान टाइम्स छापना शुरू किया। इसके लिए तीन पाकिस्तानी पत्रकारों ने सहायता दी, जो यूरोप की इस्लामिक कौंसिल से धन प्राप्त करते हैं।

जब से अकालियों का आंदोलन शुरू हुआ है, बराबर यह कहा जा रहा है कि इसके पीछे विदेशी हाथ है। किसी ने अमरीका का नाम लिया और किसी ने ब्रिटेन का। पाकिस्तान के बारे में लोगों को कोई शक नहीं था। पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस बात का खण्डन कर चुके हैं कि पाकिस्तान का कोई भी सम्बन्ध खालिस्तान आंदोलन से है।

भारत में शायद ही कोई पाकिस्तान के इस बयान का विश्वास करता हो। वास्तव में बात यह है कि इन दिनों जनरल जिया उल हक का पाकिस्तान में जो इस्लामी शासन स्थापित है, वह अपना जन्मजात अधिकार समझता रहा है कि हर गैर-इस्लामी को हमारी अधीनता स्वीकार करनी ही चाहिए। पाकिस्तान समस्त विश्व से शस्त्र इकट्ठे कर रहा है। वह इनकी नुमाइश तो नहीं लगायेगा। इनके इस्तेमाल के लिए ही इन्हें इकट्ठा किया जा रहा है। इसी पर बस नहीं। पाकिस्तान परमाणु बम तथा हाइड्रोजन बम बनाने के लिए भी पूरी तरह प्रयत्नशील है। ऐसी स्थिति में यह सोचना कि वह भारत में ऐसे तत्त्वों की हिम्मत न बढ़ायेगा जो भारत को कमजोर करना चाहते हों, समझ में आने वाली बात नहीं। पाकिस्तान अभी तक बंगलादेश को नहीं भूला है, जिसकी स्थापना पाकिस्तानी अत्याचारों के कारण हुई। पूर्वी पाकिस्तानी पश्चिमी पाकिस्तान के खिलाफ मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में खड़े हुए और उन्होंने पाक प्रशासन को गिरा दिया तथा अपना अलग देश बना लिया।

ऐसी दशा में जब खतरे फैल रहे हैं, यह बहस कि खालिस्तान के आंदोलन को पाकिस्तान का आशीर्वाद प्राप्त है या वह इसे प्रोत्साहन दे रहा है, चलती रहेगी।

पाकिस्तान में अपने धार्मिक स्थानों की यात्रा करके जो सिख लौटते हैं, वे बतलाते हैं कि पाकिस्तानी किस प्रकार सिखों का स्वागत करने में अपनी आंखें बिछा देते हैं। इस पर यही कहा जायेगा कि पाकिस्तानी अपने पुराने इतिहास को शायद बदल देना चाहते हैं, क्योंकि दोनों के धार्मिक दृष्टिकोण में मौलिक अन्तर है।

फील्ड मार्शल अय्यूब खां के समय तक पाकिस्तान ने भारत के सिखों में कोई विशेष दिलचस्पी न ली, लेकिन जनरल यह्या खां और जुल्फिकार अली भुट्टो ने इनसे सम्पर्क पैदा करने के लिए नये तरीके अपनाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान [मासिक]

के

आजीवन सदस्य बनकर

आगे बढ़ने में
सहयोग दीजिए।

अपने मित्रों-परिचितों को भी आजीवन सदस्य बनाइए।

आजीवन सदस्य बनकर
वैदिक सम्पत्ति मुफ्त लें

आप आज ही ५०१) भेजिए।

यह मेरी प्रार्थना है।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मालवीयजी राष्ट्रभक्ति के सतरंगी इन्द्रधनुष थे

—प्रभुनारायण श्रीवास्तव

सन् १८५७ के विप्लव के चार वर्ष बाद २५ दिसम्बर, १८६१ तदनुसार पौष कृष्ण ८ सम्वत् १९१८ वि० को बुधवार के दिन प्रयाग के लालडिग्गी मुहल्ले में, जो आज भारती भवन के नाम से जाना जाता है, मदनमोहन मालवीय का जन्म हुआ था। भारत के इतिहास में सन् १८६१ ई० का निःसन्देह महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी वर्ष भारत माता ने मई महीने में रवीन्द्रनाथ ठाकुर और मोतीलाल नेहरू को जन्म दिया और आगे चलकर प्रफुल्लचन्द्र राय और मदनमोहन मालवीय को जन्म दिया। इन चारों बालकों ने अपनी प्रतिभा से भारत माता का मस्तक ऊंचा किया तथा साम्राज्यशाही की भावना से अनुप्राणित यूरोपियन राजनीतिज्ञों और अधिकारियों को भारत के सम्बन्ध में अपनी धारणाएं और रीति-नीति बदलने पर मजबूर किया, जिसकी स्वाभाविक परिणति हुई भारतवर्ष की आजादी में।

पिता व माता से विरासत में उन्हें भगवद्भक्ति, निर्धनों के प्रति सहज सहानुभूति एव हृदय की सरलता मिली। बचपन में ही उन्होंने कविता करनी प्रारंभ कर दी थी।

प्रारंभिक सार्वजनिक जीवन

मालवीय जी ने यद्यपि बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद पारिवारिक आर्थिक स्थिति के कारण अध्यापन व्यवसाय को अपनाया था किन्तु प्रखर देशभक्ति ने उन्हें उद्वेलित किये रखा। सन् १८८६ में दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में मालवीय जी अपने गुरु पंडित आदित्यराम भट्टाचार्य के साथ इण्डियन नेशनल कांग्रेस के द्वितीय सम्मेलन में सम्मिलित होने कलकत्ता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गये। वहां उन्होंने श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव के समर्थन में बहुत ही अच्छा भाषण दिया तथा अपनी प्रतिभा के लिए यश तथा आशीर्वाद प्राप्त किया। मालवीय जी के इस भाषण को सुनकर अधिवेशन के अध्यक्ष दादाभाई नौरोजी ने कहा कि इस नवयुवक की वाणी में स्वयं भारतमाता ही मुखर हो रही है। इसी प्रकार कांग्रेस के सभी बड़े नेता जिनमें श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, और श्री ए० ओ० ह्यूम प्रमुख थे, मालवीय जी के धारा-प्रवाह भाषण से प्रभावित हुए।

भारत धर्म महामंडल

मालवीय जी लगभग पन्द्रह वर्षों तक भारत धर्म महामंडल के महोप-देशक रहे। इसके तत्त्वावधान में आयोजित सम्मेलनों औरस भाओ में वे सनातन धर्म, हिन्दू संस्कृति की विशेषताओं आदि विषयों पर व्याख्यान देते रहे। सन् १९०२ में महामंडल के व्यवस्थापक श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी से मतभेद हो जाने के कारण मालवीय जी का उससे सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। सन् १९०६ में प्रयाग में कुम्भ के अवसर पर उन्होंने सनातन धर्म महासभा का एक विराट् सम्मेलन स्वतंत्र रूप से आयोजित कराया।

कालाकांकर के राजा श्री रामपाल सिंह ने मालवीय जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उन्हें "दैनिक हिन्दोस्थान" पत्र के संपादक का कार्यभार सौंपा। इस तरह मालवीय जी ने जुलाई सन् १८८७ में अध्यापन कार्य छोड़कर "हिन्दोस्थान" के सम्पादन का उत्तरदायित्व ग्रहण किया। उनके सम्पादनकाल में पत्र ने काफी ख्याति अर्जित की। बाद में एक दिन राजा साहब के शराब पीने की आदत से परेशान होकर उन्होंने सम्पादक पद से त्यागपत्र दे दिया। तदुपरांत मालवीय जी ने वकालत की डिग्री प्राप्त की और वकालत करने लगे। वकालत भी अच्छी चलने लगा। इस सबके बावजूद राजा रामपाल सिंह मालवीय जी को बहुत सम्मान देते रहे। सन् १९१[illegible] में वे वकालत छोड़कर पूरी तरह देशसेवा में लग गये।

श्री गोपालकृष्ण गोखले ने कहा था—"त्याग तो मालवीय जी महाराज का है। वे निर्धन परिवार में उत्पन्न हुए और बढ़ते-बढ़ते प्रसिद्ध वकील होकर सहस्रों रुपये मासिक कमाने लगे। उन्होंने वैभव का स्वाद लिया और जब मातृभूमि की सेवा की पुकार उठी, तो उन्होंने सब कुछ त्याग कर निर्धनता स्वीकार कर ली।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मालवीयजी के प्रयास से सन् १८९६ में सर एण्टोनी मैकडानल ने प्रान्तीय सरकार की सन् १८७७ की वह आज्ञा वापस ले ली, जिसने सरकारी दफ्तरों में दस रुपये या उससे अधिक की नौकरी पाने के लिए उर्दू या फारसी में ऐंग्लो-वर्नैकुलर मिडिल परीक्षा पास करना अनिवार्य बना दिया था। सर एण्टोनी मैकडानल ने १४ अप्रैल १९०० ई० को अदालतों में फारसी लिपि के साथ देव नागरी लिपि के भी चलन की आज्ञा जारी कर दी।

प्रखर पत्रकार

सन् १९०७ में अपने राजनैतिक व सांस्कृतिक विचारों के प्रसार के लिए उन्होंने "अभ्युदय" नामक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। दो वर्ष तक वे स्वयं उसका सम्पादन करते रहे। सन् १९०९ में मालवीय जी के प्रयास तथा बहुत-से मित्रों के सहयोग से विजयादशमी के दिन २४ अक्टूबर से अंग्रेजी दैनिक "लीडर" का भी प्रकाशन आरम्भ हुआ।

कांग्रेस में कार्य

मालवीयजी के राजनैतिक कार्यों का प्रमुख मंच कांग्रेस ही था। कांग्रेस के मंच से मालवीय जी ने राष्ट्र के हितों को पुष्ट किया, सरकार की दमन नीति का विरोध किया तथा राजनैतिक सुधारों, जनता के प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व, विधान सभाओं के अधिकारों के विस्तार एवं सेना में भारतीयों को उच्च-स्तरीय "कमीशन" दिये जाने की मांग की। उन्होंने मांग की कि भारत की सीमा के बाहर आयोजित युद्धों का खर्चा ब्रिटेन स्वयं सहन करे तथा मालगुजारी का स्थायी बन्दोबस्त किया जाय, किसानों के लगान में कमी की जाय और उनको जमींदारों द्वारा मनमानी दखली से सुरक्षित किया जाय। उन्होंने लार्ड कर्जन के विश्वविद्यालय विधेयक का विरोध करते हुए उच्च-स्तरीय शिक्षा के प्रबन्ध में सरकारी अफसरों के हस्तक्षेप की वृद्धि की निन्दा की। उन्होंने बंगभंग की भी कड़ी आलोचना की।

मालवीयजी निरंकुश शासन के स्थान पर प्रतिनिधि शासन प्रतिष्ठित करना चाहते थे। अनुत्पादक कार्यों में व्यय को घटाकर सरकारी खर्चे पर जनता के प्रतिनिधियों का समुचित नियंत्रण स्थापित करके राजकोष को अधिक से अधिक जनहितकारी कामों में लगाना चाहते थे।

आगे चलकर मालवीय जी का कांग्रेस से मतभेद हो गया था, किन्तु फिर भी वे कांग्रेस को ही स्वतंत्रता संग्राम की प्रतिनिधि संस्था समझते रहे। हिन्दू महासभा की स्थापना के पीछे उनका ही मार्गदर्शन था—वे हिन्दुत्व के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उदार आदर्शों को कायरता का प्रतीक नहीं समझते थे। उनका मत था कि हिन्दू जीवन सिद्धान्तों की रक्षा सिर्फ हिन्दुओं के लिये नहीं वरन् सारी मानवता के लिये अनिवार्य है।

यह सही है कि मालवीय जी का कांग्रेस से सम्बन्ध उतना प्रकाश में नहीं आया जितना गांधीजी व नेहरूजी का। किन्तु कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में ही उन्होंने इटावा के कलक्टर ए० ओ० ह्यूम की योजना का पर्दाफाश किया। भारतीय कांग्रेस का जन्म सन् १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता युद्ध की ज्वाला में जली हुई अंग्रेजी हुकूमत की सहायता करने की दृष्टि से ही हुआ था। भारतीयों को वैधानिकता के घेरे में बांधना ही उसका उद्देश्य था। मालवीय जी प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने कलकत्ते में अपने भाषण से कांग्रेस के भारतीयकरण की दिशा में प्रयास किया। गांधी व तिलक तो कांग्रेस में बाद में आये, किन्तु पहली बार अंग्रेजों के लिए खतरे की घंटी मालवीय जी ने ही बजायी। "प्रतिनिधित्व नहीं तो टैक्स भी नहीं" का उद्घोष मालवीयजी ने पहली बार कलकत्ता अधिवेशन में किया। इसके बाद तो मालवीयजी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से कांग्रेस से हमेशा सम्बन्धित रहे—वैचारिक भिन्नता के बावजूद। वे कांग्रेस व कांग्रेस के नेताओं को स्वतंत्रता संग्राम में आजीवन अपना समर्थन व मार्गदर्शन देते रहे। सुभाष बाबू ने तो इसी की ओर लक्ष्य कर एक बार नवयुवकों से कहा था—"आज जिस अग्नि के सामने खड़े होकर प्रसन्नता से तुम नाच रहे हो उसे प्रज्वलित करने में मालवीयजी की हड्डियों ने चन्दन की लकड़ी का काम किया है, इसे कभी मत भूलना।"

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना कोई आकस्मिक घटना न होकर महामना द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में सतत व सक्रिय भाग लेते हुए उनके सार गर्भित चिन्तन का परिणाम है। यह उनकी दूर-दृष्टि थी जो उन्हें बाकी महापुरुषों से अलग करती है।

स्वतंत्रता संग्राम को हर प्रकार से सबल करते हुए भावी भारत के सर्वांगीण विकास के लिए वे हमेशा चिन्तित रहते थे। पिछले एक हजार वर्षों की परतंत्रता ने भारतवर्ष के अन्दर हर प्रकार का मानसिक दासता को जन्म दिया था। इस मानसिक दासता से मुक्ति के लिए आवश्यक था कि ऐसे तरुणों का निर्माण किया जाय जिनके हृदय में भारतीय संस्कृति व सभ्यता के प्रति अगाध श्रद्धा हो और साथ ही यह देश भौतिक व औद्योगिक प्रगति में दुनिया के किसी देश से पीछे न हो। जिस वक्त सारा देश अंग्रेजो के हटाने के नकारात्मक आन्दोलन में व्यस्त था

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उस वक्त ये महामानव इसके सकारात्मक पक्ष को भी साथ लेकर चल रहे थे। हिमालय से कन्याकुमारी और अटक से कटक तक का भ्रमण करते हुए उन्होंने विश्वविद्यालय के लिए कई करोड़ रुपये एकत्र किये।

इस प्रकार एक सफल वकील होकर भी वे गरीब रहे और अपने तथा परिवार के लिए एक कौड़ी भी न जोड़ पाये बल्कि जो कुछ कमाया था वह और जो कुछ मिला था वह सब उन्होंने इस विश्वविद्यालय की स्थापना में लगा दिया और ऐसा आश्चर्य उत्पन्न कर दिया जिसकी ऊंचाई की कल्पना भी एक आश्चर्य की बात हो गई।

आज उस दधीचि की तपस्या का ही फल है कि हिन्दुस्तान के अनेकों उद्योगों के आधार में हिन्दू विश्वविद्यालय के स्नातक ही हैं। महामना की तपस्या से प्रभावित होकर ही तत्कालीन श्रेष्ठ शिक्षाविदों ने इस विश्व-विद्यालय को अपनी सेवाएं अर्पित कीं। उनमें सर सुन्दर लाल, डा० भगवान् दास, ओंकारनाथ ठाकुर, सर्वेपल्ली डा० राधाकृष्णन्, राम स्वामी अय्यर आदि का नाम अग्रगण्य है।

महामना मालवीय आजीवन भारतवर्ष की स्वतन्त्रता के लिए वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार करते रहे—जनमत को योग्य दिशा में ले चलने के लिए उसका परिष्कार करते रहे। परस्पर मतभेदों को मन-भेद में बदलने से रोकते रहे। १९३८ में शारीरिक क्षीणता के अवसर पर भी वे सबके लिए हमेशा उपलब्ध थे। विश्वविद्यालय के कुलपति से लेकर निर्धन छात्र तक उनके पास सहायता के लिए आते थे। अन्ततः उस युगपुरुष का शरीर १२ नवम्बर सन् १९४६ को हमेशा के लिए शान्त हो गया।

मालवीय दर्शन

ईश्वरभक्ति और देशभक्ति मालवीय जी के जीवन के दो मूल मन्त्र थे। वे मानते थे कि मनुष्य की पशुता को देवत्व में परिणत करना ही धर्म है—मनुष्य का विकास ही ईश्वरत्व और ईश्वर है और निष्काम भाव से प्राणि मात्र की सेवा ही ईश्वर की सच्ची आराधना है। उन्हें स्वर्ग और मोक्ष दोनों पर विश्वास था पर वे किसी की कामना नहीं करते थे। उनकी देशभक्ति का आधार हिन्दू धर्म के वे सारे उदार सिद्धान्त थे जिनसे मानवता विकसित होती थी। वे धर्म की स्थापना के लिए हिन्दुओं की संगठित शक्ति के पक्षधर थे। वे मुसलमानों के विरोधी न होते हुए भी मुहम्मद अली जिन्ना द्वारा प्रतिपादित द्विराष्ट्रवाद के घोर विरोधी थे। वे बलात् धर्मान्तरित हिन्दुओं की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शुद्धि के पक्षधर थे। वे छुआछूत के घोर विरोधी थे और हरिजनों के सर्वांगीण विकास में सक्रिय रुचि लेते थे। श्री जगजीवन राम को काशी में पढ़ाने का श्रेय आप ही को प्राप्त है।

आजादी के बाद सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा यह अपेक्षा की जाती थी कि महामना के अधूरे सपनों को साकार करने की दिशा में कुछ सशक्त प्रयास किये जायेंगे, किन्तु लगता है, कि महामना को किसी योजना के अंतर्गत ही भुलाने की कोशिश की जा रही है। महामना मालवीय को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके आदर्शों को मूर्त रूप देने के लिए कृतसंकल्प हों। ★

उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि।
आ हि रोहेममृतं सुखं रथमथ जिर्विविदथमावदासि ।।

हे पुरुष ! तुझे उपर उठना है न कि नीचे गिरना है। इस अमृत मुक्ति-दाता सुखदाता रथ पर चढ़। मैं जीने के लिए उत्साह का विस्तार करता हूँ और इसके बाद स्तुति योग्य बन कर ज्ञान का उपदेश कर।

कई मनुष्य किसी कार्य में असफल होने पर उदास हो जाते हैं और यह समझने लगते हैं कि हम उन्नति नहीं कर सकते। ऐसों के लिए माता से भी बढ़कर अधिक हितकारिणी जगदम्बा वेदवाणी साहस देती हुई कहती है—

'उद्यानम् ते पुरुष नावयानम्' हे पुरुष, हे मर्द तेरे लिए आगे बढ़ना है न कि पीछे हटना। संशय करने वाले को सुख नहीं प्राप्त हो सकता। भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है 'संशयात्मा विनश्यति' जो मनुष्य संशय करता रहता है वह इस लोक या परलोक में कहीं भी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। सन्देह-वृत्ति उसका नाश कर देती है। में 'अमुक कार्य करूं या न करूं ? यह संशय-वृत्ति हमें उस कार्य को नहीं करने देती। हम सोचते ही रह जाते हैं कि इस कार्य को करें या न करें। अन्ततः वैसे के वैसे ही रह जाते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंजाब के हिन्दुओं की रक्षा कीजिए

विश्व हिन्दू परिषद् का प्रधानमन्त्री के नाम खुला पत्र

आदरणीय प्रधानमन्त्री जी,

पंजाब की प्रज्वलन्त परिस्थिति से आप सुपरिचत ही हैं और इस सीमान्त राज्य में शांति एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिए आप पूर्ण प्रयास कर रही हैं। आपने जो कदम उठाये हैं उनकी सब लोग प्रशंसा करते हैं। फिर भी आप इस बात से सहमत होंगी कि पंजाब की शांतिप्रिय जनता में विश्वास की भावना पुनः जाग्रत करने के लिए और बहुत कुछ किया जाना है, विशेषकर मोने हिन्दुओं के लिए, क्योंकि उग्रवादियों की अबाधित एवं वर्धमान प्रवृत्तियों के कारण प्रशासन पर से उनका विश्वास उठ चुका है।

विश्व हिन्दू परिषद् को यह देखकर बड़ा दुःख होता है कि महान् ऋषियों एवं गुरुओं द्वारा सुरक्षित एवं संरक्षित एक ही जीवन दर्शन के अनुयायी एवं एक ही पूर्वजों की सन्तान हिन्दू एवं सिख—दोनों भाई आज एक-दूसरे को शत्रु समझ रहे हैं। यह तो एक ऐतिहासिक तथ्य है तथा कोई इस बात से इन्कार भी नहीं कर सकता कि खालसा पन्थ की स्थापना गुरु गोविन्दसिंह जी ने हिन्दू धर्म के लिए अपना बलिदान देने को उद्यत एवं निर्भीक हिन्दुओं से एक सैनिक अंग के रूप में की थी। यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ पथभ्रष्ट

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिख उग्रवादी और कतिपय अकाली नेता सिखों को एक पृथक् राष्ट्र मान कर पंजाब में अशान्ति पैदा कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि हिन्दू एवं सिख पंजाब में शान्तिपूर्वक रहें और उनमें परस्पर भूतकाल जैसा सौहार्द बना रहे।

हम आपके ध्यान में निम्नलिखित तथ्य भी लाना चाहते हैं ताकि आप पंजाब की परिस्थिति का सही अनुमान लगा सकें और उपाय अथवा निराकरण ढूंढ़ सकें, जिससे राज्य में कानून और व्यवस्था स्थापित हो सके और सभी पन्थों का विश्वास अर्जित हो सके—

१. उग्रवादियों एवं कुछ अकाली नेताओं का यह आरोप कि सिखों के प्रति भेदभाव बरता जा रहा है और वे देश में द्वितीय श्रेणी के नागरिक्र माने जाते हैं, वेबुनियाद है। अपने देश में जीवन के सभी क्षेत्रों में सिखों को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। पंजाब में तो वे शासक ही हैं और उन्हें सब सुविधाएं प्राप्त हैं। वास्तव में तो पंजाब में मोने हिन्दुओं के साथ भेदभाव बरता जा रहा है। वे भुक्तभोगी हैं। इस स्थिति में सुधार करने के लिए तत्काल कदम उठाने की आवश्यकता है।

२. धार्मिक मामलों में मोने हिन्दू और उनके पूजा के स्थान उग्रवादियों के मुख्य लक्ष्य हैं। नीचे कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं—

(क) सोढल मन्दिर का विवाद जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने उसे एक मन्दिर मानकर तय कर दिया है। फिर भी उग्रवादियों और निहंगों ने उस मन्दिर के एक भाग पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया और उसे गुरुद्वारा घोषित कर दिया। जबरन कब्जा करने वाले इन लोगों को हटाने में अधिकारी अभी तक असमर्थ रहे हैं।

(ख) कपूरथला जिले में सुल्तानपुर लोधी के मन्दिर के एक पुजारी को गोली मार दी गयी और अन्यों को गम्भीरता से घायल कर दिया गया। अपराधियों को अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया।
(ग) गुरुदासपुर जिले में हरचोवाल मन्दिर के उपाध्यक्ष मास्टर केवलकृष्ण पर गोली चलाई गयी और १९ मार्च को उन्हें उस समय चोटें आयीं जब वे मन्दिर में रामायण का पाठ कर रहे थे। अभी तक अपराधियों को नहीं पकड़ा गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(घ) उपरोक्त मन्दिर के अध्यक्ष मास्टर भारद्वाज को विद्यालय में पढ़ाते समय गोली मार दी गई। अभी तक अपराधियों को नहीं पकड़ा गया।

(च) जालंधर के वाल्मीकि मन्दिर में ३ मोने युवक पुलिस की गोली द्वारा २७ जून को मारे गये, जबकि वास्तविक अपराधी निहंग थे।

(छ) पठानकोट के समीप बातसाहिब गुरुद्वारे के ग्रन्थी ने वहां से २ किलोमीटर दूरी पर स्थित बोवा गांव के मन्दिर के पुजारी को धमकी दी कि वे मन्दिर में लगे हुए ध्वनिविस्तारक यंत्रों का प्रयोग बन्द कर दें, क्योंकि इससे गुरुद्वारे में ग्रन्थसाहब के पाठ में विघ्न पड़ता है।

३. लुधियाना में पंजाब के सुप्रसिद्ध नेता लाला जगत् नारायण को गोली मार दी गयी।

४. पंजाब के पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री ए. एस. अटवाल स्वर्ण मन्दिर से बाहर आते समय दिनदहाड़े उग्रवादियों द्वारा मार दिये गये। उनके हत्यारों को अभी तक नहीं पकड़ा गया। इससे जनता एवं प्रशासन दोनों में डर की भावना पैदा हो गयी है।

५. जालंधर के दैनिक "प्रताप" कार्यालय में एक पार्सल बम से दो निरपराध कर्मचारी मारे गये। अभी तक किसी को नहीं पकड़ा गया।

६. पंजाब में मुस्लिम जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। ऐसा अनुमान एवं भय है कि पड़ोसी पाकिस्तान के क्षेत्रों से इस राज्य में बड़ी संख्या में मुसलमान घुस-पैठ कर रहे हैं और ये लोग अपनी निकृष्ट प्रवृत्तियों द्वारा मोने हिन्दू और केशधारी हिन्दू (सिख) के बीच अविश्वास और घृणा के बीज बो रहे हैं। समाचारपत्रों में भी ऐसी खबरें छपी हैं कि पाकिस्तान से प्रशिक्षण लेने के बाद बड़ी संख्या में मुसलमानों ने मोने हिन्दुओं केशधारी हिन्दुओं, और निहंगों के छद्मवेश में पंजाब में प्रवेश किया है।

७. उत्तरप्रदेश और बिहार के बहुत-से मौलवी पंजाब का दौरा कर रहे हैं और वे वहां संकट को बढ़ाने के लिए जिम्मेदार हैं। इसका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परिणाम हुआ है दोनों समुदायों में संघर्ष का भड़कना जिससे इस सीमावर्ती राज्य में कानून और व्यवस्था भंग हो जाए। भारत विभाजन के पूर्व भी ऐसी प्रवृत्तियां पंजाब, सिंध और बंगाल में देखी गयी थीं।

८. जम्मू-कश्मीर के जिला ऊधमपुर में बाबा बन्दा डेरा में दिसम्बर १९८१ में एक प्रशिक्षण शिविर में ११० प्रशिक्षुओं को गुरिल्ला युद्ध तथा पिस्तौलों, राइफलों एवं तलवारों के साथ युद्ध करने का प्रशिक्षण दिया गया। इस शिविर में डाक्टर फारूक अब्दुल्ला ने भी भाग लिया। इसी प्रकार के शिविर पुंछ (जम्मू कश्मीर), हिमाचल प्रदेश के पौंटासाहब और पंजाब के आनन्दपुर साहब में भी लगाये गये। सरकार की ओर से इस प्रकार गैर-कानूनी प्रवृत्तियों को जिनसे देश का स्थायित्व खतरे में पड़ता हो, रोकने के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया।

९. केवल पंजाब ही नहीं अपितु हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में भुंतर और मणीकरन तथा अन्य पास-पड़ोस के स्थानों में अकालियों के कुछ उपद्रवी तत्त्व मोने हिन्दू और केशधारी हिन्दू (सिख) के बीच खाई पैदा कर रहे है।

१०. हिन्दुओं के सभी सम्प्रदाय यथा आर्यसमाजी-सनातनी-जैन-राधा-स्वामी-नामधारी-निरंकारी-वाल्मीकि-बाबा जीवनसिंह मजहबी दल और रविदासी महसूस कर रहे हैं कि उनके लोगों का जीवन और संपत्ति असुरक्षित है।

११. राज्य में व्यापार और उद्योग ठप्प हो गया है। बड़े व्यवसायी अपने भविष्य के प्रति आशंकित हैं।

हम सरकार से विनम्र अनुरोध करते हैं कि वह तत्काल निम्न-लिखित कदम उठाये जिससे इस राज्य में मोने हिन्दुओं की रक्षा हो सके और देश की एकता भी सुरक्षित रह सके—

(१) सरकार को बिना किसी संशय के उग्रवादियों एवं अन्य विघटनकारी तत्त्वों के, जो हिंसा एवं समाजविरोधी प्रवृत्तियों में संलग्न हैं, विरुद्ध तत्काल कठोर कदम उठाने चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(२) शासन की मशीनरी को राज्य में सबल बनाया जाय ताकि वह पुलिस एवं अन्य प्रशासनिक विभागों में मोने हिन्दुओं के डिगते हुए विश्वास को पुनः प्राप्त कर सके।

(३) हिन्दुओं के सभी सम्प्रदायों, पूजागृहों तथा उनके पुजारियों, महंतों एवं प्रबन्धकों की रक्षा के लिए प्रभावी कदम उठाये जायें।

(४) अपराधियों, कानून तोड़ने वालों एवं अन्य असामाजिक तत्त्वों को किसी भी धार्मिक स्थान में, वह किसी भी पंथ का हो, शरण न लेने दी जाए। भविष्य में होनेवाले किसी भी प्रतिकार के डर से बिना डरे इन लोगों को बाहर निकालने और प्रकाश में लाने के लिए प्रभावी कदम उठाये जायें। तभी और केवल तभी राज्य और कानून के लिए लोगों के मन में सम्मान बढ़ेगा।

(५) पंजाब राज्य के साथ लगने वाली अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को इस कारण से तत्काल बन्द कर दिया जाय ताकि कोई भी उपद्रवी वहां प्रवेश न कर सके। पाकिस्तान से आने वाले सभी लोगों का प्रवेश उचित परमिट के आधार पर ही होने दिया जाय।

(६) अन्य राज्यों से इस राज्य में आनेवाले मुल्ला-मौलवियों की प्रवृत्तियों को रोकने के लिये राज्य के अधिकारियों द्वारा कड़ी निगरानी रखने की जरूरत है ताकि वे वहां कोई उपद्रव पैदा न कर सकें।

हम आशा करते हैं कि उपरोक्त सभी तथ्य आपके ध्यान में आयेंगे।

आपका

महंत रामप्रकाशदास

अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्, पंजाब.

★

हिन्दू राज्य की स्थापना के लिए

अधिक से अधिक

धन दीजिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उपदेश

परोपकार का जीवन

—स्व० महात्मा नारायणस्वामी

संसार में मनुष्य सुखी और दुःखी क्यों हुआ करता है ? इसके दो कारण हैं। एक है—मनुष्य अपने कर्म के फल से सुखी भी होता है और दुःखी भी। अच्छे कर्म से सुख और बुरे कर्म से दुःख मिलता है। दूसरा कारण है—अन्य मनुष्य के कर्म। किसी आदमी ने धन एकत्र करके रक्खा है, चोर उसे चुरा ले जाता है, उससे जो उसके परिवार को दुःख हुआ, वह चोर के कर्म से। प्यासे को एक आदमी पानी पिलाता है, वह सुखी हो जाता है, यह सुख उसे कैसे मिला ? पानी पिलाने वाले के कर्म से। कर्म-विज्ञान के इस सिद्धान्त के आधार पर व्यक्ति और समाजशास्त्र बनाया गया है। मनुष्य का कर्म केवल अपने को ही अच्छा बनाना नहीं। उसका कर्त्तव्य यह भी है कि वह अपने समाज को भी अच्छा बनाए। यदि समाज अच्छा हो तो उसके कर्मों से भी उसे सुख प्राप्त होगा। आर्यसमाज के ९वें नियम में बतलाया गया है कि 'मनुष्य को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए बल्कि उसे सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए'। जब मनुष्य समाज को अच्छा बना देता है तो वह बहुत-सी बुराइयों से बच जाता है जिससे अन्यथा नहीं बच सकता था। तुम्हें आवश्यकता है—देश की रक्षा की। तुम उसे अकेले नहीं कर सकते। समाज को रक्षा करने वाला बना लो, तो उसकी रक्षा हो जायगी।

समाज के द्वारा मनुष्य बहुत-सी बुराइयों से बच जाया करते हैं। मतलब यह है कि कर्म को समझने के लिए मनुष्य को चाहिए कि वह पहले कर्म के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिद्धान्त को समझे। उसका केवल अपना व्यक्तित्व ही नहीं बल्कि उसका समाज भी अच्छा होना चाहिए। व्यक्ति और समाज कैसे अच्छे बनते है ? किसी व्यक्ति को अच्छा बनने के लिए उसकी त्रुटियों को दूर करना चाहिए और यह जनता की श्रेष्ठता पर अवलम्बित है। सन्ध्या में आप हर रोज प्रार्थना करते हैं—

"ईश्वर हमारी इच्छा पूर्ण करे और हमारे चारों ओर सुख की वर्षा हो"—मनुष्य का जीवनोद्देश्य यह है कि जब संसार से विदा हो तो हर्ष की मात्रा में वृद्धि करके जाए। यदि इस सिद्धान्त को समझ लिया जाये तो मनुष्य का मन, आत्मा और वाणी सभी सुधर सकते हैं।

समाज पर भी यही सिद्धान्त लागू हो सकता है। उसके अन्दर जो यदा-कदा त्रुटियां आ जाती है वे सब इसी सिद्धान्त द्वारा दूर हो सकती हैं। समुद्र-यात्रा पाप समझा जाता है। पहले कभी यह बात थी कि जो कोई समुद्र-यात्रा करके आता था उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। किन्तु आज यह कुप्रथा दूर हो चुकी है।

जापान में भी यह प्रथा थी कि कोई आदमी समुद्र पार जाए तो वापसी पर उसे न केवल बिरादरी से खारिज किया जाता अपितु उसे प्राण-दण्ड भुगतान पड़ता था। इसका फल यह हुआ कि चीन और अमेरिका के लोगों ने उन पर कई आक्रमण कर उन्हें विजित किया। तब जापानियों की आंखें खुलीं और उन्हें सूझा कि यदि यह प्रथा जारी रही तो ये चीनी और अमेरिकन जब चाहेंगे हमें गुलाम बना लेंगे। इस विचार के फलस्वरूप एक जापानी विचारक ने लोकमत लेकर इस प्रथा को दूर करा दिया। आज हालत यह है कि जापान संसार की बड़ी शक्तियों में गिना जाता है।

व्यक्तिगत और सामाजिक त्रुटियों को दूर करना चाहिए। सनातन धर्म किसे कहते हैं ? १९११ ई० की मनुष्य-गणना में उनकी संख्या ८-९ हजार बताई जाती है। मनुष्य-गणना के प्रमुख कर्मचारी ने लिखा कि सनातन धर्म का कोई अपना एक सिद्धान्त नहीं, जिसमें उसके मानने वाले सभी सहमत हों। हां, एक सिद्धान्त है जिसमें वे सभी सहमत हैं। वह है आर्यसमाज का विरोध करना।

ऐसे सनातनधर्मी आज भी सुधार की बात का विरोध करने के लिए तैयार है। एक आदमी ने कहा कि हिन्दुओं को गणित में केवल बाकी निकालना और भाग देना ही रह गया है, किन्तु योग और गुणन की बात

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भूल गई "अर्थात् घटाना तो सीख गए, किन्तु बढ़ाना याद नहीं रहा।" यह इसलिए कहा गया कि समाज आज बहुत पिछड़ी अवस्था में है।

व्यक्ति की तरह समाज को भी रोगों से रहित होना चाहिए। इससे वह अपने व्यक्तियों को भी जीवित कर सकता है। एक विद्वान् ने लिखा है— संसार में सबसे आवश्यक वस्तु किसी जाति के व्यक्ति हुआ करते हैं। यदि वे अच्छे हों तो सोने और चांदी के ढेरों को जमा कर लेंगे। यदि वे ही बुरे हुए तो जमा किया हुआ सोना-चांदी भी खो बैठेंगे। भारत में सोना इतना था कि उसकी खोज में योरुप के कई व्यक्ति घर से बाहर निकले और वे भारी परिमाण में उसे अपने साथ ले गए। क्यों? इसलिए कि हम उसकी रक्षा न कर सके। कैनेडा में योरुप वालों ने इतना पुरुषार्थ किया है कि वहां दुर्भिक्ष कभी पड़ ही नहीं सकता। यह क्यों? इसलिए कि वहां के आदमी अच्छे हैं। उन्होंने वहां सोना चांदी इतने परिमाण में इकट्ठे कर लिया है कि देखकर अकल हैरान होती है। मैंने आपके सामने एक सिद्धान्त रक्खा है। यदि मनुष्य चाहता है कि वह संसार में सुख का जीवन व्यतीत करे तो उसे चाहिए कि वह अपने व्यक्तित्व को अच्छा बना ले, और साथ ही अपने समाज को भी अच्छा बनाए।

जब मनुष्य अच्छा बनता है तो संसार के सुख के आंकड़ों में वृद्धि करता है। बस, आपको इस बात का खूब मनन करना चाहिए कि सुख उसी अवस्था में मिल सकता है जब व्यक्ति भी अच्छा हो और साथ ही समाज भी।

वैदिक धर्म आशा का धर्म है।

वैदिक धर्म की शिक्षा यह है कि सारे कर्म "जिनसे मनुष्य की आन्तरिक तथा बाह्य, व्यक्तिगत और सामाजिक स्वतन्त्रता में कमी आए या उसका सर्वथा नाश हो" पाप हैं। इसके विपरीत स्वतन्त्रता को लाने और इसको सुरक्षित रखने या बढ़ाने वाले कर्म पुण्य हैं। विचार कीजिए कि एक मनुष्य को देखने के विषय ने अपने अधीन बना रक्खा है, उसके नेत्र उसे जहां चाहें वहां लिए फिरते हैं। अभी सुना कि अमुक स्थान पर बहुत-सी देखने के योग्य चीजें इकट्ठी की गई हैं। आंखों ने कहा कि चलो उस स्थान पर। वह मनुष्य एक क्रीतदास की भान्ति विवश है। वह वहां जाता और सुनता है कि एक और स्थान पर वेश्याओं का गाना हो रहा है और अनेक रूपवती वेश्यायें वहां जमा हैं। यह सुनते ही आंखों में उनके देखने की कामना पैदा हो उठती है और वह उस महफिल में जाने के लिए विवश हो जाता है। इस प्रकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देखने का विषय मनुष्य की स्वतन्त्रता को छीन कर उस पर शासन करता है और वह कठपुतली की तरह इस विषय के इशारों पर नाचता है। देखने वाले उसकी इस दुरवस्था को देखकर उसे समझाते हैं और लज्जित करते हैं एवं उसे अपने आपको समझाने की शिक्षा देते परन्तु उस मनुष्य की विषय-वासनायें इतनी बढ़ गई हैं कि वह अपना सुधार करने में असमर्थ-सा हो जाता है।

न्यायकारी और दयालु प्रभु ने देखा कि उस आदमी ने अपनी ज्योति का जो उसे दी गई थी, दुरुपयोग किया और न केवल आंखों को ही बेकार बना लिया बल्कि उन के द्वारा अपने आपको भी पतित किया। तब वह अपनी दी गई ज्योति को छीन लेता है। अब वह पापी पुरुष पुनर्जजन्म की मर्यादानुसार ऐसी योनी में भेजा जाता है, जो नयन-ज्योति से वंचित होती है, जैसे अन्धे स्त्री-पुरुष। अब उसमें देखने की शक्ति नहीं रहती।

"कर्म करने से जिस प्रकार कर्म का अभ्यास होता है, उसी प्रकार न करने से न करने का।" अब इस पापी के मस्तिष्क में नेत्रेन्द्रिय तो है परन्तु निकम्मी मिलने से काम नहीं दे सकती। पहले उसके देखने की शक्ति में जो बुरी आदत पैदा हो गई थी, वह देखने का प्रलोभन और अभ्यास अब उसके बेकार रहने से छूटने लगता है। जब वह बुरा अभ्यास छूटकर देखने की शक्ति पहले की तरह साफ हो जाती है तब वह पापी निष्पाप होकर फिर आँखों वाला बन जाता (पैदा होता) है।

इसी प्रकार मनुष्य जब जब जिस-जिस इन्द्रिय से पाप करता है, उस-उस इन्द्रिय का उपयुक्त नियमानुसार पुनर्जन्म द्वारा सुधार हुआ करता है। जब कोई बुरा आदमी एक से अधिक इन्द्रियों को पापी बना लेता है तब उस की एक से अधिक इन्द्रिया छिन जाया करती हैं। जब कोई मूर्ख आदमी अपनी सारी इन्द्रियों को पापी बना लेता है। तब उसकी समग्र इन्द्रियाँ छिन जाती हैं और वह एक घटक जन्तुओं अथवा जङ्गम और स्थावर आदि जड़ योनियों में भेजा जाता है, जहाँ उसकी सारी इन्द्रियों का सुधार होकर फिर वह मनुष्ययोनि में आता है। जैसे कैदी कैद की अवधि को समाप्त करके जेलखाने से छूट कर अपनी खोई स्वतन्त्रता को प्राप्त कर लेता है, इसी प्रकार वह प्राणी उस मनुष्य-योनि में अच्छे कर्म करने के लिए स्वतन्त्रता प्राप्त करता है। यदि वह चाहे तो अच्छे कर्म करके मोक्ष प्राप्त कर सकता है। परन्तु यदि उसने फिर अपने आपको पतित किया, तो फिर उसका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उपर्युक्त नियम से सुधार होगा और वह सुधार-कार्य उस समय तक प्रचलित रहेगा जब तक वह जीवन के अन्तिम आदर्श (पूर्ण स्वतन्त्रता रूपी मोक्ष) की प्राप्ति नहीं कर लेता। इससे स्पष्ट हो गया कि किस प्रकार वैदिकधर्म में मनुष्य का सुधार हो जाया करता है। इसलिए इसे "आशा का धर्म" कहते हैं।

जिन मतो में किसी अन्य स्वर्ग और नरक की कल्पना की गई है और पुनर्जन्म नहीं माना जाता है, उनमें एक प्राणी ने यदि अपने केवल एक जन्म में बुरे कर्म कर लिए तो वह सर्वदा के लिए नरक में ठूंस दिया गया। अब उसके लिए सिवाय इसके कि वह अनन्त काल तक नरक के दुःख भोगे, और कोई उपाय बाकी नहीं रह जाता। इसलिए इस अनन्तकाल की यातना और निराशावाद से बचने के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक नर-नारी आशा से परिपूर्ण वैदिकधर्म को स्वीकार करे और पुनर्जन्म के सिद्धांत को इस आशा का मूल समझ कर अपनावे।

समाज में नवजीवन का संचार कैसे हो।

शिवरात्रि के दिन आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द को बोध हुआ था कि 'मन्दिरों का शिव असली शिव नहीं है, अतः असली शिव की खोज करनी चाहिए।' इसीलिए आर्यसमाज में यह पर्व 'बोधोत्सव' के नाम से मनाया जाता है। मथुरा में ऋषि दयानन्द-जन्मशताब्दी के महोत्सव के समय यही दिन ऋषि दयानन्द का जन्मदिवस भी ठहराया गया था, इसलिए इसको दयानन्द-जन्मोत्सव भी कहने लगे हैं।

ऋषि दयानन्द का जन्म दिवस

यह पर्व जन्म की दृष्टि से नहीं, किन्तु बोध की दृष्टि से ही जन्म-दिवस ठहराया गया है। इस बोध ही का फल था, जिससे स्वामी जी मूलजी दयाराम से दयानन्द बने। अभी कुछ दिन बीते जब एक जन्म-पत्री दिखाई गई थी, ओर उसे स्वामी जी की जन्म-पत्री होने का विश्वास दिलाया गया था। आज यह जन्म-पत्री मथुरा निवासी पं० मोहनलाल के पास है। इसके संबध में कहा गया था कि ४० वर्ष हुए जब यह कहीं बाबू नगीन दास भाटिया के किसी समाचार-पत्र में छपी थी। इस जन्म-कुंडली के अनुसार ऋषि दयानन्द का जन्म भादों सुदी नवमी को गुरुवार के दिन संवत् १८८१ वि० शाका १७४६ में हुआ था। परन्तु इस जन्म-कुण्डली के शुद्ध और ठीक होने का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोई प्रमाण नहीं है। मथुरा में तलाश करने से उपर्युक्त समाचार-पत्र की अभीष्ट कापी भी नहीं मिली, इसलिए सम्प्रति बोधोत्सव और जन्मोत्सव दोनों शताब्दी सभा के निश्चयानुसार शिवरात्रि ही को समझना ठीक होगा।

ऋषि दयानन्द का काम और आर्यसमाज

ऋषि दयानन्द ने बोध होने के बाद सफलता के साथ असली शिव की खोज की, उसे प्राप्त किया और यत्न किया कि अन्यों को भी उसकी प्राप्ति हो और दूसरे अन्तिम यत्न की पूर्ति के लिए आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज के स्थापित होने से अनेक स्त्री-पुरुष उसके सभासद् बने। उस समय के सभासदों की मनोवृत्ति यही थी कि प्रत्येक संभव साधन से वेद-प्रचार करके ऋषि के छोड़े काम को पूरा किया जावे।

आर्यसमाज का प्रचार-युग

उन्होंने बड़ी तत्परता से इसको पूरा करने का यत्न किया। परिणाम सन्तोषजनक हुआ। आर्यसमाजों की संख्या बढ़ी, आर्यों की जनसंख्या में असाधारण वृद्धि हुई। आर्यसमाज का प्रत्येक सभासद् अच्छे प्रचारक का कार्य करता था। इसलिए सभासदों की वृद्धि इसका अनिवार्य परिणाम हुआ। एक प्रचारक को जो सफलता के साथ प्रचार करना चाहता है, आवश्यक है कि जिन बातों पर वह अन्यों को चलाना चाहता है उन पर स्वयं भी चले। इसलिए वे सभासद् प्रायः कर्मनिष्ठ और सदाचारी हुआ करते थे, और उनके विचारों ही में नहीं, किन्तु आचार में भी आकर्षण था। जो उनके सम्पर्क में आता था उधर खिंचे बिना नहीं रह सकता था। आर्यसमाज की अधिक उन्नति के साथ आर्यसमाज की यश-वृद्धिहुई और शिक्षित समाज आर्य समाज की ओर आशा भरी दृष्टि से देखने लगा। इस यश-वृद्धि से आर्यसमाज की अधिक उन्नति में चार चांद लगे। आर्यसमाज का यहाँ तक का इतिहास उज्ज्वल इतिहास है, प्रेम का इतिहास है, चरित्र का इतिहास है, संगठन का इतिहास है, परस्पर प्रीति और सेवा का इतिहास है। अब आगे आर्यसमाज के कर्तव्य का रुख बदला और एक दूसरे युग का प्रारम्भ हुआ जिसे मैं प्रायः संस्था का युग कहा करता हूं।

संस्था-युग

ऋषि दयानन्द के स्मारक के रूप में कालिज खोलने की तजवीज हुई। विचार कार्य में परिवर्तित हुआ। कालिज खुले, स्कूल खुले, गुरुकुल और पाठशालायें खुलीं, अनाथालय बने, कन्या पाठशालायें बनीं, विधवा आश्रम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्थापित हुए। निदान संस्थाओं की भरमार हो गई। आर्यसमाज के अधीन कितनी संस्थाएं हैं, इसका आनुमानिक विवरण इस प्रकार है—

संस्थाओं की संख्या

७ कालिज, २०० हाई स्कूल, १५० अंग्रेजी मिडिल स्कूल, १२६ प्राइमरी स्कूल और १४१ रात्रि स्कूल हैं। २८ गुरुकुल, ३०० संस्कृत-पाठशालाएं, ३ कन्या गुरुकुल, १ कन्या-कालिज, २ कन्या हाई स्कूल, ७०० कन्या पाठशालाएं, ५० अनाथालय, ४० विधवाश्रम, १४ मुफ्त दवाखाने और ३० छापेखाने हैं, जिनसे ४० से ऊपर समाचारपत्र निकलते हैं। इनके अतिरिक्त और भी अनेक संस्थाएं हैं, विस्तार के भय से जिनका जिक्र छोड़ दिया गया है। इन संस्थाओं के बाहुल्य से आर्यसमाज से बाहर के लोगों को यह जान कर चकित होना पड़ा कि आर्यसमाजियों में कितनी प्रबन्धदक्षता और संगठननिपुणता है। इन संस्थाओं से आर्यसमाज की यश-वृद्धि भी हुई, उसकी धाक बंधी और बाहरी लोग उसका रौब मानने लगे। परन्तु इसके साथ ही उन संस्थाओं की वृद्धि का एक अन्धकारमय पहलू भी है।

वह इस प्रकार है—

संस्था-वृद्धि का अन्धकारमय पहलू

आर्यसमाज में प्रायः मध्यम श्रेणी के लोग थे और हैं। उनके पास इतना धन न था और न है जिससे वे इन संस्थाओं की बढ़ती हुई बाढ़ का मुकाबिला करते। फल यह हुआ कि धन की बढ़ती हुई माँग ने मजबूर किया कि आर्य-पुरुष धनियों के द्वार खटखटायें। उन्हें ऐसा करना पड़ा। धनी सार्वत्रिक नियमानुसार अधिकतर सच्चरित्र नहीं हुआ करते। धन के प्रलोभन से आर्यों की जबान बन्द हुई, होठों को ताला लगा। अब वे उनकी अनाचारता के विरुद्ध मुंह नहीं खोल सके। धन मिलने के प्रलोभन ही से उन्होंने ऐसे असदाचारी पुरुषों को अपना प्रधान बनाया। इस सब का फल यह हुआ कि आर्यों के भीतर सदाचार का प्रेम कम हुआ, कर्मनिष्ठा में ढीलापन आया और मनोवृत्ति बदली। इस परिवर्तन का अनिवार्य फल यह हुआ कि आर्यसमाज में निकम्मे और अनाचारी पुरुषों का प्रवेश हुआ, पदों का प्रेम बढ़ा और साथ ही झगड़े भी बढ़े। संस्थाओं के पदाधिकार की ममता ने लड़ाई कराई, आर्य मन्दिरों में ताले डलवाये और इसी प्रकार के अनेक दुष्कृत्य हुए। कचहरियों में मुकद्दमे भी दायर हुए। आर्यसमाज से सहानुभूति न रखने वाले पुरुषों को भी आर्यों ने अपनी-अपनी पार्टीबन्दी में शामिल करके अपना जत्था बढ़ाया और इस प्रकार आर्यसमाज जैसा पवित्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और श्रेष्ठ समाज धड़ेबन्दी का मैदान और युद्ध की भूमि बन गया। आज हम दुर्भाग्य से इसी युद्धक्षेत्र बने हुए समाज में श्वास ले रहे हैं।

(ऊपर संस्थाओं की जो संख्या दी गई है, वह ५० वर्ष पूर्व की है।)

अन्तिम प्रार्थना

बन्धु-वर्ग ! समाज की जो दशा इस समय हो रही है, उसी का ऊपर चित्र खींचा गया है। ऋषि दयानन्द को जिस पवित्र रात्रि में बोध हुआ था वह हमारे सम्मुख है। क्या यह अच्छा न होगा कि इसी पवित्र रात्रि में प्रत्येक नर-नारी एकान्त में बैठकर अपनी अवस्था पर विचार करें और अपने भीतर यदि उपर्युक्त त्रुटियों में से किसी को पावे तो निकाल कर बाहर फेंक दे और कमर कस कर तैयार हो जावे और यत्न करे—और बलपूर्वक यत्न करे कि आर्यसमाज के कर्तव्य का मुंह फिर प्रचार-युग की ओर फेर दे। जो संस्थायें अपने पांव पर खड़ी हो सकती हैं, अपने पांव पर खड़ी हो जायें, वे हमारे सिर माथे पर ! परन्तु जिन संस्थाओं के लिए सदैव भीख मांगनी पड़ती है उनको फेरफार कर इस योग्य बना दें कि उनके लिए भीख मांगना बन्द हो जावे और जो संस्थायें ऐसी हैं कि जिनका काम भीख मांगे विना चलना असंभव है, उन्हें कल की बजाय आज ही बन्द कर देना चाहिये और निश्चय कर लेना चाहिए कि भविष्य में कोई नई संस्था न खोली जावे और सारी शक्ति प्रचार में लगाई जावे और न केवल धन ही प्रचार में लगाया जावे किन्तु तन और मन भी, जिससे आत्म सुधार भी हो और आर्यसमाज सुपथ पर आकर इस योग्य हो जावे कि दीर्घायु प्राप्त कर।

सत्य बल बुद्धी

वेद में एक ऋचा आती है जिसका अर्थ है—हे ईश्वर ! हमें इस पापरूपी रस्सी ने जकड़ रक्खा है, उसे आप खोल दीजिए, जिससे हम आपके सृष्टि-नियम के प्रवाह को बढ़ा सकें। हमारी बुद्धि के तन्तुओं को मत बांटिए और समय से पहले हमारे कर्मों की मात्रा में कमी न आने दीजिए।

इस ऋचा में चार बातों का उल्लेख हुआ है। पहले ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि पापरूपी जिस रस्सी ने हमें जकड़ रखा है वह खुल जाए। दूसरी है हम सृष्टि के नियमों का प्रसार कर सकें। तीसरी, इसके परिणाम-स्वरूप यह है—बुद्धि के विस्तार में कमी न आने पाये और तीनों का परिणाम चौथी बात यह है कि समय से पहले हम पर मौत न आ जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रार्थना क्यों की जाए ?

इस ऋचा को पढ़ने पर सबसे पहला प्रश्न जो अपने और बेगानों के विषय में उठता है यह है कि जब तुम्हारा सिद्धान्त यह है कि मनुष्य जो कर्म करता है उसके अनुसार ही उसे फल मिलता है, उससे कम अथवा अधिक नहीं—तो प्रार्थना क्यों की जाए ?

ऐसा सन्देह जिनके हृदय में पैदा होता है वे इस बात को भूल जाते हैं कि प्रार्थना भी उनका एक प्रकार का कर्म है। इसके दो पहलू हैं—एक प्रार्थना है कर्मरूप में और दूसरी है उसकी फल-प्राप्ति के लिए। अब प्रश्न यह है कि कर्म का फल भी मिलता है ? और जिस वस्तु की प्राप्ति चाहते हैं क्या वह भी मिलती है ? वेद इन दोनों की प्राप्ति बताता है।

प्रार्थनारूपी कर्म का फल क्या मिलता है ? यह कि प्रार्थना करने वाले व्यक्ति के अन्दर नम्रता आती है। और जिस वस्तु की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की जाती है उसकी प्राप्ति के विषय में ऋग्वेद में लिखा है कि वह प्रभु उसे देने में कुछ भी संकोच नहीं करता है जिसके लिए तुम प्रार्थना करते हो। किन्तु वह देता कब है ? जब वह समीप से मांगने वाले की प्रार्थना सुनता है। अब प्रश्न होता है कि हम कैसे समीप से ईश्वर को अपनी वाणी सुना सकते हैं ? और ईश्वर की समीपता के क्या अर्थ हैं, जब ईश्वर सर्वव्यापक है ?

यद्यपि ईश्वर सर्वव्यापक है तथापि जब हम उसे पाना चाहते हैं तो कैसे पा सकते हैं ? इस विषय में उपनिषद् में लिखा है कि ब्रह्मज्ञानी शिक्षा देते हैं कि परमात्मा और आत्मा हृदय-मन्दिर में ही निवास करते हैं। इसलिए यदि तुम परमात्मा को कुछ सुनाना चाहते हो तो हृदय-मन्दिर में प्रवेश करो; कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं। वेद ने भी आज्ञा दी है कि योगी पुरुष परमात्मा को हृदय-मन्दिर में ही देखा करता है। यदि तुम उसे प्राप्त करना चाहते हो तो आत्मा के मन्दिर में प्रवेश करो। इसलिए वेद, उपनिषद् आदि सबसे यही शिक्षा मिलती है कि ईश्वर की प्राप्ति के लिए हृदय-मन्दिर में प्रवेश करना चाहिए।

इससे मालूम हुआ कि प्रभु को अपनी आर्त वाणी सुनाने का साधन जिह्वा नहीं, हृदय है। यदि हमारी प्रार्थना केवल जिह्वा से न हो बल्कि हृदय से हो तो हम उसे ईश्वर तक पहुँचा सकते हैं। जब वे सुन लेंगे तो उसे पूरा भी अवश्य कर देंगे। ऋग्वेद की आ । है कि तुम जो कुछ चाहो वह तुम्हें मिल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सकता है यदि तुम उसे परमात्मा के समीप होकर सुना दो।

प्रार्थना की विधि

अब देखना यह है कि हृदय की प्रार्थना कैसे हो सकती है?

जब हृदय की प्रार्थना होगी तो हृदय का उससे विरोध नहीं होगा। जब हृदय स्वयं प्रार्थना करेगा तो इच्छाशक्ति बलवान् हो उठेगी। जब किसी वस्तु को पाने की प्रबल इच्छा पैदा हो जाती है तो वह वस्तु सुगमता से मिल जाती है। मनुष्य का हृदय अच्छे विचार रखता हो तो वह प्रत्येक वस्तु अपने अनुकूल बना सकता है। यदि विचार निर्बल होंगे तो मनुष्य पुष्ट नहीं हो सकेगा। यदि वीरता के विचार होंगे तो मनुष्य भी वीर होगा। मूल वस्तु तो हृदय के विचार हैं। इसे योरुप के विद्वानों ने भी स्वीकार किया है और कहा है कि हमारा भविष्य विचारों की परम्परा से बनता है।

'Old days; its causes and cure' नामक पुस्तक में इस प्रश्न की मीमांसा की गई है कि मनुष्य वृद्ध क्यों होता है? इसमें बताया गया है कि मनुष्य का शरीर जिन परमाणुओं (Cells) से बना है वे टूटते और बदलते रहतेहैं—यहां तक कि वे दो वर्ष में ही बदल जाते हैं। इससे शरीर प्रति दो वर्ष के बाद नया हो जाता है, तो बुढ़ापा आ जाने का क्या तात्पर्य? इसका उत्तर यह दिया गया है कि मनुष्य बूढ़ा होता है, तो अपने विचारों से। बुढ़ापा स्वयं नही आता बल्कि हम उसे अपने आप ही बुलाते हैं। फिर वह कैसे न आए? यदि तुम बुढ़ापे के विचार भी मन में न आने दो तो सदा पुष्ट और हृष्ट रह सकते हो।

इसी तरह एक वैदिक ऋचा में कहा गया है कि हे प्रभो! हमारी पाप-रूपी रस्सी को काट दो। इससे अर्थ है कि हम पाप से रहित हो जावें। यह पाप की प्रवृत्ति कैसे हुई—पाप कैसे उत्पन्न हुआ? इसका उत्तर प्रत्येक देश की पौराणिक गाथाओं में भिन्न-भिन्न दिया गया है। किन्तु वेद ने पाप को बताया है—उल्टे रास्ते पर जाना, मिथ्या ज्ञान। परमात्मा से प्रार्थना की गई कि इस पाप की रस्सी को काट दीजिए, ताकि हम निष्पाप हो जावें, और उसी के पात्र बनें। हम पात्र कब बन सकते हैं, इसका उत्तर वेद देते है। पहले तुम प्राणपण से यत्न करके अपने आप को थका दो, इससे तुम प्रभु की दया के पात्र बनोगे। दया के पात्र बन जाने से तुम उससे जिस वस्तु की प्रार्थना करोगे वही तुम्हारे सामने आ जायेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसका एक उदाहरण है । माता अपने काम में लगी है, उसका छोटा बालक एक तरफ खेल रहा है उसे भूख लगती है, वह चल नहीं सकता किन्तु अपनी ओर से यत्न करने में कोई कसर नही छोड़ता, लुढ़कता-पड़ता माता के पास पहुंच जाता है। देखता है कि माता पास खड़ी है किन्तु उसके स्तनों तक पहुँचना उसकी शक्ति के बाहर है। तब वह क्या कर सकता है, आशा भरी दृष्टि से माता की ओर देखता है, माता का हृदय प्रेम से पुलकित हो उठता है, वह उसे उठाकर छाती से लगा लेती है और दूध पिला कर उसकी भूख मिटा देती है।

इसी तरह यदि हम पाप से बचना चाहें तो हमें इतना प्रयत्न करना चाहिये कि हम थक कर हार जावें। जब आगे चलना हमारी शक्ति के बाहर हो जायेगा तो दयामय प्रभू अपनी दया से वह वस्तु हमें स्वयं दे देंगे जिसकी तरफ हमारी आशा-भरी दृष्टि सदा लगी रहती थी।

हमारा जीवन निष्पाप हो

जब हम निष्पाप हो जायेंगे तो क्या होगा? हम सृष्टि के नियमों का विस्तार कर सकेंगे आजकल का नया आचार वेद का प्रचार नहीं कर सकता नियमों का विस्तार हम कब कर सकते हैं? जब पहले हम स्वयं उन्हें अपने जीवन में धारण करें अर्थात् पहले अपने आपको निष्पाप बनायें। निष्पाप होकर ही हम परम धर्म का, वेद का और सत्य का प्रचार कर सकते है।

सत्य के प्रचार का क्या अर्थ है? हम वेद के उन सुन्दर सिद्धान्तों का, जो तीन काल के लिए एक-से रहने वाले हैं, प्रचार करें।

सत्य का प्रचार करना हमारा परम कर्त्तव्य है, यह हमारे ऊपर ऋषि-ऋण है। निष्पाप जीवन बिताने से ही हम इस ऋण से उऋण हो सकते हैं।

अब जब हम निष्पाप हो जायेंगे तो हम उन साधनों का प्रचार कर सकेंगे जिनसे हम स्वयं पाप से छूटे हैं। इसके प्रचार से बुद्धि की कुटिलता दूर होगी। बुद्धि का अच्छा-बुरा होना विचारों पर अवलम्बित है। यदि हमारे विचार अच्छे होंगे तो बुद्धि भी पवित्र हो जायेगी। यदि विचार बुरे हुए तो बुद्धि कुटिल और कुण्ठित होगी। यह पाप-बुद्धि हमें पाप की ओर ले जायेगी। बुद्धि अच्छी होनी चाहिये। इसी से हम ईश्वर को पा सकते हैं।

जब हम निष्पाप हो जायेंगे और निष्पाप होने के साधनों को दूर-दूर तक फैलाएंगे तो इसका स्वाभाविक फल होगा कि हमारी बुद्धि निर्मल होनी शुरू होगी और यहां तक निर्मल हो जायेगी कि हमें पूर्ण मनुष्य बना देगी। इससे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारी आयु का ह्रास कभी नहीं हो सकेगा।

वेद में लिखा है कि ईश्वर सत्य में प्रतिष्ठित है। तुम सत्य की उपलब्धि करो, ईश्वर स्वयं प्राप्त हो जायेंगे। सत्य कहां है? सत्य बल में है। तुम बलवान् बनो, सत्य उपलब्धि हो जायेगा। बल की रक्षा कैसे होगी? बुद्धि से। बुद्धि से बल की और बल से सत्य की रक्षा कर सकते हो और सत्य से ईश्वर को प्राप्त कर सकते हो। क्योंकि सत्य, बल और बुद्धि के रहने से किसी भी मनुष्य के अन्दर नास्तिकता के भाव नहीं रह सकते। आस्तिकता के भाव स्वयं ही आ जाते हैं।

कहा जाता है कि योरुप में भी तो सत्य, बल और बुद्धि मौजूद हैं, फिर वहां नास्तिकता क्यों है? इसका उत्तर यह है कि वहां के तीनों भाव तो मौजूद हैं किन्तु इकट्ठे ही एक स्थान पर नहीं मिलते। वहां सत्य को उच्च स्थान प्राप्त नहीं। वह वहां दूसरे दर्जे पर रक्खा गया है। वहां पहला स्थान दिया गया है उपयोगिता को। सत्य का त्याग वहां प्रशंसा-योग्य समझा गया है। यहां तक कि एक विद्वान् लिखता है कि धर्म-प्रचार के नाते से यदि किसी पादरी को झूठ बोलना पड़े तो वह बोल सकता है। ऐसी अवस्था में जब सत्य को कुछ नीचा स्थान दिया गया तो वहां नास्तिकता के भाव होना कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं।

हमारी आयु में वृद्धि होगी

वेद ने शिक्षा दी है कि जिसने इन तीनों—सत्य, बल और बुद्धि की प्राप्ति की है वह जल्दी नहीं मर सकता, वह सौ वर्ष तक अवश्य जीवन प्राप्त करेगा। भारत में आयु का अनुपात केवल २२।। वर्ष है। (ये आंकड़े ५० वर्ष पुराने हैं) इसका कारण है कि उसने वेद की उक्त ऋचा पर कुछ अमल नहीं किया। यदि हम अमल करना आरम्भ कर दें तो हमारी आयु में वृद्धि होना आवश्यक है। यदि हम १—निष्पाप हो जायें, २—निष्पाप होकर अपने विचारों का मनुष्य-मात्र में प्रचार करें, ३—बुद्धि को पवित्र करें, तो अपनी आयु को बढ़ा कर अपने जीवन-उद्देश्य की पूर्ति करेंगे। हमारे जीवन का उद्देश्य है—श्रेय और प्रेय दोनों को प्राप्त करना—इस लोक और परलोक की उन्नति करना।

इसलिए आइये, आज हम अपनी त्रुटियों पर विचार करें। उन्हें दूर करें और देश और समाज की उन्नति के रास्ते में जो त्रुटियां हैं, उन पर विचार करें। ईसी से हमारी जाति की उन्नति और अपने उद्देश्य की पूर्ति होगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंजाब की समस्या

उग्रवाद को खुली छूट कब तक ?

—क्षितीश वेदालंकार

पिछले दिनों जब कपूरथला के निकट केवल हिन्दू होने के कारण ६ व्यक्तियों को बस से बाहर खींचकर नृशंसतापूर्वक बन्दूक की गोली का निशाना बनाया गया था, तब तुरन्त केन्द्रीय सरकार ने पंजाब में दरबारासिंह के नेतृत्व वाली राज्य सरकार को बर्खास्त करके राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया था और राज्यपाल के रूप में श्री भैरवदत्त पाण्डे को, जो अपनी प्रशासनिक दक्षता के लिए प्रसिद्ध हैं, नियुक्त किया गया था। इससे यह आशा बंधी थी कि शायद अब पंजाब में हिंसा का तांडव नृत्य रुक जायेगा। परन्तु पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू करने और सेना की ४० बटालियनें तैनात करने पर भी हिंसा का तांडव नहीं रुका। इसका प्रमाण हाल में हुई उसी प्रकार की घटना है। तरनतारन के पास बस का अपहरण किया गया और बस को जंगल में ले जाकर बस में सवार चार हिन्दुओं को उसी प्रकार नृशंसता से गोली मार दी गई। इस हिंसा काण्ड के विरोध में पंजाब, हिमाचल प्रदेश और हरयाणा में पूर्ण बन्द का आह्वान भी किया गया, परन्तु चिरकाल तक पहले के या बाद के हत्यारों में से किसी को भी न पकड़ा जाना जहां सरकार और पुलिस की असफलता को सिद्ध करता है, वहां यह भी सिद्ध करता है कि इस प्रकार हत्या करने वालों का गिरोह कहीं अधिक संगठित है। शायद पंजाब की पुलिस में भी उनके समर्थकों की कमी नहीं जिससे उनकी गतिविधियों के बारे में पुलिस को पहले कोई सूचना नहीं मिल पाती और पुलिस द्वारा उठाये जाने वाले कदमों की सूचना उन तक पहले ही पहुंच जाती है।

हत्यारों के इस गिरोह में कौन लोग शामिल हैं ? हो सकता है कि कुछ नक्सलवादी हों या कुछ पाकिस्तानी एजेन्ट हों, परन्तु उनके पास न हथियारों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का अभाव है, न तेज गति के साधनों का। इन हत्याओं की निन्दा अकाली आन्दोलन के संचालक श्री हरचन्द सिंह लौंगोवाल और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष श्री गुरुचरण सिंह टोहरा ने भी की है। परन्तु इन नेताओं की विश्वसनीयता समाप्त हो चुकी है, क्योंकि उनका दृष्टिकोण अत्यन्त साम्प्रदायिक और संकुचित है। अब सारा देश जान गया है कि उनकी सब बातें केवल जबान के अगले सिरे तक हैं। बार-बार वे यह तो कहते हैं कि हमारा आन्दोलन हिन्दुओं के विरुद्ध नहीं केवल सरकार के विरुद्ध है, परन्तु जब हत्या होती है तब हिन्दुओं की होती है। और तो और ये अकाली नेता यह कहने से भी बाज नहीं आते कि ये हत्याएं सरकार की शह पर हो रही हैं, इसलिए सरकार हत्यारों को पकड़ने का प्रयत्न नहीं करती! दूसरी ओर ऐसे हत्यारों को गुरुद्वारों में शरण दी जाती है और फिर गुरुद्वारों की पवित्रता की दुहाई दी जाती है।

धर्मस्थानों की पवित्रता

इतिहास साक्षी है कि महाराज पुष्यमित्र ने अपने राज्यकाल में जब यह देखा कि बौद्धों के विहार विदेशी जासूसों और राष्ट्रद्रोहियों के अड्डे बन गए हैं, तब सबसे पहले उन्होंने बौद्धों के इन तथाकथित धार्मिक स्थानों पर ही प्रहार करके राष्ट्र की रक्षा की थी। धार्मिक स्थान केवल तभी तक धार्मिक रहते हैं जब तक वहां धर्मात्माओं का निवास हो। अपराधियों, डाकुओं और हत्यारों के शरणस्थल बने धार्मिक स्थान कभी धार्मिक स्थान नहीं हो सकते।

अकाली नेतृत्व की विवशता

पिछले दिनों केन्द्रीय सरकार ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि सन्त भिंडरांवाले पर सात अभियोग हैं और सरकार उनके विरुद्ध अदालती कार्रवाई करने की बात सोच रही है, पर आश्चर्य की बात यह है कि सरकार ने गुरुद्वारों में छिपे जिन लोगों की सूची प्रकाशित की है उनमें सन्त भिंडरांवाले का नाम नहीं है। भिंडरांवाले किस प्रकार साम्प्रदायिकता और शासन के प्रति विद्रोह की भावनायें भड़काते हैं, यह जग जाहिर है। परन्तु श्री लौंगोवाल सरकार पर यह आरोप लगाते हैं कि वह भिंडरांवाले को झूठे केसों में फँसाना चाहती है। इतना ही नहीं, उन्होंने केन्द्रीय सरकार की तुलना मुगलों के शासन से की है और उसे सिक्खों की तौहीन करने वाला बताया है। एक समय था जब पंजाब के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री प्रकाशसिंह बादल के साथ मिलकर सन्त लौंगोवाल इन उग्रवादी अकालियों को अपने से अलग-थलग कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देना चाहते थे, परन्तु अब उन्हें लगता है कि कहीं मैं ही अलग-थलग न कर दिया जाऊं, इसलिए वे भिंडरांवाले का समर्थन करने लगे हैं।

ढिलाई खतरनाक होगी

केवल हिंसा में विश्वास करने वाले इन उग्रवादियों को छूट देने से क्या-क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं, यह गम्भीरता से सोचने की बात है। सबसे पहले तो इन उग्रवादियों को यह छूट स्वयं अकालियों के आन्दोलन के लिए जहर का काम करेगी। हिंसा का परिणाम हिंसा होता है। अगर यह हिंसा जवाबी तौर पर देश के अन्य भागों में भी फैल गई तो उसका परिणाम कितना भयंकर होगा—इसकी कल्पना ही की जा सकती है। उस जवाबी हिंसा की आंधी में भिंडरांवाले या लौंगोवाल भी कहां टिकेंगे? इसलिए सबसे अधिक हानि किसी की हो सकती है तो स्वयं अकाली आन्दोलन की—या साफ-साफ कहें तो सिक्खों की ही हो सकती है।

उग्रवादियों को छूट देने का दूसरा खतरा स्वयं सरकार के लिए है। ज्यों-ज्यों उग्रवादियों के नाखूनों में खून लगता जायेगा, त्यों-त्यों वे और अधिक हिंसक होते जायेंगे और देश में अराजकता फैलती जायेगी। तब लोकतन्त्र और लोकतन्त्र की वाहक सरकार का क्या बनेगा?

राजनैतिक दलों का चिंतन

उग्रवादियों को छूट देने से तीसरा खतरा स्वयं राजनैतिक दलों को है, फिर चाहे वे विपक्षी हों या स्वयं कांग्रेस (इं.) में हों। इस समय विपक्षी दल यह सोचकर गुपचुप अकालियों को प्रश्रय दे रहे हैं कि इससे इन्दिरा गांधी का ही सिर-दर्द बढ़ेगा, इसलिए सिरदर्द को बढ़ाने में जितना कुछ हमसे हो सके उसमें कसर नहीं छोड़नी चाहिये। इधर शायद इंका वाले भी यह सोच कर उग्रवादियों को प्रच्छन्न रूप से शह देते हैं कि इससे अकाली आन्दोलन में दरार पड़ जायेगी। परन्तु विपक्षी दल या अन्य राजनैतिक दल केवल अपने संकीर्ण दलीय हितों से आगे नहीं सोच पाते, यह देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। यह समाधान का विषय है कि अब संसद में प्रायः समूचे विपक्ष ने सरकार से उग्रवादियों से सख्ती से निपटने की मांग की है। उग्रवादियों के हौसले यहां तक बढ़ गए हैं कि उन्होंने लोकसभा के अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ का नाम भी अपनी "हिट लिस्ट" में जोड़ लिया है।

इस समय समस्त विपक्षी दलों, समस्त सम्प्रदायों, समस्त वर्गों और समस्त देशभक्तों का यह कर्त्तव्य है कि वे देश को अराजकता की ओर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाने से बचाने के लिए एकजुट होकर केन्द्रीय सरकार को आश्वस्त करें कि सन्त भिंडरांवाले तथा इन अकाली उग्रवादियों से निपटने के लिए प्रधानमन्त्री जो भी क़दम उठायेंगी, सारा देश उसका समर्थन करेगा । इस आश्वासन को पाने के बाद केन्द्रीय सरकार पूर्ण आत्मविश्वास के साथ सख्ती से पंजाब के इन उग्रवादियों का इलाज करे, तभी देश का भविष्य सुरक्षित रह सकता है। अगर सरकार अब यह काम नहीं करेगी, तो कब करेगी ?

जन-ज्ञान के प्रति

देख इसे लगता है जैसे
आज कृष्ण ने पांचजन्य को फिर फूंका है।
हिन्दू रूपी सोया अर्जुन,
यदि न जगा तो
फिर भारी कुरुक्षेत्र मचेगा,
और हमारा सब कुछ स्वाहा हो जायेगा।
सच कहते हैं,
लेकिन हिन्दू जाति जगेगी ॥
मुझको तो विश्वास यही है।
सच पूछो जन-ज्ञान आपका
शत गांडीवों ब्रह्मा स्त्रों-सा,
यौकि पाशुपत सा-सक्षम है ॥

—जागेश्वर प्रसाद "निर्मल"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आयुर्वैदिक चिकित्सा पद्धति की श्रेष्ठता

—वैद्यराज जगदीश प्रसाद शर्मा

आयुर्वेद भारत का प्राचीनतम चिकित्सा विज्ञान है। यह उतना ही पुराना है, जितने वेद। वस्तुतः यह भी एक वेद है और अथर्ववेद का उपवेद माना जाता है। वेद का अर्थ ज्ञान या विज्ञान है। आयुर्वेद का अर्थ हुआ आयु का विज्ञान इस प्रकार यह सिद्ध हुआ कि अन्य चिकित्सा पद्धतियों की तरह आयुर्वेद एक चिकित्सा पद्धति मात्र नहीं अपितु सम्पूर्ण जीवन का विज्ञान है।

आयुर्वेद त्रिदोष सिद्धान्त पर आधारित है। ये तीन दोष हैं वात, पित्त और कफ। वास्तव में ये दोष नहीं हैं, शरीर को धारण करने वाली धातुए हैं। जब ये धातुए दूषित होकर रोग पैदा करती हैं, तभी ये दोष कहलाती हैं। जब वात, पित्त और कफ समावस्था में होते हैं, तो शरीर स्वस्थ रहता है, परन्तु जब ये विकृत या विषम हो जाते हैं, तो शरीर अस्वस्थ हो जाता है। अस्वस्थ शरीर को पुनः स्वस्थ बनाने के लिए इन्हीं तीनों दोषो को समावस्था में लाना पड़ता है। यही आयुर्दे में चिकित्सा का मूल सिद्धान्त है। वात शरीर का वह मूल तत्त्व है, जो उसके समस्त अंगों का संचालन करता है, उन्हें गति देता है और उन पर नियन्त्रण रखता है। हमारे शरीर की समस्त प्रमुख क्रियायें-संकोचन, प्रसारण, उत्क्षेपण, अवक्षेपण, अन्तर्नयन, बहिर्नयन, श्वास, उच्छ्वास, गमन आदि वात द्वारा ही होती हैं। रक्तसंचार, मल-मूत्रादि विसर्जन, पाचन रसोंत्पादन, रसस्राव, हृदयस्पन्दन आदि की क्रियायें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी वात द्वारा ही होती है।

पित्त शरीर का अग्नितत्त्व है, जो शारीरिक ताप को नियन्त्रित करता है; यह भोजन को पचाकर शरीरोपयोगी तत्त्वों में परिवर्तित करता है तथा पाचन, सन्तुलन, रसायनीकरण और अवटुका ग्रन्थि, यकृत, अग्न्याशय आदि की क्रियाओं का निर्वाहक है।

कफ शरीर का जलीयअंश है। यह शरीर के द्रव पदार्थों की रक्षा करता है तथा उन्हें बढ़ाता है।

यद्यपि शरीर में संश्लेषणात्मक और विश्लेषणात्मक क्रियायें तथा घटकों कि निर्माण का काम पित्त और कफ करते हैं, परन्तु ये दोनों वात के नियन्त्रण में रहते है। वात की सहायता के बिना ये कोई कार्य नहीं कर सकते। जिस प्रकार प्रकृति में वायु बादलों को इधर-उधर ले जाकर वर्षा कराता है, उसी प्रकार शरीरस्थ वात, कफ और पित्त को शरीर के विभिन्न अंगों में पहुंचाकर उनसे कार्य कराता है। वात के विना पित्त अपना पाचन-कार्य तथा कफ धारण, पोषण और संवर्धन का कार्य नहीं कर सकता।

यदि पित्त पर वात का नियन्त्रण न रहे तो पित्ताधिक्य होकर उसकी विश्लेष्णात्मक क्रिया अवरुद्ध हो जागेगी। सौत्रिक तन्तुओं का निर्माण बन्द हो जायेगा—अवटुका ग्रन्थि की क्रिया बढ़ जायेगी। पाचक अग्नि मन्द हो जायेगी तथा विदग्धाजीर्ण, कामला, शोथज्वर आदि अनेक रोग पैदा हो जायेंगे, जिससे शरीर दुर्बल, क्षीण और अस्वस्थ हो जायेगा।

इसी प्रकार यदि कफ पर वात का नियन्त्रण न रहे तो कफाधिक्य होकर उनकी संश्लेष्णात्मक क्रिया अवरुद्ध हो जायेगी, उष्णता कम हो जायेगी तथा वसा एव आम का निर्माण अधिक होगा, जिसके परिणामस्वरूप अजीर्ण, मधुमेह, आमवात, जलोदर, सर्वांगशोथ आदि अनेक रोग उत्पन्न हो जायेंगे।

इससे यह सिद्ध होता है कि वात, पित्त और कफ एक दूसरे के पूरक हैं और तीनों मिलकर काम करने हैं। जब ये अपने शुद्ध रूप में संतुलित होकर कार्य करते है तो उस स्थिति को इनकी साम्यावस्था करते हैं। साम्यावस्था का नाम ही स्वास्थ्य है। परन्तु जब किसी कारण से इनका सन्तुलन बिगड़ जाता है और इनके समान्य कार्य में अवरोध पैदा हो जाता है तो उसे विषमावस्था या अस्वस्थता कहते हैं। इसकी यही स्थिति सब व्याधियों की जड़ है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वास्थ्य की परिभाषा

उत्तम स्वास्थ्य के लिए केवल तीनों दोषों की ही साम्यावस्था पर्या[illegible] नहीं है, अग्नि की साम्यावस्था भी आवश्यक है। अग्नि की साम्यावस्था [illegible] अर्थ यह यह है कि पाचक अग्नि न अधिक तीव्र हो, न मन्द, बल्कि स्वाभावि[illegible] अवस्था में पाचन क्रिया करती हो।

इसके अलावा रस, रक्तादि सात धातुओं और मल-मूत्रादि मलों [illegible] क्रिया स्वाभाविक रूप में में होनी आवश्यक है। उत्तम स्वास्थ्य के लिए य[illegible] आवश्यक है कि हम जो भी खायें-पियें उसका ठीक से परिपाक होकर शरी[illegible] के विविध अंगों का नव-निर्माण और पोषण ठीक प्रकार से होता रहे तथा म[illegible] मूत्र स्वेद आदि के विसर्जन की क्रिया भी ठीक प्रकार से चलती रहे।

स्वास्थ्य का सबसे अन्तिम लक्षण यह है कि शरीर की नीरोगता के साथ साथ मन, इन्द्रियां और आत्मा भी प्रसन्न रहें।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कि आयुर्वेद एक पूर्ण विज्ञान है और य[illegible] मनुष्य को स्वस्थ एवं सुखी रखते हुए उसके पूर्ण विकास का यत्न करता है यह उतना ही पुराना है जितना मानव; और मानव के जन्म से मृत्यु पर्यन्त यह उसका साथ देता है। वेदों में आयुर्वेद की बातें भरी पड़ी हैं। रामाय[illegible] और महाभारत काल में भी आयुर्वेद उन्नति के पथ पर अग्रसर था। उ[illegible] काल में आयुर्वेद के दो अंगों काय चिकित्सा और शल्य चिकित्सा की विशे[illegible] उन्नति हुई थी। युद्ध में जिन लोगों के अंग कट जाते थे, वे शल्य चिकित्सा द्वारा पुनः जोड़ दिये जाते थे तथा जो योद्धा मूर्च्छित हो जाते थे, उन्हें औष-धियों द्वारा पुनर्जीवित कर दिया जाता था।

आयुर्वेद के जो ग्रन्थ इस समय उपलब्ध हैं उनमें सबसे प्राचीन चरक संहिता और सुश्रुत संहिता हैं, चरक संहिता के रचयिता आचार्य चरक और सुश्रुत संहिता के आचार्य सुश्रुत हैं। चरक संहिता कायचिकित्सा का और सुश्रुतसंहिता शल्य चिकित्सा का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। वैज्ञानिक जगत् में ये दोनों ग्रन्थ उच्चकोटि के माने जाते हैं। चरक-सुश्रुत के बाद अनेक आचार्य हुए, जिन्होंने आयुर्वेदके आठों अंगों पर ग्रन्थरचना करके आयुर्वेद का भंडार भरा। विदेशी आक्रमणों के कारण आयुर्वेद के बहुत-से अमूल्य ग्रन्थ नष्ट हो गये और कुछ आततायियों द्वारा जला दिए गए। फिर भी भारत में आयुर्वेद का इतना साहित्य अवशिष्ट है कि देश उस पर गर्व कर सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विदेशों में आयुर्वेद

कुछ विदेशी आक्रमणकारी यहां से आयुर्वेदीय ग्रन्थों को अपने साथ ले गये और अपनी भाषा में उनका अनुवाद कराकर अपने देश में उनका प्रचार किया। ऐसे आक्रमणकारियों में यूनान का सम्राट सिकन्दर भी था, जिसने आयुर्वेद के अनेक ग्रन्थों का यूनानी भाषा में अनुवाद कराया। वस्तुतः यूनानी चिकित्सा पद्धति आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति का ही रूपान्तरणमात्र है। जो थोड़ा-बहुत अन्तर है वह देश-भेद के कारण है।

विदेशी आक्रमणों के अलावा देशी और विदेश पर्यटक भी आयुर्वेद के ग्रन्थों को अपने साथ ले गये और संसार के अनेक देशों में उनका प्रचार किया। चीन, जापान, दक्षिण-पूर्वी एशिया, बर्मा, नेपाल, मारीशस आदि देशों में आयुर्वेदिक औषधियों का काफी प्रयोग होता है। श्रीलंका में आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति बहुत ही लोकप्रिय है। पश्चिमी जर्मनी, आस्ट्रेलिया और अमेरिका में भी आयुर्वेद के प्रति रुचि बढ़ती जा रही है। पश्चिमी जर्मनी में जर्मन भाषा में आयुर्वेद का अनुवाद हो रहा है।

आयुर्वेद को मान्यता

जब भारत स्वतंत्र हुआ तो उसे विरासत में विदेशी चिकित्सा पद्धति "ऐलोपेथी" मिली। स्वतंत्र भारत के कर्णधारों ने इसी चिकित्सा पद्धति को आगे बढ़ाया और इसी की उन्नति के उपाय किये। परन्तु जब वैद्यों और आयुर्वेद के छात्रों ने आन्दोलन किया और आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति की श्रेष्ठता प्रमाणित की, तब सरकार ने बाध्य होकर आयुर्वेद को मान्यता प्रदान की।

भारत में जहां कुछ लोग विदेशी भाषा से चिपके हुए हैं, वहीं विदेशी चिकित्सा पद्धति से भी चिपके हुए हैं। इसका कारण यह है कि वे देशी चिकित्सा पद्धति के लाभों और विदेशी चिकित्सा पद्धति की हानियों को नहीं समझते। पहली बात तो यह है कि आयुर्वेदिक औषधियां सर्वत्र स्थानीय रूप से सुलभ होती हैं और उनके गुण-दोष से साधारण आदमी भी परिचित होता है। एलोपैथिक औषधियां दुर्लभ होती हैं। उनके गुण-दोष के विषय में किसी को कुछ पता नहीं होता। आयुर्वेदिक औषधियां बहुत सस्ती होती हैं और कुछ तो यों ही जंगल से उखाड़ी जा सकती हैं। सबसे प्रमुख बात यह है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि ये कोई अन्य विकार या प्रतिक्रिया पैदा नहीं करतीं, जबकि ऐलोपैथी की आधी से अधिक औषधियां कोई न कोई अन्य विकार, उपद्रव या प्रतिक्रिया पैदा कर देती हैं। आदर्श चिकित्सा उसे कहते हैं जिससे रोग तो शांत हो जाये पर कोई दूसरा रोग पैदा न हो। ऐसी चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद ही है क्योंकि इससे रोग नष्ट हो जाता है किन्तु दूसरा रोग पैदा नहीं होता। आयुर्वेदिक चिकित्सक रोगी की चिकित्सा करता है और उसे स्वस्थ बनाना उसका उद्देश्य होता है। ऐलोपैथिक रोग की चिकित्सा करता है और केवल रोग को ठीक करना उसका उद्देश्य होता है। रोगी स्वस्थ होता है या नहीं अथवा उसे कोई दूसरा रोग होता है या नहीं, इस बात से उसे कोई मतलब नहीं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आयुर्वेदिक चिकित्सा जीवन विज्ञान है और यह एक आदर्श चिकित्सा पद्धति है, जिसका उद्देश्य मनुष्य को स्वस्थ और सुखी बनाना है। आयुर्वेदिक औषधियां सुलभ, सस्ती और निर्दोष होती हैं। साधारण आदमी भी इनका प्रयोग कर सकता है।

एक मास में तीन दिन काम कर

१०००) मासिक कमाइए

हम आपको १०००) में जन-ज्ञान [मासिक] की एक हजार प्रतियां देंगे। यदि आप २) प्रति भी जनता को देंगे तो भी आप १०००) बचा सकेंगे। वैसे मूल्य ३) है।

१००० प्रतियां—१०००) में, ५०० प्रतियां—६२५) में, २५० प्रतियां—३५०) में इससे कम प्रतियां केवल १) ६० प्रति। सभी पर डाक व्यय हमारा।

हिन्दू राज्य की स्थापना के लिए आगे आइए। सहयोग दीजिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वीर सावरकर : कुछ व्यक्तिगत प्रसंग

—विश्वासराव सावरकर

इस वर्ष हिन्दू संगठक स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर शताब्दी समारोह देश-भर में मनाया जा रहा है। प्रखर हिन्दू राष्ट्रवाद के व्याख्याता और उद्गाता की जन्म तिथि ता० २८ मई (१८८३) है किन्तु २६ फरवरी (१९६६) भी इस महापुरुष के जीवन का अविस्मरणीय प्रसंग है। यही थी वह तिथि जिस दिन इस कालजयी पुरुष ने स्वेच्छया मृत्यु का वरण किया था। इस महामानव का तपःपूत जीवन दयानन्द संस्थान और हिन्दू रक्षा समिति के संस्थापक महात्मा वेदभिक्षुः की दृष्टि में प्रत्येक हिंदू राष्ट्रवादी के लिए प्रेरक और अनुकरणीय था। उसी महामानव सावरकर के जीवन के कुछ अन्तरंग प्रसंग प्रस्तुत हैं यहां स्वातन्त्र्य वीर सावरकर के चिरंजीव विश्वासराव सावरकर की लेखनी से। वर्तमान परिस्थितियों में भी ये प्रसंग हम सभी के लिए दिशादर्शक हैं।

—सम्पादक

मास्टर तारासिंह और वीर सावरकर

अकाली दल के भूतपूर्व अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति के भूतपूर्व अध्यक्ष एवं सिक्खों के अग्रगण्य नेता मास्टर तारासिंह कांग्रेस के कट्टर विरोधी थे। कांग्रेस के हिन्दू-मुस्लिम एकता सम्बन्धी विचारों से भी उनकी घोर असहमति थी। वीर सावरकर और उनकी पंजाब के दौरे और दिल्ली प्रवास के दौरान भेंट और चर्चा होती रहती थी। वीर सावरकर द्वारा दी गयी हिन्दू शब्द की व्याख्या से वे पूर्णतः सहमत थे। इस व्याख्या के अनुसार सिख हिन्दू ही हैं, यह बात उन्हें मान्य थी। हिन्दू राष्ट्र में समाधान सहित रहने के लिए सिख सन्नद्ध हैं, यह भी वे (मास्टर तारासिंह) उद्घोषित करते थे। इस समान ध्येय के कारण हिन्दू महासभा एवं अकाली दल (तत्-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कालीन) का ध्येय व चिंतन (प्रमुख रूप से हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न पर) समान ही था पंजाब के दौरे के समय एक बार अकाली दल की ओर से तात्या (वीर सावरकर) का प्रकट सत्कार भी किया गया था। अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर में वीर सावरकर का गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की ओर से अभिनन्दन भी किया गया था और चांदी की मूठ युक्त कृपाण भी वीर सावरकर को अर्पित की गयी थी। मानपत्र भी भेंट किया गया था। उस समय ऐसा कहा जाता था कि इससे पहले सिख नेताओं के अतिरिक्त अन्य किसी भी नेता का वहां सत्कार नहीं किया गया था। इस प्रकार वीर सावरकर पहले सिख-इतर नेता थे, जिनका स्वर्ण मन्दिर में सत्कार किया गया था। उस समय उन्हें गुरुग्रन्थ साहब भी भेंट किया गया था।

सन् १९५३-५४ में एक दिन ऐसा अवसर आया जब मास्टर तारासिंह तात्या से भेंट करने के लिए सावरकर सदन आये। चर्चा के दौरान गुरुमुखी में छपे कुछ ग्रन्थों का तात्या ने उल्लेख किया तो मास्टर तारासिंह ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए पूछा "आपको गुरुमुखी आती है क्या ?" इस पर तात्या ने उन्हें उत्तर दिया "आपने जितना अध्ययन किया हो, कम मैंने भी सिखों के इतिहास के सम्बन्ध में गुरुमुखी में लिखित ग्रन्थों का नहीं किया है। सिखों का इतिहास नामक ग्रन्थ भी मैंने लिखा था। तदुपरांत इंग्लैंड से यह हस्तलिखित ग्रन्थ गुप्त रूप से हिन्दुस्थान भिजवाया गया था। किन्तु जो व्यक्ति इस हस्तलिखित ग्रन्थ को लेकर जहाज द्वारा आ रहा था उसने भयभीत हो कर इसे समुद्र में फेंक दिया था। इसी कारण यह ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हो सका। यह एक सुविदित तथ्य है।"

मोरारजी देसाई और वीर सावरकर

श्री मोरारजी देसाई पहले बम्बई के गृहमन्त्री और उसके पश्चात् मुख्य मन्त्री बने। उस समय अनेक विरोधी दलों ने सामाजिक और राजनैतिक आंदोलन चलाये थे। संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन, गोवा मुक्ति आंदोलन, गिरणी संघ, अनेक विषयों को लेकर प्रदर्शन, मोर्चे आयोजित हुए। इन सभी आंदोलनों से निपटने में मोरारजी लगे रहे। प्रखर और कठोर उपायों का उन्होंने अवलम्बन किया। उनके निर्णय जन साधारण की दृष्टि में अन्यायपूर्ण थे। अतएव मोरारजी देसाई एक राज्यकर्ता के रूप में अप्रिय हो गए। स्वयं वीर सावरकर को भी १९५० में निवारक नजरबन्दी कानून के अन्तर्गत बन्दी बनाकर छह माह तक कारागार में डाला गया था। किन्तु उच्च

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न्यायालय ने उन्हें १९५० में ही रिहा कर दिया था। अपनी रिहाई के कुछ समय बाद एक दिन चर्चा के दौरान तात्या ने कहा था "देश में अथवा राज्य में यदि स्थिरता, शांति और सुव्यवस्था कायम रखनी है तो प्रशासक को अथवा मन्त्री को ठोस निर्णय लेकर तदनुसार कार्रवाई करनी ही होगी। राज्यकर्ताओं द्वारा बारम्बार निर्णयों में परिवर्तन करना हितकारी नहीं हो सकता। वे यदि अपने निश्चय पर अटल रहकर, निश्चयी वृत्ति से काम लें, तभी राज्य का संचालन सुव्यवस्थित हो सकता है। उन्होंने उस समय यह भी कहा था कि "मोरारजी देसाई भले ही मुझे और छह वर्ष कारागार में रखें फिर भी मैं यही कहूंगा कि शासनकर्ता अथवा राज्यकर्ता को निश्चयी वृत्ति का होना चाहिए। अपने निर्णय को दृढ़ता से क्रियान्वित करने की प्रवृत्ति उसमें होनी ही चाहिये। ऐसा होना ही उपयुक्त है।"

सेनापति बापट का अभिनन्दन

सन् १९५५ में गोआ मुक्ति आन्दोलन प्रखर हो उठा था। प्रत्यक्ष निःशस्त्र प्रतिकार हेतु स्वयंसेवक हजारों की संख्या में विभिन्न क्षेत्रों से गोआ जा रहे थे। उसका शुभारम्भ करते हुए सेनापति बापट के नेतृत्व में पहला जत्था पुर्तगाली सत्ता से जकड़े हुए गोआ में भेजे जाने का कार्यक्रम बनाया गया था।

एक दिन स्वातन्त्र्य वीर सावरकर से भेंट करने के लिए सेनापति बापट सावरकर सदन आये। उस अवसर पर तात्या ने सेनापति बापट से बातचीत के दौरान स्पष्ट शब्दों में कहा कि इस आंदोलन में आप सदृश मोर्चे के नेता के शत्रु की गोली का निशाना बनने की आशंका मौजूद है, यह खरा युद्ध तंत्र नहीं है, अपितु पुर्तगालियों के कब्जे वाले इस प्रदेश में सेना भेजी जानी ही सही युद्धतन्त्र है। इसके अलावा तात्या ने यह भी कहा कि निःशस्त्र प्रतिकार के लिए संयोजकों ने जो समय चुना है वह भी सही नहीं है, क्योंकि इस सत्याग्रह को गोआ में शुरू करने की बरसात की जो ऋतु चुनी गयी है, उसमें ऐसा करना अपने पक्ष के लिए ही हानिकारक साबित होगा। ऐसा अनुभव अनेक आंदोलनों में हुआ है। उन्होंने कहा कि युद्ध के लिए जब हिन्दू राजा प्रमाण किया करते थे तो प्राकृतिक आपदाओं को टालने के लिए वे दशहरे का मुहूर्त्त चुनते थे। अतएव यदि आपके इस गोआ सत्याग्रह का समय भी वर्षा ऋतु की समाप्ति के बाद निर्धारित किया जाता तो अधिक उचित होता।

तदुपरांत सेनापति बापट ने कहा कि गोआ सत्याग्रह संग्राम में सत्याग्रही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के रूप में जाने का उनका निश्चय पक्का हो चुका है। तात्या को इस पर परेशानी भी हुई। फिर भी पुर्तगाल सरीखे परकीयों के खिलाफ निःशस्त्र प्रतिकार का सत्याग्रह का मार्ग और संघर्ष स्वकीयों की दृष्टि से हानिकारक हो सकता है—यह तात्या का सुस्पष्ट मत था।

सेनापति बापट के संकल्प को देखते हुए तात्या ने कहा कि सेनापति बापट दृढ़निश्चयी हैं।

सेनापति बापट जब गोआ से मुक्त होकर वापस आए तो तात्या ने सेनापति बापट के दादर स्थित निवासस्थान पर जाकर उनका अभिनन्दन भी किया।

पवित्रता

दशम सिख गुरु गोविन्दसिंह आनन्दपुर साहब में विराजमान थे। उन्हें तृषा का अनुभव हुआ तो बोले—"कोई मुझे पवित्र हाथों से जल पिला दे"।

एक संभ्रांत व्यक्ति उठा और जल ले आया। जल पात्र लेते समय गुरुजी का स्पर्श उस व्यक्ति के हाथ से हो गया। वे पूछ बैठे—'तुम्हारे हाथ इतने कोमल क्यों हैं ?'

वह अपनी प्रशंसा सुन कर फूला न समाया,। बोलो गुरुजी, मेरे अनेक सेवक हैं। मैंने स्वयं कोई सेवा कार्य नहीं किया, इसलिए मेरे हाथ इतने कोमल हैं।'

गुरुजी ने अधरों तक लाये हुए जल पात्र को रख दिया और धीर स्वर में बोले—'जिन हाथों ने कभी सेवा नहीं की वे पवित्र कैसे हुए ? पवित्रता तो सेवा से ही प्राप्त होती है। मैं तुम्हारे हाथ का जल ग्रहण नहीं कर सकता।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द के विचारों की प्रासंगिकता

—डॉ भवानीलाल भारतीय

भारत के इतिहास में विगत शताब्दी में उत्पन्न और विकसित पुनर्जागरण के विभिन्न आन्दोलन अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण हैं। यह वह समय था, जब मध्यकालीन संकीर्णता एवं मूढ़तापूर्ण धाराओं की कैंचुल से मुक्त होकर भारतीय समाज विज्ञान एवं बुद्धिवाद की नवस्पूर्त्त प्रेरणाओं को ग्रहण करने में यत्नशील था। इसी युग में आर्यसमाज और ब्रह्मसमाज जैसे नवोदय की चेतना के वाहक आन्दोलनों ने जन्म लिया, जिन्होंने देशवासियों में धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय जागृति को उत्पन्न किया। इसी समय आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द ने एक सर्वतोमुखी कार्यक्रम प्रस्तुत कर शताब्दियों से व्याप्त वैचारिक जड़ता, सामाजिक शैथिल्य तथा धार्मिक रूढ़िवादिता को समाप्त करने के लिए जोरदार आवाज उठाई।

दयानन्द सरस्वती मूलतः एक धार्मिक पुरुष थे। उन्होंने भारतीय सामाजिक विधान में स्वीकृत आश्रम प्रणाली के अनुसार सन्यास आश्रम की दीक्षा अपनी युवावस्था में ही ले ली थी। प्रायः यह धारणा प्रचलित हो गई है कि सन्यासाश्रम में दीक्षित होने के पश्चात् व्यक्ति के लिए किसी प्रकार के सांसारिक अथवा लौकिक कर्तव्यों को पालन शेष नहीं रहता। परन्तु दयानन्द के विचारानुसार संन्यासी को स्वकल्याण के लिए प्रयत्नशील रहने के साथ-साथ समाज, राष्ट्र एवं मानवता के व्यापक हित के लिए सतत कर्तव्यनिष्ठ होना चाहिए। इसी लक्ष्य को अपने सामने रख कर उन्होंने मानव जीवन के सर्वतोमुखी कल्याण की अनेक योजनाएं बनाईं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी दयानन्द ने भारत के धार्मिक क्षेत्र में फैले पाखण्डों, आडम्बरों तथा अंधविश्वासों को अत्यन्त चिन्ता की दृष्टि से देखा था। उन्होंने अनुभव किया कि वास्तविक धर्म तो नैतिक नियमों के पालन तथा विश्व हित की दृष्टि को समक्ष रख कर किये जाने वाले कर्मों और अनुष्ठानों के समूह का नाम है न कि बाह्य आचारों एवं व्यर्थ के कर्मकाण्डों का अन्धानुकरण। भारत के मध्यकालीन जीवन में विभिन्न सम्प्रदायों, पूजा-उपासना की पद्धतियों आदि के प्रचलित हो जाने के कारण जो सामाजिक एकता छिन्न-भिन्न हो गई थी, उसे दूर करने के लिए प्राचीन वैदिक अध्यात्म, उपनिषद प्रतिपादित चिन्तन तथा अन्य आर्ष शास्त्रों में प्रस्तुत उदात्त विचारधारा के क्रियान्वयन पर जोर देकर दयानन्द ने यह सिद्ध कर दिया कि धर्म का वही स्वरूप हमारे लिए ग्राह्य और आचरणीय है, जो वेद-मन्त्रों की सार्वभौम शिक्षाओं से उद्भूत हुआ है।

इतिहास में दयानन्द सरस्वती एक महान् समाज सुधारक तथा सामाजिक समस्याओंके समाधानकर्त्ता के रूप में स्वीकार किये गये हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में व्याप्त बहुविध सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन हेतु स्वामी जी ने जो प्रयत्न किये थे, उनकी प्रासंगिकता आज भी ज्यों की त्यों है। यह तो ठीक है कि आज बालविवाह कम होते हैं, विधवाओं के पुनर्विवाह पर किसी प्रकार का बंधन नहीं है, नारी शिक्षातथा नारी जागरण की सभी दिशायें पूर्णतः उन्मुक्त हैं, अस्पृश्यता का कोढ़ भी पर्याप्त सीमा तक समाप्त किया जा चुका है, तथापि समाज के जीवन को विषाक्त तथा उत्पीड़न युक्त बनाने वाली कुप्रथाओं में न्यूनता नहीं आई है। दहेज का दानव आज हिन्दू समाज को निगल जाने के लिए तैयार है। फजूलखर्जी, फैशनपरस्ती, पश्चिम का अंधानुकरण, अंधविश्वासों में अभूतपूर्व वृद्धि, दलित एवं शोषित वर्ग पर नानाविध अत्याचार जैसी सामाजिक बुराइयों ने आज के समाज को अत्यन्त जर्जर तथा विषाक्त बना दिया है। यदि स्वामी दयानन्द की सामाजिक चेतना को पुनः जागृत नहीं किया गया तो यह निश्चित है कि भारत का हिन्दू समाज अधिकाधिक अधोगामी होता जायगा।

स्वामी दयानन्द के विचार आज के युग में सर्वाधिक सार्थकता रखते हैं, इसका सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि स्वामी जी ने मनुष्य की बौद्धिकता तथा उसके विवेक को जागृत करने की आवाज उठाई थी। वे चाहते थे कि विचारशील एवं प्रबुद्ध मानव के सभी कार्य पूर्ण विवेक तथा हिताहित ज्ञान पर आधारित होने चाहिए। कोई विचार या धारणा हमें अपने पूर्वजों से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राप्त हुई है, इसीलिए उसको ग्रहण कर लेना श्रेयस्कर होगा, दयानन्द इसे स्वीकार नहीं करते। प्राचीन होने से ही कोई बात साधु नहीं होती और न नवीन होने से ही वह त्याज्य अथवा हेय हो जाती है। यही कारण है कि स्वामी दयानन्द जहां प्राचीन शास्त्रों में प्रतिपादित जीवन मूल्यों को स्वीकार करने पर जोर देते थे, वे यह भी कहते थे कि पश्चिम के विज्ञान, तकनीक तथा भौतिक उन्नति को स्वीकार किये बिना हमारी प्रगति का मार्ग प्रशस्त नहीं होगा।

दयानन्द के विचार श्रेय और प्रेय, इहलोक एवं परलोक, विज्ञान एवं धर्म, कर्म तथा उपासना में समुचित सामंजस्य स्थापित करने पर जोर देते हैं। उन्होंने भारतवासियों में प्रखर राष्ट्रभाव को जागृत किया और यह स्पष्ट कर दिया कि विदेशी राज्य चाहे वह कल्याणकारी तथा प्रजाहित की भावना को लक्ष्य में रखकर संचालित किया जाता हो, स्वराज्य की तुलना में कदापि स्पृहणीय नहीं होता। सभी बिन्दुओं पर विचार करने के पश्चात् स्वामी दयानन्द के विचारों की युग संदर्भ में सार्थकता सुनिश्चित हो जाती है।

प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना ही चाहिए
पवित्र धर्मग्रन्थ : परमात्मा की वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

मंत्र-शब्दार्थ-भावार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित
लागत मूल्य लगभग ४४४ रु०
किन्तु प्रचार के लिए अपने सदस्यों को
पुस्तकालय संस्करण : २५१ रु०

उपहार संस्करण: ८०४ रु०
५० रु० अग्रिम भेजें। रेलवे स्टेशन लिखें।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५
दूरभाष : ५६२६३९-५६४७४१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

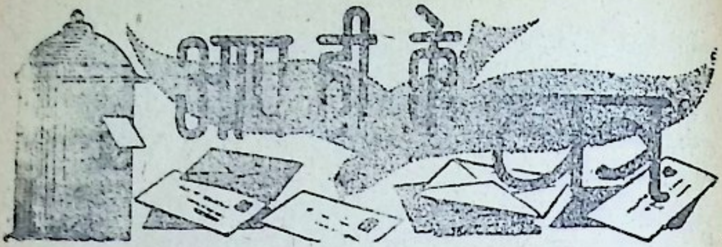

बहुसंख्यकों का शोषण कैसे बन्द हो ?

परमश्रद्धेय बहन राकेशरानी

पिछले कुछ मास से निरन्तर 'जन-ज्ञान' मासिक पढ रहा हूँ। विचारोत्तेजक तथा मानस को झकझोर देने वाले लेखों को पढ़ कर तीव्रतम भावनायें उद्वेलित होने लगती हैं। राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत होती है एवं जाति को जगाने की प्रेरणा मिलती है। अनेकों देशप्रेमी इस मासिक से प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं।

लगता है कि अपने देश की सरकार शिखण्डियों की सरकार है। बहुसंख्यकों के बढ़ते हुए धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक शोषण पर उसकी चुप्पी यह सिद्ध करती है कि सरकार अपने स्वार्थ (वोट) के कारण स्वयं भी उनके लिए उत्तरदायी है। आखिर बहुसंख्यकों के हित की चिन्ता सरकार को क्यों नहीं? मेरी दृष्टि में उत्तर एक और केवल एक है—बहुसंख्यकों का असंगठित होना। (साथ ही विडम्बना यह है कि यदि हम संगठित होने का प्रयास करते हैं तो साम्प्रदायिक कहे जाते हैं।)

बहुसंख्यकों को वैदिक आधार पर एक ईश्वर, एक धर्म और एक उपासना पद्धति के आधार पर छुआछूत रहित समाज की रचना करके संगठित और सशक्त बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। हमारे सभी धर्माचार्य एवं हिन्दू संगठनों के नेता एक मंच से एक स्वर से एक ईश्वरवाद और वैदिक धर्म का प्रचार करें। छुआछूत मिटाने का प्रयास युद्ध स्तर पर करें। तभी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक संगठित शक्ति द्वारा सरकार को बहुसंख्यकों की रक्षा के लिए बाध्य किया जा सकेगा—संघे शक्तिः कलौ युगे।

उतरौला (गोंडा)

धर्मपाल आर्य

मैं प्रभावित हूँ

महोदय,

हिन्दू जाति की सेवा के प्रण के लिए हार्दिक धन्यवाद। आपके मासिक पत्र ने बहुत मुझे प्रभावित किया है। आप एक महान् विभूति हैं। प्रभु आपको सफलता दे।

हैदराबाद

शिवचरण शुक्ल

आप पर मुकद्दमे चलाना भयंकर भूल है

महोदय,

आपने राष्ट्रभावना और संविधान के प्रति निष्ठा जाग्रत करने तथा अज्ञान दूर भगाने के लिए साहसपूर्ण कदम उठाया है। आप पर मुकद्दमे चलाना भयंकर भूल है। सच पूछो तो हठधर्मिता एवं मूर्खता है। अज्ञानता युक्तअवैज्ञानिक एव मूढ़ कथनों पर उठाए गए प्रश्नों के उत्तर लेखनी द्वारा ही देने चाहिएं ताकि धर्मोपदेशक अथवा धर्मगुरु या तो वैज्ञानिक उत्तर देकर सन्तुष्ट करें या असत्य व बुद्धि अग्राह्य बातों को छोड़ने को प्रेरित करें, जिससे मानव पशुता छोड़कर मनुष्य बन सके और सुख-शान्ति से राष्ट्रोन्नति व मानव सेवा कर सके, निरर्थक संहार से बच सके और संसार का उपकार कर सके। यही धर्म का उद्देश्य है और इस उद्देश्य को पूरा करने की नीति को सामाजिक व्यवस्था कहते हैं। आर्यों का आध्यात्मिक विज्ञान-युक्त साम्यवाद ही श्रेष्ठ व्यवस्था है। वह आदिकाल का समाजिक संगठन एवं व्यवस्था है जिसमें ऊंच-नीच की भावना नहीं। श्रेष्ठ कर्मव्यवस्था स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानवः"—ईमानदारी से अपना श्रेष्ठ कर्म (अपने चुने पेशे को करने) से ही मानव का अभ्युदय होता है।

धन्य है आप पंडिता राकेशरानी! धन्य हैं वे महात्मा, जिन्होंने अज्ञान के मिटाने के लिए ऐसे कठिन अन्धकार में लेखनी उठाई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो लोग ऐसे समय में प्रकाश से चिढ़ते हैं, मैं समझता हूँ कि वे अन्धकारी असुर्य्या ाम के लोग (जीव) हैं। वे स्वयं तो डूबेंगे ही, अन्यों को भी ले डूबेंगे।

भवदीय

भवाना — कान्तिस्वरूप दुबलिश

आप यह सब किसके लिए कर रही हैं ?

राकेशरानी,

किसे पुकार रही हो ? किसके लिए प्रेस की जरूरत आ पड़ी है ? आज न हिन्दुस्तान रहा है और न हिन्दू। हिन्दुओं का तो नामोनिशान ही मिट चुका है। फिर हिन्दू-हिन्दू चिल्लाना अपनी शक्ति नष्ट करना है। बहन, जो मर चुके हैं वे लौट कर न तो कभी आये हैं और न कभी आयेंगे। फिर उनकी इन्तजार में व्यर्थ समय नष्ट करना पागलपन न ीं तो और क्या है ? यदि आज हिन्दू जीवित होते तो क्या अपनी ही मां के टुकड़े होते देख सकते ? अपने ही घरों में गायों को कत्ल होते देख यों ही आंखें मूंद लेते ? यदि आज हिन्दू जीवित होता तो घी में गाय की चर्बी मिलाने वाले कारखानों को जलाकर उनका नामोनिशान न मिटा देता ? साफ जाहिर है कि आज न हिन्दू है और न हिन्दुस्थान है। फिर किसके लिए जन-ज्ञान छाप रही हो ? किसे वीर रस का पान करवा रही हो ? क्या मुर्दे भी कभी जीवित हुए हैं ? क्या जन-ज्ञान से मुर्दों में भी चेतना आ सकती है ?

बहन, अब हिन्दुओं में वह शक्ति नहीं रही जिसकी तुम्हें तलाश है। वह अब मृत्यु शैया पर पड़ा हुआ आखिरी सांसें ले रहा है। उसमें अब चेतना नहीं है। अच्छे बुरे का अब उसे कोई ज्ञान नहीं रहा।

बहन, आज हिन्दुओं की करुण दशा देख कर उस पर आंसुओं की दो बूंदें टपकाने वाला भी कोई नहीं। और तो और, सरकार भी धार्मिक भावनाओं पर लगातार प्रहार कर रही हैं। ऐसे समय में शुक्र है भगवान् का जो तुम्हारे हृदय में हिन्दुओं के लिए ममता जागी है। लेकिन बहन, अब समय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बहुत आगे निकल चुका है, जिसे पकड़ना अब हमारे व तुम्हारे बस की बात नहीं।

आज कलम व प्रेस की जरूरत नहीं; आज जरूरत है शिवाजी की तलवार की। आज जरूरत है प्रताप के भाले की, आज जरूरत है गाण्डीव धनुष की! यदि ये शक्तियां तुम्हारे पास हैं तो विजय तुम्हारी ही होगी। आज सरस्वती देवी बनकर नहीं, महाकाली का रूप धारण कर ही युद्ध में विजय प्राप्त की जा सकती है। आज रुपयों की जरूरत नहीं, खून की जरूरत है।

बम्बई रामगोपाल अग्रवाल

हम आपके साथ हैं।

मांजी,

"जन-ज्ञान का महान् हिन्दू विशेषांक प्राप्त हुआ। जब से आज तक हम जन-ज्ञान पत्रिका पढ़ते आ रहे है। जन-ज्ञान पत्रिका ने मेरी क्रान्तिकारी भावना एवं कार्य में अग्नि में घी का कार्य किया है। जब हमने सन १९८२ की पत्रिका पढ़ी तो १८ अभियोग थे, जो अब बढ़कर २५ हो गये हैं। मैंने भारत सरकार को पत्र भेजकर अभियोग हटा लेने की अपील की तथा समाचार पत्रों के माध्यम से मांग की।"

'जन-ज्ञान' पत्रिका पढ़ने के पश्चात जो कुछ भी प्राप्त हुआ वह आज तक किसी पत्रिका से नहीं प्राप्त हुआ। प्रत्येक अंक हिन्दू समाज के लिए दिशाबोध का कार्य करता है।

'जन-ज्ञान' पत्रिका के प्रचार-प्रसार के लिए मैंने एक समिति का निर्माण किया हैं। इसके लिए हमारा एक कार्यकर्ता आजीवन ब्रह्मचारी रहकर कार्य करेगा। 'जन-ज्ञान' पत्रिका के पावन अमृत रूपी संदेश को हम घर-घर पहुंचायेंगे। इसका मैंने संकल्प किया है। हमारे कार्यकर्ता आपको आर्थिक सहयोग अपने सामर्थ्य के अनुसार भेज रहे हैं।

मां जी, आप कभी न समझें कि आप अकेली हैं। अखण्ड भारत के समर्थक समस्त हिन्दू राष्ट्र भक्त तन-मन-धन से आपके साथ हैं और रहेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप पत्रिका के माध्यम से हिन्दुओं को सदा ज्ञान का अमृत पिलाती रहेंगीं।

आपका

ओम्प्रकाश गुप्त 'निर्भीक'

(मगहर (बस्ती)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत-भूमि : गण और गणतंत्रों की आद्य स्त्रोतस्विनी

—रतनलाल जोशी

प्रायः लोकतन्त्र को भारत-भूमि के लिए नवीन बीजारोपण माना जाता है। किन्तु वस्तुस्थिति इसके पूर्णतः विपरीत है। भारत में प्रजातंत्रों के रूप काफी विकसित और व्यापक थे। १००० ई० पूर्व से लेकर ५०० ई० तक भारत में जनता द्वारा संचालित प्रजातंत्रों की अखंड श्रृंखला मिलती है। ईसा से एक हजार वर्ष पूर्व लिखे गये "ऐतरेय ब्राह्मण" में भी प्रजातंत्रों की प्राचीन परम्परा के स्पष्ट उल्लेख पाये जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भारत में प्रजातंत्रीय शासन प्रणाली १००० ई० पूर्व से भी काफी अधिक प्राचीन है। ऐतरेय के अनुसार उस समय इन राज्यों को "वैराज्य" कहा जाता था। बाद में वे ही पाणिनि के द्वारा संघ एवं गण भी कहलाये। पाणिनि के सूत्रों की तरह तत्कालीन बौद्ध-ग्रन्थों में भी संघ राज्यों के प्रसग मिलते हैं। भौगोलिक दृष्टि से उत्तर-पश्चिमीय तथा उत्तर-पूर्वीय भारत में प्रजातन्त्र बिखरे हुए पाये जाते हैं। ५०० ई० पू० से लेकर ८०० ई० तक पंजाब एवं सिंधु की उपत्यका में ऐसे अनेक इतिहास-प्रसिद्ध प्रजातंत्रों का क्रम मिलता है। पूर्वांचल एवं दक्षिण में भी प्रजातंत्रीय शासन प्रणाली लगभग १००० वर्ष तक व्यापक रूप से लोकप्रिय बनी रही।

कुरु और भद्र के प्रजातंत्र बड़े विकासोन्मुख एवं समृद्ध थे। इन दोनों राज्यों के विषय में बड़े प्रशंसात्मक विवरण प्राचीन वाङ्मय में बिखरे पड़े हैं। उत्तर कुरु के आदर्श प्रजातंत्र का वर्णन तो परवर्ती साहित्य की अपनी निजी विशेषता रही है। पाणिनि ने भद्र, वृजि, वृष्णि, यौधेय, पार्श्व, बक, अंधक, महाराज त्रिगर्त्त एवं अंग प्रजातंत्र का विवरण दिया है। यौधेय प्रजातंत्र की भौगोलिक सीमाएं तो सर्वाधिक विस्तृत थीं। पूर्व में वर्तमान सहारनपुर से लेकर पश्चिम में बहावलपुर तक और उत्तर-पूर्व में दिल्ली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से लेकर उत्तर-पश्चिम में लुधियाना तक मत्स्याकार में यह प्रजातंत्र फैला हुआ था। पाणिनि ने यौधेयगण को "आयुधजीवी" गणों में परिगणित किया है।

आयुध जीविसंघ ज्यंकाहीकेष्व ब्राह्मण राजन्यात्।

[अष्टाध्यायी, अध्याय—५, खंड—३, सूत्र—१४४, ११७]

सिकन्दर की अजेय सेना ने यौधेय गणों के विषय में बड़ी प्रशंसाएं सुनी थीं। अतः इसी प्रजातंत्र की सीमा के पास रुककर ही सिकन्दर वापस लौट गया था। यौधेय गण का प्रसंग महाभारत में भी मिलता है। सभापर्व में शिवि, कैकेय और त्रिगर्त्त के साथ यौधेय का उल्लेख किया गया है। यह एक अत्यन्त स्वातंत्र्यप्रिय गण था और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए ही इसे कृष्ण शासन के आरम्भ में राजस्थान से मरु प्रदेश में भागना पड़ा था। चौथी सदी में गुप्त सम्राट् समुद्रगुप्त ने इन्हें परास्त किया था। इसके पश्चात् इस वीर जाति का इतिहास एकदम लुप्त हो जाता है। शायद इसे सदैव के लिए गुप्त साम्राज्य में मिला लिया गया।

यौधेय प्रजातंत्र की भांति शिवियों का प्रजातंत्र भी काफी प्रसिद्ध था। यह जाति आर्यों की एक महत्त्वपूर्ण शाखा थी। महाभारत में अनेक स्थानों पर शिविगणों के प्रसंग मिलते है। "उम्मदति जानक" और "वेस्सान्तर जातक" में शिवियों के राज्य-विस्तार एवं उनके प्रमुख नगरों के उल्लेख पाये जाते हैं। "महावस्तु" में तो यह स्पष्ट उल्लेख है कि बुद्ध से पूर्व जो सोलह जनपद उत्तर भारत में थे उनमें शिविगण जनपद भी शामिल था। चन्द्रगुप्त मौर्य ने उन्हें पराजित करके अपने साम्राज्य में मिला लिया था। लेकिन मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद शुंगकालीन भारत में शिवियों ने फिर अपना प्रजातंत्र कायम कर लिया था।

इन प्रजातंत्रों के अलावा बौद्ध ग्रन्थों में कपिलवस्तु के शाक्यों, वैशाली के लिच्छवियों, मिथिला के विदेहों, पिप्पलीवन के मौर्यों, कुशीनगर और पावा के मल्लों, रामग्राम के कोलियों और अल्लकप्प के बलियों का भी विवरण मिलता है। लिच्छवियों के शासन की प्रगतिशीलता तो इतिहास-प्रसिद्ध है। उनके शासन को बृहत् रूप से "संघ शासन" कह सकते हैं इसमें "कार्पोरेशन" जैसी एक संस्था द्वारा सारा शासन चलाया जाता था। राज्य शासन में आवश्यक परिवर्तन करने के लिए लिच्छवियों के राजसंघों के अधिवेशन कई बार होते थे। संघबद्ध ऐक्य और सहयोग की दृष्टि से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैशाली के लिच्छवियों का आचरण अन्य प्रजातंत्रों के सामने एक अनुकरणीय उदाहरण था। यही कारण है कि तत्कालीन प्रजातंत्रों में लिच्छवी प्रजातंत्र अजेय समझा जाता है।

सिकन्दर को चुनौती दी थी

कौटल्य ने अपने अर्थशास्त्र में अपने समकालीन कुछ और प्रजातंत्रों के नामों का उल्लेख किया है। भद्र, कुरु, मल्ल, वृजि, काम्बोज, सुराष्ट्र, कुकुर और लिच्छवीगणों के विषय में कौटल्य ने काफी महत्त्वपूर्ण सामग्री दी है। सिकन्दर के भारत-आक्रमण के समय भारत में ऐसे अनेक प्रजातंत्र थे जिनके शासन-कौशल और शौर्य-पराक्रम का बड़ा ही चित्तकर्षक वर्णन यूनानी ग्रंथकारों ने किया है। सिकन्दर को अपनी ऐतिहासिक विजय-यात्रा में अधिकांशतः इन्हीं प्रजातंत्रों से लड़ना पड़ा था। वैदेशिक नीतियों और सैनिक सहयोग के लिए इन प्रजातंत्रों में परस्पर संधियाँ होती थीं और विशेष आवश्यकता के समय कई गणतंत्र मिलकर एक सहकारी संघ भी बनाते थे। क्षुद्रक, मालव और शिविगणों ने सिकन्दर से युद्ध करने के लिए एक अत्यन्त शक्तिशाली संघ बनाया था। यूनानी इतिहासकारों के विवरणानुसार एक लाख सैनिक लेकर इस संघ ने सिकन्दर पर आक्रमण किया था। कोट कमालिया का यह युद्ध यूनानी इतिहास में प्रसिद्ध है। इस संग्राम में सिकन्दर स्वयं ऐसा घायल हो गया था कि मरते-मरते बचा। क्षुद्रकों और मालवों का संघ काफी समय तक अक्षुण्ण बना रहा। पतंजलि के समय तक इस संघ के अस्तित्व का पता चलता है। दूसरी शताब्दी में भी सामरिक एवं वैदेशिक सम्बन्धों को एकरूपता देने के लिए कांगड़ा की उपत्यका के कुणिकों, आगरा-जयपुर के आर्जुनायनों तथा पंजाब के यौधेयों ने मिलकर एक शक्तिशाली संघ की स्थापना की थी। २०० ई० पूर्व से ४०० ई० पूर्व तक आर्जुनायनों के प्रजातंत्रों का उल्लेख प्राप्त होता है।

स्वातन्त्र्य-प्रेमी मालव गण

"महाभारत" (सभापर्व, अध्याय ३२, श्लोक ७) में ऐसा विवरण है कि अपनी दिग्विजय यात्रा में नकुल ने त्रिगर्त, अम्बष्ठ एवं मालवगणों पर विजय प्राप्त की थी। यूनानी ग्रन्थों में भी मालवों की वीरता और शासन दक्षता का बड़ा हृदयग्राही परिचय मिलता है। मालव बड़े स्वातन्त्र्यप्रिय थे और प्राण देकर भी उसकी रक्षा किया करते थे। सिकन्दर के आक्रमण के समय मालव-प्रजातंत्र पंजाब में चिनाव के तटीय प्रदेशों में अवस्थित था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
किन्तु प्राप्त ऐतिहासिक सामग्री से पता चलता है कि वे ईसा से सौ-डेढ़ सौ वर्ष पूर्व राजस्थान में जयपुर के आसपास बस गए थे। शकों को मार भगाने के कारण भारतीय इतिहास में इन्हें बड़ा सम्माननीय स्थान प्राप्त है। विक्रम संवत् इसी विजय का स्मारक है। मध्य भारत के मालव प्रदेश में अभी तक मालव प्रजातन्त्र की प्रेरक सामग्री मिलती है।

महान् विभूतियों का अवतरण

इन प्रजातन्त्रों का पूरा इतिहास आज प्राप्य नहीं है, किन्तु इनमें जिन दो महामहिम विभूतियों का अवतरण हुआ उनके प्रसंग में ये सदैव युगस्मृति में अजर-अमर बने रहेंगे। अंधक-वृष्णि प्रजातन्त्र में ही महाभारत के चतुर राजनीतिज्ञ और गीता के अद्वितीय अध्यात्मदर्शी श्रीकृष्ण का उद्भव हुआ था। जीवन के सर्वांगीण क्षेत्रों में ऐसा पूर्ण पुरुष विश्व के किसी समाज ने उत्पन्न नहीं किया। शाक्य प्रजातंत्र में भी ऐसी ही विश्वविश्रुत विभूति महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ था। गौतम बुद्ध की समता का क्रान्तदर्शी महा-पुरुष सदियों तक आक्रान्त मानव समाज का ज्योतिर्मय पथ-प्रदर्शक बना रहेगा।

शौर्यपूर्ण लोकतन्त्रवादी गण-परम्परा

चौथी शताब्दी के पश्चात् इन प्रजातन्त्रों का ह्रास प्रारम्भ हो जाता है। इस पतनोन्मुख प्रवृत्ति के अनेक कारण हैं। लेकिन जब तक इन राज्यों का अस्तित्व कायम रहा, देश समृद्ध और प्रजा सुखी रही। साथ ही ह्रास एवं पतन की परिस्थितियां भी जितनी आन्तरिक थीं, उतनी बाह्य नहीं थीं। भारतीय इतिहास के इस अंधकार-ग्रस्त अवकाश में वस्तुतः इन्हीं स्वाभिमानी प्रजातन्त्रों ने स्वाधीनता के दीपक का प्राणों के स्नेह से ज्योतिर्मय बनाये रखा तथा अवसर आने पर उसकी रक्षा हेतु रक्त की बलि भी चढ़ाई। सिक-न्दर, कुषाण तथा शकों की सेनाओं ने इनकी तलवारों का स्वाद चखा था। जूनागढ़ में रुद्रदमन का जो शिलालेख मिला है, उससे २००ई० पू० के यौधेयों की शक्ति और स्वातन्त्र्यसंकल्प का बड़ा सुन्दर परिचय मिलता है।

"सर्वक्षत्राविष्कृत वीर शब्द जातीप्सा-कामिनां
यौधेयानाम्…।"

अर्थात् रुद्रदमन ने सेना द्वारा उन यौधेयों को ध्वस्त कर दिया जिन्होंने पराधीनता स्वीकार करना सम्मानास्पद नहीं समझा था। उनको

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बड़ा आत्माभिमान था और वे इस योग्य भी थे, क्योंकि उन्होंने अपने यौधेय नाम को रणस्थल में सार्थक कर दिखाया था ।"

इस शौर्यपूर्ण लोकतंत्रवाद की भांति शासन-संचालन की दक्षता के भी बड़े प्रेरक उल्लेख मिलते हैं। वैशाली का वज्जि प्रजातंत्र तो स्वयं भगवान् बुद्ध द्वारा प्रशासित हुआ है । उनके ये शब्द प्रत्येक प्रजातत्र के लिए सार्वकालिक ज्योतिस्तम्भ की भांति मार्गदर्शक हैं—

"हे आनन्द, अब तक वज्जिगण "एकरूप" में एकत्र होंगे और सहयोग के साथ एकरूपी निर्णय करते रहेंगे, जब तक वे अपनी मुक्त परम्परा के अनुसार नियम बनाते जायंगे, बड़े बूढ़ों का सम्मान करते रहेंगे और उनकी सम्मति को शिरोधार्य करना कर्त्तव्य मानते रहेंगे, उनके यहां जब तक नारियों के सम्मान को सर्वोपरि समझा जाएगा और जब तक वज्जिगण देश के देवालयों के प्रति श्रद्धाप्लुत बने रहेंगे, उस समय तक उनका पतन सम्भव नहीं है, बल्कि वे समृद्धि को ही प्राप्त होंगे ।"

ऐसी परिस्थितियों के होते हुए छान्दोग्य उपनिषद् की इस जनपदविषयक गर्वोक्ति को अतिशयोक्ति नहीं कहा जा सकता—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः ।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान्न स्वैरी स्वैरिणी कुतः ।

—छान्दोग्य ७,५,११

हिन्दू प्रेस लगाने के लिए
अधिक से अधिक
धन दीजिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आश्विन अंक से आगे

हत्यारों का इतिहास

द्वितीय अध्याय

हशीशिनों के संघ की स्थापना और प्रथम परमाधिकारी हसन सबाह का शासन

मिस्र—वह असाधारण देश, जो प्रकृति के अनेक अद्भुत दृश्यों के कारण अन्य सबसे इतना विशिष्ट है, इतिहास में बहिश्त या दोजख के नाम पर बुद्धिमत्ता अथवा मूर्खता द्वारा मानव समुदाय पर शासन की कला के असामान्य नमूनों की स्मरणीय रंगशाला रहा है। प्राचीनकाल के सुदूर युगों में पुरोहितों के एक ऐसे वर्ग का शासन था, जिसके हाथों में सम्राट् उनकी शक्ति का दास हथियार था और लिटुअस (आजकल के पादरी का अधिकार दंड) वास्तविक राजदण्ड था। अन्धविश्वास और मूर्तियों व चित्रों की बाहरी पूजा जनता का मजहब बना हुआ था, जबकि दीक्षित व्यक्तियों का गुप्त सिद्धान्त प्रतीकों और चित्रलिपियों के नीचे छिपा पड़ा था। उनके रहस्य विशेष रूप से मृत्यु के बाद आत्मा की स्थिति से सम्बन्धित थे, जबकि आम विश्वास यह था कि आत्मा की सत्ता तभी तक है, जब तक शरीर की सत्ता है। यह गहरी योजना किन्तु विचारहीनता से बनाई गई नीति थी, जो अमरता के सिद्धान्त से उन आम लोगों को अलग रखती थी, जो गंवारपने से चिपटे रहते हैं। यह योजना इस नीति को कुछ विशिष्ट लोगों का विशेषाधिकार बना देती थी, जिन्हें यह कब्र की सीमाओं से आगे मंडराने की अनुमति देती थी, लेकिन इसके साथ ही भौतिक जीवन के कर्त्तव्यों और उद्देश्यों की उपेक्षा करती थी। यह भी कल्पना की जाती थी कि गंवार और जंगली लोग ही उन कर्त्तव्यों और उद्देश्यों का अपनी सारी शक्तियों से पूर्णतः पालन कर सकते हैं, जो झूले (जीवन) और कफन (मृत्यु) के बीच के कालखंड में कब्र से बाद के विचारों से चालित होने की बजाय अपनी सारी हलचल और मन-मस्तिष्क की सामर्थ्य को पृथ्वी तक सीमित रखते हैं। इस प्रकार समय अथवा शक्ति व्यर्थ की आशाओं अथवा निरर्थक अटकलों में नष्ट न होगी। प्रत्येक दृष्टि से उनका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
उपयोग भौतिक अस्तित्व के लिए किया जायेगा। राज्य का यही लक्ष्य था। उसने न केवल इहलोक में अपितु परलोक में भी इनाम और सजायें देने का अधिकार अपने पास सुरक्षित रखा था। प्रकृति द्वारा प्रत्येक हृदय में बठाई गई इस इच्छा को कि वह सदा जीवित रहे, किसी सीमा तक तृप्त करने के लिए (यद्यपि तक शायद ही इसका समर्थन करता हो) लोगों ने परिरक्षित शवों और कब्रों द्वारा दीर्घतम सम्भव काल के लिए अपने शरीरों और नामों को सुरक्षित रखने की कोशिश की। इसी कारण इतने बड़े-बड़े मकबरे बने, मरे हुओं के बारे में कयामत के दिन गुप्त फैसला सुनाने की बात चली, जिसमें पुरोहितों को पंच और न्यायाधीश बनकर पत्थर और धूल की इस अस्थिर अमरता के बारे में फैसला देना था। जिन थोड़े-से लोगों को बेहतर जानकारी थी और जो इस मूक अभिनय से सन्तुष्ट न थे, मरे हुओं के बारे में फैसले का स्पष्टीकरण रहस्यों की प्रतीकात्मकता के रूप में किया गया और आत्मा की वास्तविक अमरता का पाठ पढ़ाया गया। पुरोहितों ने ऐसे-ऐसे विषयों पर स्पष्टीकरण दिए, जिनके बारे में वे स्वयं पूर्णतः अन्धेरे में थे।

मूसा ने मिस्री नीति से अनुप्राणित और पुरोहित मण्डल में (जिनकी अनेक अन्य संस्थायें भी थीं) दीक्षित होकर अमरता का सिद्धान्त अपनी जनता को प्रदान न करने की नीति को जारी रखा। अधिक सम्भावना यही है कि मिस्र की तरह यह पुरोहित वर्ग की विशिष्ट रिआयत बनी रही। हिन्दुओं की पुस्तकों में हमें इसका कोई निशान नहीं मिलता—जाब की अरबी नज्म को छोड़कर, जो वस्तुतः हिन्दुओं की नहीं।

अमरता के सिद्धान्त के इस छिपाव ने, जिसे पुरोहितों ने अपनी नीति की उत्कृष्ट कुशलता समझ रखा था, जनता की भावना को कितना दबाया और प्रत्येक उच्चतर आकांक्षा के मार्ग में कितनी बाधा डाली, हमें इसका पर्याप्त परिचय न केवल उनकी सरकार के इतिहास में मिलता है अपितु अभी तक कायम उनके मकबरों से भी, जो कलात्मक हाथों से इस पूर्णता के साथ अछूते हैं। नरसिंही मूर्त्तियां (स्फिक्सिज) और विशाल प्रतिमायें, मन्दिर और पिरामिड, मानवीय हलचल व एक ही लक्ष्य की ओर निर्दिष्ट पद्यों के उन आश्चर्यजनक स्मारकों पर अपने आयामों के विस्तार के कारण तो महानता की मुहर लगी हुई है, लेकिन उनके निर्माण में जो सौन्दर्य, उसके कारण नहीं है। सौन्दर्य तो प्रकाश के उन्हीं प्रीतिभाजन क्षेत्रों में है, जिन तक अमरता के विचार के फलस्वरूप कला और मजहब पहुंचे हैं। यद्यपि इस रहस्यमय नीति ने सभ्यता के स्वाधीनतर विकास और जनता के एक उच्चतर सामाजिक स्तर तक उन्नयन की सीमायें बांध दीं, तथापि यह बहुत सम्भव है कि इसका उद्भव विशुद्ध बौद्धिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विचारों, साम्राज्य के लिए अधिकतम समृद्धि, जनता के अधिकतम लौकिक सुख, सब मानवीय ऊर्जाओं की अप्रतिहत क्रियाशीलता और एक राजनैतिक लक्ष्य के लिए उनके सतत उपयोग के कारण हुआ हो।

इस गुप्त सिद्धांत से दीक्षित लोगों को लाभ पहुंचता था, लेकिन अदीक्षितों को चोट नहीं पहुंचती थी। इसके सर्वथा विपरीत प्रकृति का, जैसा हम देख चुके हैं, वह सिद्धांत था, जो आधुनिक मिस्र में मध्ययुग में प्रचलित था। इनमें से प्रथम में सत्ता और धार्मिक वेदी को मजबूत बनाने की व्यवस्था थी और द्वितीय में उसके विनाश की कल्पना थी। यह अन्तर उतना ही व्यापक है, जितना प्राचीन मेम्फिस के निर्माण और आधुनिक काहिरा की स्थापना के बीच है। यह अन्तर हेलियोपोलिस की अकादमियों के गुप्त सिद्धान्तों को विज्ञान के वर्तमान सदन के गुप्त सिद्धान्तों से पृथक् करता है। सुदूर अतीतकाल में मिस्र विज्ञान और सामाजिक प्रणालियों का उद्गम स्थल और बाद में दार्शनिक के तावीज और तलिस्म व कीमिया व खजाना खोजने का स्रोत बना। आधुनिक काल में वह गुप्त विद्याओं और सोसाइटियों की स्वदेशभूमि है।

काहिरा के शिविर राजनैतिक उद्देश्य, जैसा हम पहले ही देख चुके हैं, अब्बास के परिवार की खिलाफत को उखाड़ फेंकना और उसके स्थान पर अब्बासियों की खिलाफत कायम रखना था। इस शिविर ने अपने राजनैतिक और मजहबी मिशनरियों द्वारा अपने गुप्त सिद्धान्त का विस्तार किया। सामान्य पक्षधर, रफीक (साथी) उनके अधीन थे। इन्हें रहस्यों एक के अथवा अनेक ग्रेडों में दीक्षित किया गया; लेकिन इनका काम न तो उन्हें पढ़ाना था और न किसी राजवंश के लिए वोट बटोरना था। यह तो राजनैतिक और मजहबी मिशनरियों का विशिष्ट विशेषाधिकार था, जिनका परमाधिकारी काहिरा के विद्यालय में रहता था। हाकिम द्वारा इस संस्था की स्थापना के बाद से खलीफा अमर-बायाकम-इल्लाह के समय तक यह अपरिवर्त्तित रही, जब सेना के प्रधान सेनापति अफजल ने शिविर के सदस्यों द्वारा भड़काये गए राजद्रोह के अवसर पर इसे बन्द करवा दिया और जैसा प्रतीत होता है, नष्ट ही करवा दिया। अगले वर्ष उसके देहान्त के बाद जब सोसायटी ने उसके पुनः खोले जाने की जोरदार मांग की, तब वजीर मैमून ने उसी स्थान पर अकादमी खोलने से इन्कार कर दिया, लेकिन उन्हें इस बात की अनुमति दे दी कि वे एक अन्य स्थान पर इसी उद्देश्य से एक अन्य इमारत खड़ी कर लें, जो दारुल जदीद (नया विद्यालय) कहलाए, जहां फातिमाई राजवंश के पतन तक शिक्षा के सार्वजनिक पाठ्यक्रमों और गुप्त बैठकों का सिलसिला चलता रहा। उनके सिद्धान्त के प्रभाव फातिमियों की बढ़ती हुई शक्ति और उस दुर्बलता में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकट हुए, जिसमें अब्बास के परिवार की खिलाफत धीरे-धीरे जा गिरी। फातिमा के सर्वाधिक उत्साही पक्षधरों और रक्षकों में से एक अमीर बसासिरी ने बगदाद में पूरे एक वर्ष तक इस्लामवाद के दो परमाधिकारों--खजाना और धर्मवेदी--को मिस्री खलीफा मोस्तनजर के नाम पर अपने कब्जे में रखा। बसासिरी इन दोनों पर अपना कब्जा जमाये रखता, यदि अगले वर्ष वह (बसासिरी) तोगरुल की तलवार से कत्ल न कर दिया जाता। तोगरुल ने तुरन्त अब्बासियों की सहायता की। इसी बीच रफीक (साथी) और उनके अधिकारी सारे एशिया पर छा गए और अधिकारियों में से एक हसन-बिन-सबा हुमेरी ने इस सम्प्रदाय की एक नई शाखा की, जिसका नाम पूर्वी इस्माइली अथवा हशाशिन था, स्थापना की। अब हम उसी शाखा के जन्म की देहरी पर खड़े हैं।

हसन साबा अथवा हसन-बिन-साबा (जिसका शब्दार्थ है साबा के उत्तराधिकारियों में से एक) अली का पुत्र था, जो रेई का कट्टर शिया था, जिसने अपना नाम साबा हुमेरी से ग्रहण किया था और बहाना किया था कि उसका पिता कूफा से कुम गया था और कुम से राई गया था। लेकिन खुरासानवासियों ने इस आरोप का काफी जोर से प्रतिवाद किया—विशेषतः तुस के रहने वालों ने, जिन्होंने सर्व सम्मति से अपना यह मत प्रकट किया कि उसके पूर्वज लगातार उस प्रान्त के गांवों में रहते आए हैं। सब ओर से अली पर सन्देह किया गया कि वह विधर्मियों की बोलियां बोलता और बातें करता है, जिसके फलस्वरूप उसे रफेजी अथवा मोतासल (मतभेद रखने वाला अथवा पृथक्तावादी) होने की ख्याति मिली। उसने राज्य के गवर्नर अबू मुस्लिम के समक्ष अपनी रूढ़िवादिता सिद्ध करने के लिए झूठी आत्मस्वीकृतियां कीं और शपथें खाईं। अबू मुस्लिम पक्का सुन्नी था और बाद वह एक मठ में चला गया, जहां उसने परमात्मा के ध्यान में अपना जीवन गुजारा। लेकिन इस निवृत्ति के बावजूद उसे जनता से प्रशंसा नहीं मिली। एक समय ऐसा भी आया, जब जनता ने उस पर विधर्मी और अ सनातनी होने का आरोप लगाया। एक अन्य समय उस पर निष्ठाहीनता और नास्तिकता का आरोप लगाया गया। अपने आपको इन सन्देहों से यथासम्भव मुक्त करने के लिए उसने अपने युवा पुत्र हसन को निशावूर भेजा और उसे लब्धप्रतिष्ठ मुवाफिक निशाबुरी के विद्यालय में प्रविष्ट करवाया। मुवाफिक निशाबुरी की उम्र उस समय अस्सी वर्ष से अधिक थी। मुवाफिक निशाबुरी ने न केवल अपनी योग्यता द्वारा प्राप्त इस विचार का आनन्द लिया कि वह सुन्ना का प्रथम अध्यापक है, अपितु उसने यह लाभपूर्ण ख्याति भी अर्जित की कि उसने अपने तत्त्वावधान में कुरान और सुन्ना का (जिसे घटनाओं ने तर्कसंगत सिद्ध किया) अध्ययन करने वालों को लौकिक प्रसन्नता प्राप्त करने की स्थिति प्रदान की। उसके यह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन युवकों का विशाल जमावड़ा था, जो उससे शिक्षा और प्रसन्नता प्राप्त करना चाहते थे। सौभाग्यशाली प्रतिभावान् व्यक्तियों के विकास, इमाम की बुद्धिमत्ता और सन्देहयुक्त बातचीत से बनी सम्मति ने भी उसकी ख्याति को तर्कसंगत सिद्ध किया। उसके अन्तिम शिष्य मृत्यु तक उसकी ख्याति की पुष्टि में योगदान करते रहे। उनमें से तीन—हसन,उमर खय्याम और निजामुलमुल्क ने एक ही समय अत्यन्त शानदार प्रतिभाएं प्राप्त करके एकदम भिन्न जीवनवृत्तियां अपनाईं और सबके परिणाम अत्यन्त सौभाग्यशाली रहे। वे अपने युग के महान् मनीषियों के तारामण्डल में चमके—वैसे ही जैसे ओरायन में तीन तारे चमकते हैं। उमर खय्याम नक्षत्रविद् और दार्शनिक कवि बना, निजामुलमुल्क महान् वज़ीर बना और हसन-बिन-साबा एक सम्प्रदाय का मुखिया और उसकी एक शाखा हशाशिन का संस्थापक बना। प्रथम नागरिक समाज में निरर्थक था और जीवन की भोग विलासमय शैली के कारण अहानिकर था; द्वितीय सेल्जुकों के तीन सुल्तानों के अधीन परोपकारी, कर्मठ और विद्वान् राजनेता था और तृतीय अपनी दानवीय नीति द्वारा मानव समाज के लिए घातक अनिष्ट सिद्ध हुआ।

हसन-बिन-साबा की महत्त्वाकांक्षा का विस्फोट उसकी जवानी में ही हो गया, जब उसने अपने विद्यालय के दो साथियों के साथ पारस्परिक प्रतिज्ञाओं द्वारा अपनी किस्मत की नींव रखने की कोशिश की। उनमें से एक वजीर निजामुलमुल्क ने एक इतिहास लेखक के नाते स्वयं ही बताया है कि उन्होंने एक-दूसरे को क्या-क्या वचन दिए और उनका क्या परिणाम निकला। एक दिन हसन ने अपने उक्त दोनों से कहा कि "आम राय यह है कि इमाम के चेलों को अपनी खुशकिस्मती का पूरा यकीन है। अब आओ, हम एक-दूसरे को वचन दें कि यदि हम तीनों में से किसी एक की क़िस्मत जागी, तो वह अपनी खुशकिस्मती का सुख अकेले नहीं भोगेगा, बल्कि अपने दोनों साथियों के साथ मिलकर भोगेगा।" उमर खय्याम और निजामुलमुल्क ने हसन का प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया। उन्होंने परस्पर वचन दिए। इनमें से प्रथम इतना ढीठ था कि अपने आपको राजनीति में नहीं उलझाना चाहता था, दूसरा इतना फराखदिल था कि वह यह नहीं चाहता था कि अपनी बेचैनी भरी। महत्त्वाकांक्षा में अपने दोनों साथियों को भागीदार न बनाए—उस सम्पत्ति में जो अपनी जीविका में उसकी महान् प्रतिभा और ईमानदार उद्योग द्वारा उसके अपने लिए गारंटीशुदा थी। वर्षों गुजर गये, जिनके दौरान निजामुलमुल्क ने खुरासान, मवारेनेहर, खसनीन और काबुल देशों की यात्रा की और राज्य के छोटे पदों पर काम किया—तब तक जब अन्ततः वह सेलजुकों के महान् राजकुमार अल्प-अरसलान के अधीन साम्राज्य के सबसे बड़े पद वजीर तक पहुंच गया। उसने विद्यालय के अपने पुराने साथी उमर खय्याम का सम्मानपूर्वक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वागत किया। सबसे पहले उमर खय्याम ही उसके पास आया और जैसा उसने स्वयं लिखा है, जवानी के दिनों की अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हुए उसे पद दिलाने की खातिर अपनी साख और प्रभाव का इस्तेमाल करने का प्रस्ताव रखा। अधिक सम्भावना यही है कि ऐसा ही हुआ होगा, क्योंकि निजामुल्मुल्क को दुनिया का जो तजुर्बा हुआ, उससे उसे विश्वास हो गया कि भोगों के सुख के लिए खय्याम के मन में जो लालसा है, उसके कारण वह इस प्रस्ताव को अस्वीकृत कर देगा और किसी भी हालत में वजीर सदृश प्रतिद्वन्द्वी उसके लिए खतरनाक सिद्ध न होगा। उमर खय्याम ने उसे धन्यवाद दिया और इतनी ही प्रार्थना की कि उसे शान्तिपूर्वक आराम से रहने दे, उसके आराम में बाधा न डाले, उसे ज्ञान-विज्ञान की अराधना करने दे। जब निजामुल्मुल्क ने बार-बार उसके समक्ष वजीर बनने का प्रस्ताव रखा और खय्याम ने वही उत्तर दिया, तो निजामुल्मुल्क ने निशापुर के राजस्व से उसे एक हजार अशरफियों की वार्षिक पेन्शन लगा दी, जहां सार्वजनिक मामलों से दूर और भोगैश्वर्य की स्वाधीनता के वातावरण में उसने आगे का समय अपनी प्रतिभा के विकास और ज्ञान-विज्ञान में लगाया व कवि एवं नक्षत्रवेत्ता के नाते बहुत ख्याति अर्जित की। यद्यपि आरामतलबी के कारण वह अपने परमानन्द को छोड़कर किसी उल्लेखनीय कार्य द्वारा समृद्धि की ओर नहीं बढ़ा, तथापि उसने केवल अपनी रुबाइयों द्वारा फारसी शायरी के इतिहास में अपने गौरव को सुरक्षित रखा। ये रुबाइयां अपनी किस्म में लासानी हैं। इनमें अभिभूत कर देने वाली कल्पना की उड़ान है, जिसने न्यूनतम निषेध के बिना दिल खुश करने वाली बातें कही हैं। सब पवित्र लोगों का एक प्रकार से मजाक उड़ाया है—विशेष रूप से रहस्यवादियों का। न केवल सूफियों का मजाक उड़ाया गया है, अपितु स्वयं कुरान का भी—यहां तक कि रूढ़िवादियों ने अपवित्रता के आरोप में इन रुबाइयों की अधिकतम बदनामी की है। उमर खय्याम ने अपनी रुबाइयात में और इब्न यमन ने अपने मुकातात से अपने पूर्ववर्त्ती सब फारसी शायरों की अपेक्षा अधिक ख्याति अर्जित की है—विशेषतः दार्शनिक कवियों की अपेक्षा। इन दोनों में से उमर खय्याम की प्रतिभा की तुलना यंग से की जाती है और इब्न यमन की वाल्टेयर से।

हसन सबा गुमनामी में जिया और अल्प-अरसलान के दस वर्ष के शासन में अज्ञात ही रहा। लेकिन मलिकशाह के राज्यारोहण के तुरन्त बाद साबा का पुत्र भी सेल्जुको के सुलतान के दरबार में प्रकट हुआ और उसने वचन भंग करने वालों के विरुद्ध कुरान के कठोर शब्दों के साथ वजीर को याद दिलाया कि वह जवानी के अपने वचनों को पूर्ण करे। (याद रहे कि मलिकशाह के अधीन निजामुल्मुल्क को वही असीम शक्ति प्राप्त थी, जो उसे उसके पूर्ववर्त्ती के अधीन प्राप्त थी।) निजामुल्मुल्क ने सम्मानपूर्वक उसका स्वागत किया, उसे पर्याप्त पदवियां

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और राजस्व प्रदान किये एवं उसका परिचय सुलतान से करवा दिया। हसन धूर्ततापूर्ण पाखंड से और सद्गुणात्मक स्पष्टता व निष्कपट ईमानदारी की आड़ में शीघ्र ही सुलतान का मालिक बन गया। सुलतान सब महत्त्वपूर्ण अवसरों पर उससे सलाह लेता था और उसके फैसले के अनुसार काम करता था। शीघ्र ही निजामुल्मुल्क का अधिकार और प्रभाव वस्तुतः खतरे में पड़ गये और हसन ने उत्साहपूर्वक अपने हितकारी के पतन के लिए कोशिश करनी शुरू कर दी। उत्कृष्ट कलात्मक ढंग से वह दीवान की छोटी-से-छोटी भूलें सुलतान की जानकारी में लाने लगा और पूछे जाने पर अत्यन्त कपटपूर्ण प्रतिवेदनों, कुतर्कों और विरोधमूलक प्रभाव डालने वाले उपायों से सुलतान का दिल-दिमाग वजीर के विरुद्ध करने की कोशिश करता था। निजामुल्मुल्क की आत्मस्वीकृति के अनुसार इस प्रकार की सर्वाधिक क्रूर चोट यह थी कि हसन ने वचन दिया कि वह चालीस दिन के अन्दर राज्य के राजस्व और व्यय का आय-व्ययपत्र सुलतान के सामने रख देगा, जबकि वजीर ने इस काम को करने के लिए इससे दस गुना समय मांगा था। मालिकशाह ने दरबार के सब सचिव हसन की सहायता के लिए जुटा दिये, जिनकी सहायता से उसने निर्धारित समय में सारा हिसाब-किताब पेश किया। निजामुल्मुल्क ने लिखा है कि यद्यपि हसन विजयी हुआ, वह इसका लाभ न उठा पाया, क्योंकि हिसाब-किताब भेजने के बाद उसे बेइज्जती के साथ दरबार छोड़ने पर मजबूर कर दिया गया। लेकिन उसने अपनी बेइज्जती का कोई निश्चित कारण नहीं बताया। अन्य इतिहास लेखकों के बयान के अनुसार बहुत सम्भव है कि निजामुल्मुल्क ने अपनी रक्षा का विचार करके हसन के हिसाब-किताब में से कुछ पन्ने निकालकर उसे बिगाड़ने का उपाय कर लिया हो और क्योंकि हसन अपने कागजात में इस अप्रत्याशित अव्यवस्था का कोई कारण न बता सका, इसलिए उस ने सुलतान के क्रोध में वृद्धि कर दी, ताकि दरबार से उसका एक इतना खतरनाक प्रतिद्वन्द्वी हमेशा के लिए हट जाये। अपनी रचना बसाया (राजनैतिक संस्थाएं) में वह बहुत भोलेपन के साथ लिखता है कि यदि साबा के पुत्र पर यह मुसीबत न आन पड़ती, तो भी वह यही मार्ग अपनाता। (मतलब यह कि वह दरबार से चला जाता और अपना पद छोड़ देता।)

मालिकशाह के दरबार से सेवा-निवृत्त होकर हसन रई चला गया। वहां से वह इस्फहान चला गया, जहां वह अबूफजल के घर में एकान्तवास करने लगा, ताकि निजामुल्मुल्क की पूछताछ से बच सके। शीघ्र ही उसने अबूफजल को अपनी धारणाओं से सहमत कर लिया। वह कुछ दिन तक उसके पास रहा। वह मालिकशाह और उसके वजीर के विरुद्ध जो शिकायतें किया करता था, उन्

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक दिन उनका उपसंहार इन शब्दों में किया कि "यदि मुझे दो निष्ठावान् मित्र मिल जाते, तो मैं शीघ्र ही तुर्क और किसान (सुलतान और वजीर) की सत्ता पलट देता।" इन उल्लेखनीय शब्दों से हशाशिनों के आदि पुरुष की व्यापक योजनाओं का पता चलता है, जिसने पहले ही सम्राटों और मन्त्रियों के विध्वंस के इरादे बना रखे थे। हत्यारों के इस सम्प्रदाय की सारी नीति के नियम उनमें विद्यमान थे। जब तक सम्मतियां केवल मस्तिष्क को भ्रमित करती हैं, हाथों में हथियार नहीं देतीं, तब तक वे शक्तिहीन हैं। जब तक संशयवाद और मुक्त चिन्तन अकर्मण्यों और दार्शनिकों के मस्तिष्कों पर ही छाया रहा, उसने किसी राजसिंहासन का विध्वंस नहीं किया। इस उद्देश्य के लिए तो राष्ट्रों के हाथ में मजहबी और राजनैतिक मतान्धता सशक्ततम पुरजे हैं। महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति के लिए इस बात का कोई महत्त्व नहीं कि जनता का विश्वास क्या है। उसके लिए तो सारा महत्त्व इस बात का है कि अपनी योजनाओं की पूर्ति के लिए वह उन्हें कैसे मोड़े। वह तत्पर दासों, निष्ठावान् पिछलग्गुओं और अन्धे उपकरणों को प्रस्तुत करके सन्तुष्ट होता है। जब इस किस्म के दो व्यक्ति जमा हो जायें और किसी तीसरे व्यक्ति की आत्मा उन्हें संचालित करे और वे उसके आदेश पर चलें, तो वे क्या नहीं कर सकते? यह सत्य, जो हसन की उद्योगशील आत्मा के समक्ष खुला था, उसके मेजबान रईस अबूफजल की समझ से बाहर था, यद्यपि वह (रईस अबूफजल) अपने समय के सर्वाधिक चतुर और समझदार लोगों में से था। उसने इन शब्दों को पागलपन की निशानी समझा और इसे इस बात में सन्देह न रहा कि ये शब्द सन्निपात के रोगी के उद्‌गार हैं, क्योंकि उसने सोचा कि सही दिमाग वाले किसी व्यक्ति को यह विचार कैसे आ सकता है कि वह केवल दो अनुयायियों के साथ मालिकशाह के विरोध में खड़ा हो जाये, जिसकी सत्ता संटियोक से लेकर काशगर तक थी। अपना विचार अपने मेहमान तक पहुंचाये बिना उसने उसके स्वास्थ्यलाभ की आशा में प्रातराश और रात्रिभोजन में सुगन्धित शरावें और केसर से तैयार किये हुये पकवान रखे, जो मस्तिष्क को शक्ति देने वाले समझे जाते थे। हसन ने अपने मेहमान का इरादा भांप लिया और वह विदा होने की तैयारी करने लगा। निजामुल्मुल्क ने अपनी वाग्मिता के बल पर उसे रोकने की नाकाम कोशिश की। वह शीघ्र ही मिस्र चला गया।

बीस वर्ष बाद जब हसन ने अलामत के मजबूत किले पर कब्जा कर लिया और वजीर निजामुल्मुल्क अपने हत्यारों के छुरों का शिकार हो गया व सुलतान मालिकशाह भी शीघ्र ही कब्र में जा पहुंचा, तब रईस अबूफजल हसन के सर्वाधिक उत्साही पक्षधरों में से एक के रूप में किले में था। सुलतान मालिकशाह ने रईस से पूछा कि "रईस, हम दोनों में से किसका दिमाग खराब था? तुम्हारा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

या मेरा ? तुमने इस्फहान में मुझे जो सुगन्धित शरावें और केसर वाले पकवान मुझे पेश किये थे, वे किसके उपयुक्त थे ? तुम्हारे या मेरे ? तुम देख लो कि दो विश्वस्त मित्रों के मिलते ही मैंने कैसे अपने वचन का पालन किया।"

सुलतान मालिकशाह का शासन काल जिसके बीस वर्षों के दौरान हसन-सावा अपनी एकता की नींव रखने में व्यस्त था, पश्चिम एशिया के इतिहास के सर्वाधिक तूफानी युगों में से था। इस बीच अनेक पुराने राजवंशों का पतन और नवीन राजवंशों का अभ्युदय हुआ। तवरिस्तान, अलप्पो और दायरबाकर में वनी सय्यद, बनी मरदास और बनी मरवान लुप्त हो गये और उनके स्थन पर दानिशमन्द बबन्द और आलोक ने कुम, तबरिस्तान और मारादिन के राजसिंहासनों पर अधिकार कर लिया। सेल्जुक सुलतानों ने, जिन्होंने अपने राजवंश के संस्थापक तुगरुलवेग के समय से ईरान पर शासन किया था, अपनी शाखाएं सीरिया, कर्मान और एशिया माइनर तक फैला दीं। अब्बासी खलीफों की राजधानी बगदाद आन्तरिक मजहबी युद्धों से क्षतविक्षत थी। सुन्नी, शिया, इमामों के अनुयायी, अशारी और हनबली नगर की चारदीवारी के अदर खूनी मुठभेड़ों में लगे थे। वस्तुतः अमीर बसासिरी के देहान्त के बाद खजाना और मिम्बर पर से होने वाली इबादत पुनः अब्बास के परिवार के नाम आ गये, लेकिन दोनों पवित्र नगरों मक्का और मदीना में वे जनूनी खलीफा मोस्तंसूर के नाम पर जारी रहे। उस समय मिस्र की गद्दी पर खलीफा मोस्तंसूर का अधिकार था। उसके मिशनरयों ने, इस्माईलियों के दीक्षितों ने, काहिरा के संघ के दूतों ने सारे एशिया को आप्लावित कर दिया, ताकि निष्ठाहीनता और विद्रोह के लिए प्रचारक प्राप्त किये जा सकें। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि हसन सावा के रूप में उनके बिज को उपजाऊ भूमि मिल गई। उनके साथ उसके सम्बन्ध की शुरुआत को हम उसी के शब्दों में प्रस्तुत करेंगे, क्योंकि वह इतिहास में सुरक्षित है।

"अपने बचपन से—सातवें वर्ष से—मेरा एकमात्र प्रयत्न अपने ज्ञान की सीमाएं बढ़ाने और अपने सामर्थ्य की वृद्धि करने की दिशा में रहे। अपने जन्मदाताओं की तरह मुझे १२ इमामी सिद्धान्तों की शिक्षा दी गई और मैंने अमीर जराब नामक इस्माईली रफीक से परिचय बनाया, जिसके साथ मैं मैत्री के बंधन में बंध गया। मेरी राय थी कि इस्माईलियों का सिद्धान्त दार्शनिकों के सिद्धान्तों का-सा था और मिस्र दीक्षित देशों में से एक था। इसलिए जब भी अमीर उसके सिद्धान्तों के पक्ष में बोलता था, मैं उसके साथ विवाद करता था और विश्वास के सम्बन्ध रखने वाले मुद्दों के वारे में हममें बहुत बहस हुई। अमीर ने मेरे सम्प्रदाय की जो निन्दा की, मैं उस की न्याय्यता को बिलकुल नहीं मानता था, फिर भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनका मेरे दिमाग पर बहुत असर पड़ा। इस बीच वह मुझे छोड़कर चला गया और मुझ पर बीमारी का सख्त दौरा पड़ा, जिस बीच मैंने अपने हठ को दोषी ठहराया कि मैंने इस्माईलियों के सिद्धान्त को स्वीकृत क्यों न किया, जो सच्चे थे। मुझे डर लगने लगा कि कहीं मृत्यु मेरी प्रतीक्षा न कर रही हो (जिस मृत्यु से भगवान् ने मेरी रक्षा की) और कहीं मैं सत्य का ज्ञान प्राप्त किये बिना ही मर न जाऊं। अन्ततः मैं पुनः स्वस्थ हो गया और अबू नज्मे सराज नामक एक अन्य इस्माईली से मिला, जिससे मैंने उसके सिद्धान्तों की सचाई के बारे में प्रश्न किये। अबूनिजाम ने बहुत ब्योरे से इन सिद्धान्तों की व्याख्या की, जिससे मैं इन्हें पूरी तरह समझ गया। अन्ततः मुझे एक मिशनरी मिला, जिसका नाम मुमीन था, जिसे ईराक के मिशनों के अध्यक्ष शेख अब्दुलमलिक-बिनअताश ने अध्यक्ष पद का कार्य निभाने की अनुमति दी थी। मैंने उससे प्रार्थना की कि वह फातिमाई खलीफा के नाम पर मेरी श्रद्धांजलि स्वीकृत करे। पहले तो उसने ऐसा करने से इनकार किया, क्योंकि मेरी पदवी उससे उच्चतर थी, लेकिन जब मैंने जोर देकर अपनी मांग रखी, तब उसने उसे स्वीकृत कर लिया। अब जब शेख अब्दुलमलिक रई पहुंचा और बातचीत के दौरान मेरी राय से परिचित हो गया, तब वह मेरे बरताव से इतना प्रसन्न हुआ कि उसने मुझे तुरन्त मजहबी और राजनैतिक मिशनरी का पद दे दिया। उसने मुझे कहा कि "तुम्हें इमाम मोस्तान्सुर (फातिमियों का सत्तारूढ़ खलीफा) की सेवा करने की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए मिस्र जाना चाहिए। शेख अब्दुलमलिक के इस्फहान प्रस्थान के लिए रई से विदा हो जाने पर मैंने मिस्र की यात्रा की।"

तब ईरान में हसन पहले ही नास्तिकता और अनैतिकता के इस्माईली रहस्यों में दीक्षित किया जा चुका था। इतना ही नहीं, उसे उन रहस्यों के शिक्षा देने और उन्हें लागू करने के भी योग्य मान लिया गया था। उसकी महान् प्रतिभाओं और मालिकशाह के दरबार में उसे जो अधिकार प्राप्त था, उनकी प्रसिद्धि उसके पहुंचने से पूर्व ही खलीफा मोस्तान्सुर तक पहुंच चुकी थी। मोस्तान्सुर इस बात से प्रसन्न था कि उसे ऐसा पक्षधार मिला। उसने सम्मान और विशिष्टता के साथ उसका स्वागत किया। मिशनरियों के मुखिया अथवा संघ के परमाधिकारी दायल दोत (जिसका नाम शरीफ तहरे कास्विमी था) और पद व प्रभाव से युक्त कुछ अन्य व्यक्तियों को उससे मिलने के लिए सीमापुर भेजा गया। मोस्तान्सुर ने उसे शहर में एक निवासस्थान दे दिया और उसका अपने मन्त्रियों व दरबार के प्रतिष्ठित लोगों की उपस्थिति में स्वागत किया। उसने उसे सम्मान और कृपा के चिह्नों से लाद दिया। कुछ लोगों का कहना है कि हसन १८ महीने तक काहिरा में रहा, जिस बीच यद्यपि खलीफा ने उसे व्यक्तिगत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साक्षात्कार के लिए न बुलाया, तथापि उसने उससे सम्बन्धित प्रत्येक बात में दिलचस्पी ली। यहीं पर बस नहीं, उसने उसकी अधिकतम प्रशंसा की। खलीफा की सिफारिशें और अनुराग इतना अधिक था कि उसके सम्बन्धी और मुख्य अधिकारी समझने लगे कि उसे प्रधानमन्त्री बनाने की घोषणा कर दी जायेगी। इस बीच हसन और बद्रजमाली (सौन्दर्य का पूर्ण चन्द्र) अमीसल जयूश (प्रधान सेनापति), जिसे इस्माईलियों के अधिराज्यों में असीम सत्ता प्राप्त थी, के बीच फूट और वैमनस्य के बादल घुमड़ आये। इसका कारण था वह भारी मनमुटाव, जो मिस्री राज्यसिंहासन के उत्तराधिकारियों को लेकर उस समय पैदा हो गया था। खलीफा ने अपने पुत्र निसार को अपना वैध उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था, जबकि बद्रजमाली के नेतृत्व में एक गुट दावा करने लगा कि उसका दूसरा पुत्र मुश्तेअली (जो आगे चलकर उसका उत्तराधिकारी बना) ही इस योग्य है। हसन निसार के उत्तराधिकार के पक्ष में था और इस कारण जनरल के मन में उसके लिए अमिट घृणा पैदा हो गई और उसने हसन के विरुद्ध हर कोशिश की और अन्ततः खलीफा को न चाहते हुए भी हसन के पुत्र को दमीता के किले में कैद करना पड़ा।

इसी अवधि के आस-पास नगर के सर्वाधिक सुदृढ़ स्तम्भों में से एक बिना किसी प्रकट कारण के गिर पड़ा और आतंकित नगरवासियों को इस दुर्घटना में हसन और मोस्तान्सुर के खुशकिस्मत सितारे दिखाई दिये। उसके शत्रुओं और ईर्ष्यालुओं ने उसे अपने हाथों से एक जहाज में बिठा दिया, जो अफ्रीका जा रहा था। अभी वह समुद्र यात्रा प्रारम्भ ही कर पाया था कि लहरों में एक तूफानी ज्वारभाटा आया, जिससे हसन को छोड़कर सब यात्री आतंकित हो गये। केवल हसन शान्त रहा और भयाक्रान्त न हुआ। उसके एक सहयात्री ने उससे उसकी सुरक्षा का कारण पूछा, तो उसने उत्तर दिया कि "हमारे मालिक (सिदना) ने मुझे वचन दिया है कि मुझ पर कोई मुसीबत न आयेगी।" इसके कुछ मिनट बाद ही समुद्र शान्त हो गया, सब के सब यात्री आश्वस्त हो गये और उस क्षण से हसन के शिष्य और निष्ठावान् पक्षधर बन गये। इस प्रकार अपना विश्वास बढ़ाने के लिए उसने दुर्घटनाओं और प्राकृतिक घटनाओं का लाभ उठाया, मानो वह उन दोनों पर हावी हो। जिस शान्ति से उसने क्षुब्ध सागर के खतरों का सामना किया, उससे वह इन तत्त्वों का शासक तो बन ही बैठा, अपने मस्तिष्क का भी वास्तविक स्वामी मान लिया गया। तहखाने और तूफान की अन्धेरी रात में उसने महत्त्वाकांक्षा और प्रतिशोध की योजनाओं पर विचार किया। जबकि गिरता हुआ स्तम्भ चकनाचूर हो रहा था, बादल गरज रहे थे और बिजली चमक रही थी, तूफानों ने शोर मचा रखा था, उसने हशीशिनों के अपने संघ की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नींव रखी—राजसिंहासनों के विध्वंस और महाविध्वंसकों के खंडहरों के लिए।

जहाज की मंजिल की विपरीत दिशा में लेकिन हसन के अनुकूल एक आंधी चली, जो उन्हें अफ्रीका की ओर ले जाने की बजाय सीरिया के समुद्री तटों पर ले गई। हसन वहां उतर पड़ा और अलप्पो की ओर चल पड़ा, जहां वह कुछ समय तक रहा। वहां से वह बगदाद, खुशिस्तान, इस्फहान, यज्द और कर्मान गया। इन सब स्थानों पर उसने अपने सिद्धान्त का प्रचार किया। कर्मान से वह इस्फहान लौट आया, जहां वह चार महीने रहा और तब उसने दुबारा खुशिस्तान की यात्रा की। इस प्रान्त में तीन महीने रहने के बाद वह तीन वर्ष तक दमागन और पार्श्ववर्ती प्रदेश में रहा। यहां उसने अनेक प्रचारक बनाये और अलामुत व इस प्रदेश के अन्य किलों में बांध लेने वाली वाग्मिता के स्वामी प्रचारक भेजे। यहां अपनी योजनाओं की पूर्ति के लिए सारी तैयारी करने के बाद वह जार्जन गया, जहां से उसने दिलेम की ओर अपनी यात्रा प्रारम्भ की। लेकिन वह कई क्षेत्र में प्रविष्ट न हुआ, क्योंकि उस जिले के शासक मुस्लिम रासी को निजामुल्मुल्क से आदेश मिल चुका था कि जैसे भी हो, उसे गिरफ्तार कर लिया जाये और उसने इस आदेश का पालन करने में कुछ भी उठा न रखा था। फलस्वरूप हसन सारी गया और वहां से देमावंड के लिए रवाना हुआ। कास्विन जाते हुए वह दिलेम से होकर गुजरा और अन्तत: अलामुत के किले में पहुंचा, जो उसकी सत्ता और महानता का झूला बना। कुछ समय पूर्व वह अपने इस किले में अपने सर्वाधिक उत्साही और दक्ष मिशनरियों में से एक हुसैन केनी को भेज चुका था, ताकि वह वहां के निवासियों को खलीफा मोस्तन्सुर के प्रति निष्ठा की शपथ लेने के लिए आमन्त्रित करे। अधिकतर लोग पहले ही उसके प्रति रस्मी निष्ठा की शपथ ले चुके थे। सेनापति अली मेहदी, जिसने मालिकशाह के नाम पर इस नगर पर अधिकार कर रखा था, कुछ अन्य लोगों के साथ अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान् रहा। वह अब्बास के परिवार के बगदाद के खलीफा के सिवा किसी अन्य की आध्यात्मिक सर्वोच्चता को स्वीकृत नहीं करता था और सेलजुक के परिवार के सुलतान मालिकशाह के सिवा किसी को लौकिक राजकुमार नहीं मानता था। वह अली का वंशज था और अपने पूर्वजों में दई इललहक (सत्य का निमन्त्रण-दाता) को शुमार करता था। हसन बिन सईद बाकरी ने अढ़ाई सौ वर्ष पूर्व यह किला बनवाया था।

अलामुत (गीध का घोंसला) का यह नाम इसलिए पड़ा, क्योंकि इसकी स्थिति अभेद्य है। यह कास्विन के उत्तर में ६० फरसांग की दूरी पर स्थित रूदवार जिले में फैले पचास किलों में सबसे बड़ा और सबसे मजबूत है। इसकी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भौगोलिक स्थिति पूर्वी अक्षांश में ५० अंश व ३० कलाएं और उत्तरी देशान्तर रेखांश में ३० अंश है। वह दिलेम और इराक की सीमाओं पर स्थित एक पर्वतीय देश है, जिसकी सिंचाई शाहरुद अथवा सम्राट् की नदी करती है। इस नाम की दो सरितायें हैं, जिनमें से एक कास्विन के समीप थल्नकान पर्वत शिखर में से निकलती है और दूसरी शीर पर्वत शिखर में से। यह अलामुत के रुदवार जिलों में से होकर बहती है। रुदवार का मतलब होता है नदी-भूमि। यह नाम एक अन्य जिले और इस उत्तरी जिले के लिए भी प्रयुक्त होता है, जो अलामुत का जिला कहलाता है। इस नाम के कारण यह लोर के दक्षिणी रुदबार से अलग पहचाना जाता है, जो इस्फहान के समीप स्थित है और जेंदरुद (जीवन की नदी) द्वारा सींचा जाता है—वैसे ही जैसे अलामुत शाहरूद (सम्राट् की नदी) द्वारा सींचा जाता है।

हसन ने, जो अब तक अपनी सत्ता की स्थापना के लिए कोई केन्द्रीय बिन्दु पाने का असफल प्रयत्न करता रहा, अन्ततः अलामुत के किले पर अधिकार कब्जा कर लिया। यह कब्जा मुहम्मद की हिजरत के ४८३वें वर्ष के रदशेब महीने की छठी तारीख को हुआ। तब ईसवी सन् १०९० था अर्थात् फ्रांसीसी क्रान्ति से सात शताब्दियां पूर्व। याद रहे कि फ्रांसीसी क्रान्ति के प्रथम प्रवर्तक गुप्त सोसाइटियों के हस्तक अथवा नेता थे, जिन्होंने अपने समय में इस्माईलियों की तरह उस योजना पर खुल्लमखुल्ला अमल किया, जो उन्होंने गुप्त रूप से तैयार की थी। यह योजना भी राजसिंहासनों और वेदियों को गिराने की। मानवसमाज के लम्बे अनुभव और विस्तृत ज्ञान, राजनीति और इतिहास के गम्भीर अध्ययन ने साबा के पुत्र को सिखाया कि नास्तिक और अनैतिक पद्धति से विनाश हो सकता है न कि राजवंशों की स्थापना। इस पद्धति से शासन नहीं चलता अपितु गड़बड़ होती है। मनमानी किसी शासक का सिद्धान्त हो सकता है, लेकिन प्रजा की संहिता नहीं। उसने यह भी सीखा था कि कानून की लगाम से कुछ लोग बहुत लोगों को काबू में रख सकते हैं और नैतिकता व मजहब राष्ट्रों की वंशवदता ओर नरेशों की सुरक्षा की सबसे अच्छी गारंटी हैं। वह काहिरा के धर्मसंघ की सर्वोच्च सीढ़ी में दीक्षित था, इसलिए उसने उनकी असीम महत्त्वाकांक्षा की योजना की तह पाली। इस योजना का न्यूनतम उद्देश्य अब्बासियों की खिलाफत के विध्वंस और उसके खंडहरों पर नये राजसिंहासनों की स्थापना से कम न था।

मोस्तान्सुर ने, जिसने अब तक फातिमाई खलीफा के नाम पर धर्मदूत अथवा राजदूत के तौर पर काम किया था, संकल्प किया कि अपने से श्रेष्ठतर के स्थान पर वह अपने लिए सत्ता प्राप्त करे। उसने विदेशी बुद्धि और नीति के विनाश के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिए इतना प्रयत्न न किया, जितना इस बात के लिए कि वह अपनी प्रतिभा स्थापित करे और उसे मजबूत बनाये क्योंकि मुसलमानों की राय में सर्वोच्च सत्ता सदा इमाम खलीफा के व्यक्तित्व में निहित होती थी और लोगों का मतभेद केवल इस आधार पर होता था कि आया कानूनी तौर पर यह सत्ता उम्मिया के परिवार ने अधिगत की है, अब्बास के परिवार ने अथवा फातिमा के परिवार ने ? राजसिंहासन और सम्पूर्ण प्रभुता हड़पने वाले किसी महत्त्वाकांक्षी सरदार के पास सत्ता का अन्य कोई स्रोत न होता था। सत्ता की प्राप्ति का प्रयत्न खिलाफत की छाया में ही होता था। (उस समय खिलाफत स्वयं एक छाया थी।) या फिर यह प्रयत्न सत्तासीन खलीफा के नाम पर होता था पिछले कुछ समय से सेलजुक के परिवार ने (जैसे पहले अन्य लोग कर चुके थे) बगदाद के खलीफा के नाम पर एशिया में अपना शासन स्थापित किया। हसन सबा ही, जो सेल्जुक वंश के राजाओं के दरबार में अपनी अपनी आशाएं पूर्ण करने में असफल रहा था और सुलतान व उसके वजीर से असहमत रहा था, काहिरा के खलीफा के समर्थन में आगे आ सका—उसी के नाम पर और कठोरतम पवित्रता का प्रदर्शन करते हुए उसे प्रकटत: काहिरा की खिलाफत और मजहब के लिए अनुयायी मिले, लेकिन वस्तुत: उसे ये अनुयायी अपने लिए और अपनी गैर-कानूनी महत्त्वाकांक्षा के लिए मिले।

अंशत: तिगड़म द्वारा और अंशत: बल प्रयोग द्वारा उसने अलामुत पर कब्जा कर लिया। उसने जिस चाल से सफलता प्राप्त की थी, कबाला के माध्यम से उसे आम जनता में उच्चतर पुष्टि मिल गई। सौभाग्य से अलामुत शब्दों में उसे चालू वर्ष ४८३ की तारीख मिल गई। हसन ने सुलतान मालिकशाह के नाम पर किले के सेनापति मेहदी के विरुद्ध भी वही चाल चली, जो इतिहास की पुस्तकों के अनुसार कार्थेज और अन्य नगरों की स्थापना के समय चली गई थी। उसने ३००० अशरफियां देकर बदले में इतनी भूमि मांगी, जितनी एक बैल की खाल घेर ले। उसने खाल के टुकड़े कर दिए और उनसे किले को घेर लिया। मेहदी, जिसने कुछ समय पूर्व इस्माईलियों को किले से बाहर रखा था और उसके बाद सौदा पट जाने पर उन्हें पुन: प्रविष्ट कर लिया था और जो अपनी ओर से इस खरीद को स्वीकृति न दे रहा था, बलपूर्वक निकाल बाहर किया गया। वह दमागन चला गया। उसके प्रस्थान से पूर्व हसन ने उसे निम्नलिखित शब्दों में किरदुह के किले के सेनापति के नाम एक संक्षिप्त पत्र अथवा हुंडी दी—

"रईस मुसाफिर, अली के वंश जमेहदी को ३००० अशरफियां दे दो—अलामुत किले के मूल्य के रूप में। हजरत और उनका परिवार स्वस्थ रहे। श्रेष्ठ शासक परमात्मा हमें शक्ति प्रदान करे।" मेहदी विश्वास न कर सकता था कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रईस मुसाफिर सदृश व्यक्ति, जो सोल्जुक सम्राटों के सहयोगी के नाते अत्यन्त प्रभावशाली था, हसन सदृश किसी दुस्साहसी की हुंडी की थोड़ी-सी भी परवाह करेगा। इसलिए उसने इस हुंडी का तब तक इस्तेमाल न किया, जब तक जरूरत की वजह से उसके मन में ऐसा करने के लिए उत्सुकता पैदा न हुई, जब उसने यह हुंडी रईस को पेश की, तब उसे बहुत आश्चर्य हुआ कि तुरन्त ३००० अशरफियां दे दी गईं। वस्तुत: रईस हसन सबा के अद्यतम सर्वाधिक निष्ठावान् अनुयायियों में से था। द्वितीय और सर्वाधिक कर्मठ केनी का हुसैन था। उन्होंने उसे सीख दी और मिशनरियों के नाते काम किया—प्रथम ने जवाल में और द्वितीय ने कोहिस्तान में। इन दोनों नामों का अर्थ एक ही है—उच्च भूमि। ये दोनों ईरान के उत्तरी पर्वतीय प्रान्त हैं। हसन ने अपनी राजधानी में किले बनवाए और कुएं खुदवाए। उसने नहर खुदवाई। वह पर्याप्त दूरी से किले के अधोभाग में पानी लाया। उसने आस-पास फलदार वृक्षों के बाग लगवाये और वहां के निवासियों को खेती के लिए प्रोत्साहित किया। इस प्रकार जब वह अपने किले की (उस किले की, जो पूरे रुदबार जिले पर शासन करता था) मजबूती और रक्षा में लगा हुआ था, खेती को प्रोत्साहित करने और रसद की वृद्धि में लगा हुआ था, उसकी चिन्ता और ध्यान और भी अधिक गहराई से अपनी मजहबी और राजनैतिक प्रणाली की स्थापना में लगे थे। यह थी हशीशिनों की विशिष्ट नीति।

एक शासन की स्थापना की जानी थी, जिसके कायदे-कानून बनाये जाने थे और सम्पूर्ण प्रभुता के शक्तिशाली हथियारों, कोष और सैनिकों की कमी असामान्य उपायों से पूरी की जानी थी। बवेक और कर्मठ के खूनी उदाहरणों से इतिहास ने बताया है कि बेवफाई और राजद्रोह के लिए यह कितना खतरनाक है कि वह स्थापित मजहब और सरकार को चुनौती देने का साहस करे। (याद रहे कि बवेक और कर्मठ ने हजारहा लोगों को कत्ल किया था और स्वयं भी अपनी महत्वाकांक्षा के शिकार हो गये थे।) इस्माईली मिशन ने एशिया में जो नगण्य परिणाम प्रदर्शित किये, उनके फलस्वरूप हसन के अपने अनुभव ने उसे सिखाया था कि काहिरा के धर्मसंघ के गुप्त सिद्धान्त के प्रचार का प्रयत्न करना कितना निरर्थक है—तब तक, जब तक इसके नेताओं के पास दिमाग तो हो, लेकिन बहुमत न हो।

फातिमियों के दो सौ वर्ष के साम्राज्य के दौरान, जब तक यह साम्राज्य अफ्रीका में स्थापित रहा और पहले महादिया में और इसके बाद काहिरा में स्थापित धर्मसंघ और फातिमियों के समर्थन के लिए संचालित गुप्त मिशनों की प्रणाली संगठित की गई, वे वस्तुत: अब्बासियों की सत्ता को झटका देने में सफल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रहे, लेकिन अपनी सत्ता का विस्तार न कर सके। बगदाद में उन्होंने सिक्के घड़ने और सार्वजनिक प्रार्थनाएं आयोजित करने का अधिकार प्राप्त कर लिया, लेकिन वे इस अधिकार को केवल एक वर्ष तक के लिए ही अक्षुण्ण रख पाए और जब बसासिरी ने तोगरुल के हथियारों की ताब न लाकर आत्मसमर्पण कर दिया, तब वे इस अधिकार को खो बैठे। इस्माईल के उत्तराधिकारियों के पक्ष में समर्थक जमा करने की आड़ में उन्होंने नास्तिकता और अनैतिकता का प्रचार किया था और इस प्रकार नागरिक समाज के मजहबी और नैतिक बन्धनों को शिथिल किया था। मुआवजे की चिन्ता किये बिना उन्होंने राजसिंहासनों को हिला तो दिया, लेकिन वे न तो उन्हें उलट सके और न स्वयं उन पर बैठ सके। इनमें से कोई भी बात हसन के गम्भीर विचारों से बच न सकी और क्योंकि वह मन्त्रिपद पाने की महत्त्वाकांक्षा की सामान्य लीक पर सफल न हो सका था (सेल्जुक सम्राटों के साम्राज्य में रोल अदा करने के मामले में), बाद में उसने धर्मदूत और राजदूत के नाते अपनी सत्ता के लिए मार्ग प्रशस्त किया और प्रशासन-प्रणाली की अपनी ही योजना बनाई। गुप्त सिद्धान्त का आधार यह था कि "कुछ भी सच नहीं और सब कुछ करने की अनुमति है।" लेकिन यह शिक्षा बहुत कम लोगों को दी जाती थी और इसे अत्यन्त कठोर मजहबपरस्ती और पवित्रता के पर्दे में छिपाया जाता था। इस प्रकार यह गुप्त सिद्धान्त इस्लामवाद के निश्चयात्मक आदेशों द्वारा पूर्णतः समर्थित शासन के अन्धानुकरण के जूए से दिमाग को बांध देता था। सांसारिक आत्मसमर्पण जितना अधिक, कठोर और भक्तिपूर्ण होता था, शाश्वत पुरस्कार और भव्यता उतनी ही अधिक मात्रा में मिलती थी।

अब तक इस्माईलियों के केवल अधिकारी थे और अनुयायी अर्थात् मिशनरी अथवा धर्मदूत, जो गुप्त सिद्धान्त की सब सीढ़ियों में दीक्षित किये जाकर धर्म-प्रचारक तैयार करते थे और रफीक जिन्हें क्रमवार इस सम्प्रदाय के सिद्धान्तों की शिक्षा दी जाती थी। अधिक संख्या ऐसे ही लोगों की थी। हसन की व्यावहारिक और उद्योगशील भावना इस बात को भांप गई कि सुरक्षा और ऊर्जा के साथ महान् उपक्रम करने के लिए एक तीसरे वर्ग की आवश्यकता होगी, जो नास्तिकता और अनैतिकता के रहस्यों में कभी प्रविष्ट न किया जाएगा, जो सब प्रकार की आज्ञाकारिता के बन्धनों को तोड़ डालते हैं, लेकिन अपने से उच्चतर लोगों के हाथों में अन्धे और कट्टरपन्थी हस्तक होते हैं। हसन ने यह भी भांप लिया कि किसी सुसंगठित राजनैतिक दल को केवल अच्छे दिमाग वालों की जरूरत नहीं होती, अपितु हथियारों की भी जरूरत होती है और अधिकारी को न केवल बुद्धिमान् और दक्ष साथियों की आवश्यकता होती है, अपितु निष्ठावान् और कर्मठ एजेंटों की भी उन्हें फिदावी (स्वयंसेवक) का नाम दिया गया। उनका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दृढ़ निश्चय उनके नाम से हो प्रकट हो जाता है। आगे चलकर हम बतायेंगे कि किस प्रकार सीरिया में उनका नाम हशीशिन अथवा असैसिन (अंग्रेजी के इस शब्द का अर्थ हत्यारा होता है) पड़ा। इसी प्रसंग में हम उस अन्धी आज्ञाकारिता और मतान्ध अन्धभक्ति की भी चर्चा करेंगे, जिससे वे फिदावी अनुप्राणित थे। तीन सौ वर्ष पूर्व ट्रांसोक्साना में और उससे भी पूर्व ईसाई नवदीक्षितों और हमारे अपने समय में सुलतान के गुलामों की तरह वे मोवेसे (श्वेत) कहलाते थे अथवा उसी अन्दाज में मुअम्मर (लाल), क्योंकि वे अपने श्वेत वेश के साथ लाल पगड़ियां, बूट अथवा पेटियां धारण करते थे—उसी प्रकार जिस प्रकार हमारे समय में लेबनान के शाह के योद्धा और कुस्तुन्तुनिया में जेनेसरी एवं हरम के अंगरक्षक बोस्तांगी। मासूमियत और खून के रंगों में रंगे—विशुद्ध भक्ति और हत्या की भावनाओं से सराबोर, छुरों से (जो परमाधिकारी की सेवा के समय छीन लिये जाते थे) सन्नद्ध वे उसके अंगरक्षक थे। उसके मारक आदेशों का पालन करते थे। हशीशिनों के इस सम्प्रदाय की महत्त्वाकांक्षा और प्रतिशोध के खूनी हथियार थे।

परमाधिकारी को सिदवा (हमारा मालिक) नाम से पुकारा जाता था। शेख अलजबाल को सामान्यत: शेख नाम से पुकारा जाता था (जिसका अर्थ होता है प्राचीन व्यक्ति अथवा पहाड़ का सर्वोच्च स्वामी)। यह नाम इसलिए पड़ा, क्योंकि इस संघ की व्यवस्था में पर्वतीय क्षेत्रों के पहाड़ों पर कब्जा रखा जाता था—इराक (कोहिस्तान) और सीरिया दोनों में सबसे प्राचीन पर्वतवासी जो अलामुत के पर्वतीय किले में रहता था, डेनियल में वर्णित पूर्वज की भांति सफेद वस्त्र पहनता था। शब्द के सामान्य अर्थ में वह न तो सम्राट् था और न राजकुमार। वह सुलतान, मालिक अथवा अमीर की पदवी भी धारण न करता था, अपितु शेख कहलाता था। आज भी अरब कबीलों के मुखिया और सूफियों व दरवेशों के धर्म संघ के वरिष्ठ व्यक्ति यही पदवी धारण करते हैं। उसकी सत्ता किसी साम्राज्य अथवा जागीर में निहित न थी अपितु बिरादरी अथवा धर्मसंघ के कारण थी। इसी कारण यूरोपियन इतिहास लेखक बड़ी भारी गलती करते हैं, जो हशीशिनों के साम्राज्य को परम्परागत राजवंशों से जोड़ देते हैं। वास्तविकता यह है कि एक संस्था के रूप में यह केवल धर्मसंघ है, जैसे सेंट जॉन के सरदार, ट्यूटानिक सरदार अथवा टैम्पलर। इनमें से अन्तिम—परमाधिकारियों, परमपुरुषों अथवा धर्मदूतों के अतिरिक्त—राजनैतिक हस्तक्षेप और गुप्त सिद्धान्त के मामले में हशीशिनों से कुछ-कुछ मिलते हैं। ये लोग सफेद वस्त्र पहनते थे और इनके माथों पर सलीब का लाल निशान लगा होता था—वैसे ही जैसे हशीशिन लाल कमरबन्द बांधते थे और टोपियां लगाते थे। टैम्पलरों के,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिद्धान्त भी गुप्त थे, जो सलीब की पवित्रता से इनकार करते थे और उसका त्याग कर चुके थे—वैसे ही जैसे अन्य लोग इस्लामवादी आदेशों को मानने से इनकार करते थे और उनका त्याग कर चुके थे। दोनों की नीति का बुनियादी सूत्र यह था कि किलों और उनके समीपवर्ती देश पर अधिकार किया जाए और इस प्रकार आर्थिक अथवा सैनिक साधनों के बिना ही साम्राज्य के अन्दर साम्राज्य कायम किया जाए और राजकुमार के खतरनाक प्रतिद्वन्द्वियों के रूप में राष्ट्रों को अपने अधीन रखा जाए।

किसी देश के समतल भाग पर सदा अधिक पर्वतीय क्षेत्र द्वारा शासन किया जाता है और पर्वतीय क्षेत्र पर क्षेत्र में बिखरे किलों द्वारा तिगड़म अथवा ताकत के जोर पर इनका मालिक बनना और धोखा देकर अथवा भय दिखाकर राजकुमारों को डराना व धर्मसंघ के शत्रुओं के विरुद्ध हत्यारों के हाथों में हथियार देना हशीशिनों का राजनैतिक सूत्र था। उनकी आन्तरिक सुरक्षा के लिए मजहबी फतवों का कड़ाई से पालन किया जाता था—उनकी बाह्य सुरक्षा के लिए किलों और कटारों (छुरों) का इस्तेमाल किया जाता था। धर्मसंघ की विशेष प्रजाओं अथवा अदीक्षितों से केवल यह आशा की जाती थी कि वे इस्लामवादी कर्त्तव्यों का पालन करेंगे—जो अत्यन्त त्यागी-तपस्वी होते थे, उनसे भी इतनी ही आशा की जाती थी कि वे शराब व संगीत से परहेज करेंगे। निष्ठावान् अनुयायियों से यह आशा की जाती थी कि वे अन्धभक्त बनेंगे और अपने छुरों का निष्ठापूर्वक पालन करेंगे। धर्मदूत अथवा दीक्षित दिमाग से काम लेते थे और शेख के आदेश के पालन के लिए हथियारों का इस्तेमाल कर लेते थे। शेख शांतिपूर्वक संचालित प्रभुता का केन्द्र होता था—जीवित-जाग्रत आत्मा की तरह। उनके हृदय और छुरे महत्त्वाकांक्षापूर्ण परियोजनाओं की पूर्ति में काम आते थे।

उस परमाधिकारी के तुरन्त बाद परमपुरुषों का नम्बर आता था। धर्मसंघ की सत्ता तीन प्रान्तों में चलती थी—जबाल, कोहिस्तान और सीरिया में। इन प्रान्तों में शेख के सहायक परमपुरुष कहलाते थे। इनके नीचे दई (धर्मदूत) और सामान्य राजनैतिक दूत होते ये, जिनकी पदवी दीक्षित अधिकारियों के के समान होती थी। रफीक वे कहलाते थे, जो गुप्त सिद्धान्तों में दीक्षा की अनेक सीढ़ियों के माध्यम से अधिकारियों के आदेशों का पालन करते थे। धर्मसंघ के रक्षक योद्धा वफादार कातिल (फिदावी) थे और प्रतीत होता है कि (उम्मीदों वार) नौसिखिये और सामान्य बन्धु थे। इन सात सीढ़ियों पर काम करने वाल अर्थात् शेख (परमाधिकारी), दायलकबीर (पूर्वपुरुष), दाई (अधिकारी), रफीक (बन्धु), फिदावी (एजेंट), लसीक (सामान्य बन्धु) से लेकर अदीक्षित अथवा जनता तक आध्यात्मिक श्रेणीबद्ध समाज की सात संख्यावाली सीढ़ियों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का एक अन्य क्रम भी था, जो अपने आप को विशिष्ट रूप से इस्माईलियों के पूर्वनिर्दिष्ट सिद्धान्तों में दीक्षित करते थे, जिनका सम्बन्ध सात मुखर और सात मौन इमामों से था और अधिक उपयुक्त शब्दों में कहना हो, तो जिनका सम्बन्ध राजनैतिक शक्तियों के विध्वंस की बजाय मतभेद रखने वाले सैद्धान्तिक ढांचे से था। इस व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक पीढ़ी में सात व्यक्ति होते हैं, जो अपने विभिन्न सोपान-क्रम के अनुसार एक-दूसरे से विशिष्ट होते हैं। प्रथम—देवताओं द्वारा नियुक्त इमाम, द्वितीय—उस द्वारा निर्मित अभेद्य हुदशेत, जिसे इस्माईली इसास (आसन) कहते हैं, तृतीय—सुमासा, जिसने हुदशेत से शिक्षा प्राप्त की, जैसे हुदशेत ने इमाम से शिक्षा प्राप्त की थी, चतुर्थ—मिशनरी (दाई), पंचम—मसूनी (मुक्त), जिन्हें गम्भीर प्रतिज्ञा अथवा शपथ (अहद) दिलवाई गई, षष्ठ—मुकेलबी (जिनका स्वभाव कुत्तों से मिलता था), जो मिशनरियों के लिए धर्मान्तरण हेतु उपयुक्त व्यक्तियों को खोजते थे, वैसे ही जैसे शिकारी कुत्ते शिकारियों के शिकार के पीछे भागते हैं और उन्हें दबोच लेते हैं और सप्तम—मुमीनी अर्थात् विश्वासी—जनता। इन दो विभागों की तुलना करने पर हम पाते हैं कि प्रथम विभाग के अनुसार अदृश्य इमाम, जिसके नाम पर शेख जनता से अपना आदेश मनवाने का दावेदार था और द्वितीय विभाग के अनुसार रक्षक, जिसका इस्तेमाल संघ के शत्रुओं के विरुद्ध किया जाता था, दोनों ही अपर्याय थे, लेकिन अन्य बातों में उनके विभिन्न सोपान एक समान थे। अभेद्य परमाधिकारी था, सुमासा पूर्वपुरुष था, बन्धु मुक्त थे, कुत्तों सदृश व्यक्ति सामान्य बन्धु थे, चतुर्थ और सप्तम अर्थात् मजहब के प्रचारक और विश्वासी, धोखेबाज मिशनरी और ठगे गये लोग दोनों विभागों में एक जैसे थे।

ऊपर हमने देखा कि इस्लामवाद के केन्द्र में गुप्त समाजों का प्रथम संस्थापक अब्दुल्ला मैमून (कद्दाह का पुत्र) ने अपने सिद्धान्त के सात सोपान स्थापित किए, जिस कारण और सात इमामों के लिए अपनी सम्मतियों के कारण उसके शिष्यों का उपनाम सप्तमिये पड़ गया। यह उपनाम जो अब तक पश्चिमी इस्माईलियों को दिया जाता था, यद्यपि उन्होंने सोपानों की संख्या सात से बढ़ाकर नौ कर दी थी, अधिक उपयुक्तता के साथ उनकी नई शाखा पर चस्पां कर दिया गया अर्थात् पूर्वी इस्माईलियों अथवा हशीशिनों के नाम, जिनका संस्थापक हसन (साबा का पुत्र) ने न केवल सोपानों की संख्या नौ से दुबारा सात कर दी, अपितु दाइयों अर्थात् मिशनरियों के लिए एक विशिष्ट आचार संहिता तैयार की, जिसमें सात सूत्र थे, जिनका इतना सम्बन्ध शिक्षित किए जाने वालों के क्रमिक शिक्षण से न था, जितना शिक्षकों की आवश्यक योग्यताओं से और ये धर्मसंघ के अनुष्ठान-निर्देश थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रारम्भिक नियम आशनाये रिज़्क (आजीविका की जानकारी) कहलाता था। इसमें मानव समाज सम्बन्धी जानकारी के वे सूत्र सम्मिलित थे, जो दीक्षितों के उपयुक्त विषयों के लिए आवश्यक थे। मिशनरियों में बहु-प्रचलित अनेक मुहावरों का इनसे सम्बन्ध था। उनका अभिप्राय वह न होता था, जो प्रयुक्त किए गए शब्दों से प्रकट होता था। उदाहरणार्थ "बंजर जमीन में मत बोओ," "जिस घर में दीपक जल रहा हो, उसमें मत बोलो" इन वाक्यों का अभिप्राय यह था कि "अयोग्य व्यक्तियों पर अपने शब्द नष्ट मत करो," "किसी कानूनदान की उपस्थिति में अपने शब्द मत बोलो," क्योंकि परखे हुए ज्ञान और खोजी स्वभाव वालों और मूर्खों के साथ उलझना समान रूप से खतरनाक है, क्योंकि मूर्ख किसी सिद्धान्त को गलत समझते हैं और ज्ञानी व अनुसन्धानकर्त्ता उसको निरावरण कर देते हैं। इन दोनों में से किसी भी तरह के व्यक्ति शिक्षक अथवा हस्तक बनने योग्य नहीं होते। ये अन्योक्तिपरक वाक्य और विवेकपूर्ण नियम, जो खोज के किसी भी संयोग से बचने के लिए आवश्यक हैं, हमें अति प्राचीनकाल के एक गुप्त समाज और वर्त्तमान समय के एक प्रतिष्ठित संघ की याद दिलाते हैं, संक्षेप में जिन्हें आप पाइथागोरस के मानने वालों ओर ईसाई पादरियों का नाम दे सकते हैं।

पाइथागोरस के रहस्यपूर्ण वचन, जो हम तक पहुंचे हैं और जिनका विशिष्ट भाव अब समझ में नहीं आता, सम्भवत: उनके सिद्धान्त में सम्मिलित समानार्थक सूत्रों से कुछ अधिक न थे और किसी समाज की विभिन्न योजनाओं के लिए उपयुक्त विषयों के चुनाव के लिए आवश्यक राजनैतिक विवेक ईसामसीह के सिद्धान्तों में उच्चतम पूर्णता को पहुंच चुका था। इस प्रकार पाइथागोरस के अनुयायियों व ईसाई पादरियों में हशीशिनों के साथ एकरूपता है। आचरण का दूसरा नियम तीनिस (विश्वास प्राप्त करना) कहलाता था और उन्हें (दीक्षितों को) शिक्षा दी जाती थी कि वे उम्मीदवारों के रुझानों और आवेगों की प्रशंसा करके उनके दिल जीतें। तीसरी आवश्यक बात यह थी कि जब उनके दिल जीत लिये जायें, तब सावधानियोंकी उन भूलभुलैयों में, जिनका समाधान न हो और अनिश्चितता में, जिसे दूर न किया गया हो, सकारात्मक मजहबी आदेशों और कुरान की बेहूदगियों से सम्बन्धित हजारों सन्देह और प्रश्न खड़े कर दिये जायें।

चौथी सीढ़ी पर शपथ (अहद) आती थी, जिससे अनुचर बंध जाता था। यह शपथ बहुत गम्भीरता से ली जाती थी—अनुल्लंघनीय मौन और समर्पण के बीच—कि वह अपने से उच्चतर अधिकारी को छोड़कर अन्य किसी के समक्ष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपना सन्देह प्रकट नहीं करेगा और वह आंखें मूंदकर उसके आदेशों का पालन करेगा। उसे छोड़कर अन्य किसी के आदेशों का पालन न करेगा। पांचवें नियम तीदलिस के अनुसार उम्मीदवारों को शिक्षा दी जाती थी कि किस प्रकार उनके सिद्धान्त और सम्मतियां मजहब और राज्य में महत्तम लोगों के सिद्धान्तों और सम्मतियों से मेल खाते हैं। ऐसा इसलिए किया जाता था, ताकि उन्हें महान् और शक्तिशाली लोगों के उदाहरणों से आकृष्ट और उत्साहित किया जाय। छठा नम्बर तेसीस (पुष्टि) का था, जिसमें पूर्वकथित बातों की आवृत्ति होती थी, ताकि शिक्षा ले रहे व्यक्ति के विश्वास को पुष्ट और सुदृढ़ किया जा सके। इसके बाद सातवां नम्बर तीविल (लाक्षणिक निर्देश) का था, जो नास्तिकता के निर्देश का अन्तिम क्रम था। तीविल में, जो तेनसील (दैवी जगत् का शाब्दिक भाव) के विपरीत लाक्षणिक व्याख्या है, गुप्त सिद्धान्त का मुख्य सारांश था, जिससे बातनी (गोपनीय) को जाहिरी (प्रकट उपासना) में विश्वास रखने वालों से अलग किया जाता था। व्याख्या और परिभाषा की इस कुटिलतापूर्ण पद्धति द्वारा, जो हमारे समय में प्रायः बाइबल पर भी लागू की जाती है, विश्वास और कर्त्तव्य की बातें केवल लाक्षणिक होकर रह जाती हैं; बाहरी रूप केवल सांयोगिक, केवल आन्तरिक भाव आवश्यक रह जाता था, मजहबी आदेशों अथवा नैतिक कानूनों का पालन करना अथवा पालन न करना समान रूप से तुच्छ। फलस्वरूप सब कुछ सन्दिग्ध था और कुछ भी निषिद्ध न था। यह हशीशिनों के दर्शन का चरम बिन्दु था, जो बहुमतीयों के संस्थापक द्वारा ग्रहण न किया जाता था, अपितु दीक्षितों में से कुछ के लिए और मुख्य नेताओं के लिए सुरक्षित रहता था, जबकि आम जनता इस्लामवाद के उपदेशों के कठोरतम पालन के जूए के नीचे रखी जाती थी। उसकी सबसे बड़ी नीति यह थी कि वह उसके कुफ्र और अनैतिकता के सिद्धान्त को आकार दे—शासितों के लिए नहीं, अपितु केवल शासकों के लिए। शासितों पर कठोर शासन करके और उन्हें अन्ध वशंवद बनाकर एवं शासकों से अन्धे और बेलगाम तानाशाही आदेश दिलवाकर वह दोनों से अपनी महत्त्वाकांक्षा पूर्ण कराने का लक्ष्य प्राप्त करता था—शासितों से अपने आवेगों का त्याग करवाकर और शासकों से उनके आवेगों की पूर्ण तृप्ति द्वारा। अध्ययन और विज्ञान केवल थोड़े-से लोगों के लिए थे, जो दीक्षित थे। अपने लक्ष्यों की तात्कालिक प्राप्ति के लिए संघ को मस्तिष्कों की आवश्यकता कम थी, हथियारों की आवश्यकता अधिक थी। वह कलम का इस्तेमाल न करता था, अपितु छुरे का, जिसकी नोक सब ओर थी, लेकिन मूठ परमाधिकारी के हाथ में।

अभी हसन साबा ने अलामुत के किले पर कब्जा किया ही था और किले को गोला-बारूद भी सप्लाई नहीं किया था कि एक अमीर ने, जिसे सुलतान ने रुद-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बार जिले की जागीर दे रखी थी, सारे मार्ग और रसद पहुंचाने के साधन काट डाले। किले के निवासी किले को छोड़ने ही वाले थे कि हसन ने यह कहकर उनमें नया साहस भरा कि वहां शीघ्र ही सौभाग्य स्तन पर मुस्करायेगा। इस पर वे वहां बने रहे और उसके बाद से किले का नाम सौभाग्य निवास पड़ गया। सुलतान मालिकशाह, जिसने पहले इस्माईलियों के प्रयत्नों को तिरस्कार से देखा था, अन्ततः आन्तरिक शान्ति स्थापित करने को उद्यत हो गया। शान्ति को हसन के राजद्रोह से खतरा था। उसने अमीर अर्जलन्तश को आदेश दिया कि वह सबा के पुत्र को उसके साथियों समेत नष्ट कर डाले। यद्यपि उसके साथ केवल सत्तर अनुयायी थे और थोड़ी-सी रसद भी थी, फिर भी उन्होंने साहस के साथ अपनी रक्षा की—तब तक, जब तक उसके सहायक अबूअली ने जो मिशनरी के नाते कास्विन में सैनिक और अनुयायी जमा कर रहा था, तीन सौ व्यक्तियों को भेजा, जिन्होंने रात के समय सेना से सम्पर्क स्थापित किया और जो किला घेरने वालों पर टूट पड़े। उसने उन्हें भागने पर विवश कर दिया। इस प्रतिरोध से सुलतान मालिकशाह मानो नींद से जागा और गहरी सोच में पड़ गया। उसने अपने विश्वस्ततम साथियों में से एक किसिल सरीक को खुरासान के सैनिकों के साथ हसन सबा के मिशनरी हुसैन केनी के विरुद्ध लड़ने के लिए भेजा। हुसैन केनी कोहिस्तान के सब प्रान्तों में राजद्रोह के सिद्धान्तों का प्रसार कर रहा था। हुसैन मोमिनाबाद जिले में स्थित एक किले को लौट गया, जहां उसे भी उतना ही सीधा कर दिया गया, जितना अलामुत में हसन को कर दिया गया था। हसन ने सोचा कि अब उसके लिए निर्णायक चोट करने का समय आ गया है अर्थात् चिरकाल से पकाई जा रही हत्या की योजना का समय। उसने सोचा कि अब वह छुरे अथवा जहर के सन्नद्ध उपाय से अपने सर्वाधिक शक्तिशाली शत्रुओं से छुटकारा हासिल कर सकता है। सेल्जुक साम्राज्य का वजीर निजामुल्मुल्क हसन के फिदावियों अर्थात् भक्तों के छुरे का प्रथम शिकार हुआ। निजामुल्मुल्क अपनी बुद्धि और शक्ति के कारण महान् था। उसने सेल्जुक परिवार के तीन प्रथम राजाओं तोगरुला, अलपरसलान और मालिकशाह के अधीन काम किया। यह वही निजामुल्मुल्क था, जिसने अपने प्रारम्भिक यौवन में इमाम मुसाविक के संघ में हसन से प्रतिद्वन्द्विता की। बाद में उसने मालिकशाह के दरबार में औद्योगिक क्षेत्र में वजीर की गरिमा और सम्राट् की रू-रिआयत को लेकर हुए विवादों में भी हसन से टक्कर ली और अन्ततः वह सत्ता और शासन के लिए अलामुत के मालिक से खुल्लमखुल्ला भिड़ गया। वह सेल्जुक साम्राज्य का शक्तिशाली सहारा और इस्माईलियों के संघ का प्रथम महान् शत्रु था। उसके पतन और कुछ समय बाद मालिकशाह का देहान्त (जिसका सन्दिग्ध कारण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जहर था) हत्या के भयानक संकेत थे। इनकी गूंज सारे एशिया में हुई। बाद में हत्या करना हसन की नीति बन गई और वह प्लेग की तरह समाज के सब वर्गों से अपने शिकार चुनता था।

यह हत्याओं और प्रतिहिंसाओं की भयपूर्ण अवधि थी, जो नये सिद्धान्त के घोषित शत्रुओं और मित्रों दोनों के लिए समान रूप से विध्वंसक थी। घोषित शत्रु हशीशिनों के छुरों के शिकार होते थे और घोषित मित्र राजकुमारों की तलवारों के नीचे आते थे। अब राजकुमारों को उन खतरों का अहसास हुआ, जो हसन सबा के सम्प्रदाय द्वारा सब राजसिंहासनों के लिए पैदा कर दिए गए थे। बाकायदा घोषणा करके शासन के पक्षधरों और समर्थकों के प्राण लिए गए और उन्हें फांसी की सजा दी गई। प्रथम इमामों और मुल्लाओं ने स्वेच्छया अथवा किसी के आदेश पर फतवे और फैसले जारी किए, जिनमें यह कहकर इस्माईलियों को निन्दित और अभिशप्त किया गया कि वे राजसिंहासन और धर्मवेदी के सर्वाधिक खतरनाक शत्रु हैं, पक्के अपराधी और उद्दंड नास्तिक हैं। इन फतवों और फैसलों के अधीन इस्माईलियों को या तो खुले युद्ध में या कानून से अरक्षित, काफिर, पृथक्तावादी और विद्रोही व्यक्तियों के रूप में न्याय के प्रतिशोधपूर्ण हाथों में सौंप दिया जाता था। इस्लाम के प्रथम नैतिकतावादियों में से एक और आचारशास्त्र के प्रसिद्धतम ईरानी अध्यापक इमाम गजाली ने एक निबन्ध लिखा, जिसका निशाना विशिष्ट रूप से गुप्त सिद्धान्तों को मानने वाले थे। इस निबन्ध का शीर्षक था—नगण्य अर्थात् अपवित्र मुलाहिद लोगों के जिनपर खुदा का कहर हो, सिद्धान्त के समर्थकों की मूर्खता पर। इस निबन्ध के 'फतवों के मोती" शीर्षक भाग में, जो कानूनी फैसलों का प्रसिद्ध संग्रह है, कोहिस्तान के अपवित्र (मुलाहिद) लोगों की उन्हीं वाक्यों में निन्दा की गई है, जिन प्राचीन शब्दों में इमाम अबी यूसुफ और इमाम मुहम्मद ने कर्मठियों की निन्दा की थी और उनकी जिन्दगियों और सामान को सब मुसलमानों के खुले शिकार के लिए फेंक दिया गया था। "संगम" (मुल्तकतह) और "फतवों का संग्रह" (खजानतुल फतावी) में मुलाहिदों (अपवित्र लोगों) के पश्चात्ताप को भी पूर्णतः अवैध और असम्भव कहकर अस्वीकृत कर दिया गया है, यदि वे पहले मिशनरी रह चुके हों और उन्हें दिए गए प्राणदण्ड को कानूनी बताकर उसकी सिफारिश की गई है—यदि वे अपने विचार बदल लें और अपनी गलतियां छोड़ दें, तो भी, क्योंकि कस्में खाना तो उनके सूत्रों का हिस्सा है और कामुक नास्तिकों के सुधार की कोई आशा नहीं। इस प्रकार दोनों पक्षों के मन एक-दूसरे के विरुद्ध कटु थे, सरकारें और संघ एक-दूसरे के विरुद्ध युद्धरत थे और हत्यारों के छुरे व जल्लाद की तलवार से इंसानी सिरों की फसल की अच्छी कटाई होती थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उच्चतम पद पर प्रतिष्ठित लोग सबसे पहले गिराये जाते थे। अमीर बुरजाक, जिसे तुगरुलबेग ने बगदाद का प्रथम गवर्नर नियुक्त किया था, और अर्श निजामी, जिसे सत्तारूढ़ सेल्जुक सम्राट् वर्क्यारोक के चाचा ने अपनी पुत्री विवाह में दी थी, ऐसे ही लोगों में से थे। इराक और खुरासान के क्षेत्रों को लेकर दो भाइयों वर्क्यारोक और मुहम्मद में हुए गृह-युद्ध ने हसन की महत्त्वाकांक्षापूर्ण योजनाओं के लिए मार्ग प्रशस्त किया और आन्तरिक वैमनस्य के खूनी केन्द्र में हत्या और राजद्रोह का जहरीला पौधा फूला-फला। धीरे-धीरे उसके पक्षधर इराक ही नहीं, इस्फहान के भी सुदृढ़तम किलों के मालिक बन बैठे। इन किलों का नाम शाह दर (सम्राट् का मोती) था और इनका निर्माण मालिकशाह ने करवाया था। एक बार मालिकशाह रोमन सम्राट् के कुस्तुन्तुनिया स्थित राजदूत के साथ इस स्थान पर शिकार खेल रहा था कि एक शिकारी कुत्ता भटकता हुआ अगम्य पर्वतीय अधित्यका में आ गया, जिस पर बाद में यह किला बना। राजदूत ने कहा कि उसके मालिक के क्षेत्रों में किलेबन्दी के इतने प्राकृतिक लाभ देने वाले किले की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए और इस स्थान पर बहुत पहले एक किला बन जाना चाहिए था। सुलतान ने राजदूत के सुझाव और स्थिति से लाभ उठाया और किला बन गया, जिसे इस्माईलियों ने इसके सेनापति के हाथों से छीन लिया। तभी से यह मुहाविरा प्रचलित हो गया कि "जिस किले की स्थिति की ओर कुत्ता संकेत करे और कोई काफिर जिसका सुझाव दे, उससे सत्यानाश ही होगा।"

"सम्राट् का मोती" के अतिरिक्त उन्होंने इस्फहान के समीप दरकुल और खलेनियन किलों पर भी कब्जा कर लिया। खलेनियन का किला नगर से पांच फरसांग दूर था। अभार के समीप वस्तमकोह के किले पर कब्जा करने के अलावा फारस और कोहिस्तान के बीच तम्बूर और खलोखान किले भी कब्जे में ले लिए गए। कोनिस प्रान्त में दमगान, फिरुसकोह और किर्दकोह के किलों पर भी कब्जा हो गया और अन्त में कोहिस्तान के तब्स, केन, तून एवं मुमीनाबाद जिले के अनेक अन्य किले भी कब्जे में ले लिए गए। हसन के भतीजे अबुलफतह ने अजदहान पर कब्जा कर लिया और किया बुजुर्ग-उम्मीद ने लमसीर को अपने कब्जे में ले लिया। अबुल फतह और किया बुजुर्ग-उम्मीद के साथ मिशनरियों के नाते रईस मुसाफिर और हुसैन केनी भी थे। ये सिद्धान्त के ओजस्वी प्रवर्त्तक थे और हसन सबा की महानता के समर्थक थे। ये हसन सबा के घनिष्ठ मित्र और विश्वासपात्र थे, जैसे अबूबकर, उमर, उस्मान और अली हजरत मुहम्मद के घनिष्ठ मित्र और विश्वासपात्र थे। अलामुत और बस्तमकोह को छोड़कर इन किलों पर इस्माईलियों का कब्जा जहादियों द्वारा यरूशलम पर कब्जे के एक वर्ष बाद हुआ। अलामुत और वस्तमकोह पर इस्माईलियों का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कब्जा उससे दस वर्ष पूर्व ही हो चुका था। ईसाइयत और कुफ्र—पवित्र योद्धाओं के सलीब और हशाशिनों का छुरा—दोनों ने एक ही समय में मिलकर मुहम्मदी पंथ और राजतन्त्रों के विध्वंस का षड्यन्त्र रचा।

चिरकाल तक यूरोप हशीशिनों को जिहादियों द्वारा दिए गए विवरण से ही जानता रहा। हाल ही के इतिहास लेखकों ने सीरिया में उनके प्रकट होने का जो समय लिखा है, वह उनके प्रकट होने के वास्तविक समय से बाद का है। हां, फिलस्तीन में वे जिहादियों के साथ ही प्रकट हुए, क्योंकि ईसवी सन् की बारहवीं शताब्दी के प्रथम वर्ष में अमेज़ा का राजकुमार जनाहु-द्दौलत उनके छुरों का शिकार हो चुका था, जब वह कुर्दों के किले हसन-अल-कुर्द की रक्षा के लिए जा रहा था, जिसे काउंट सेंट जिलस ने घेर लिया था। इससे चार वर्ष पूर्व तीन ईरानी हत्यारों ने उसके महल में उस पर आक्रमण किया था, जब वह अपनी इबादत (प्रार्थना-उपासना) की तैयारी कर रहा था। अलप्पो के राजकुमार रिज़वान पर सन्देह हुआ कि इस आक्रमण की योजना उसी ने बनाई। रिज़वान जनाहुद्दौलत का राजनैतिक विरोधी था और हशीशिनों का परम मित्र था। हशीशिनों ने अपने दूतों में से एक के माध्यम से उसे अपने साथ मिलाया था। वह चिकित्सक था और ज्योतिषी भी और इस प्रकार उसमें इस बात की दोहरी योग्यता थी कि वह संघ के झूठे सिद्धान्त की शरण लिए बिना अपने आपको और दूसरों को धोखा दे सके।

हत्या के प्रथम असफल प्रयत्न के २४ दिन बाद इस व्यक्ति की मृत्यु हो गई, लेकिन संघ के खूनी विचार उसके साथ न बुझे। उसका स्थान एक ईरानी सुनार ने लिया, जिसका नाम अबू ताहिर असेग था, जिसने अलप्पो के राजकुमार रिज़वान को खूनी कृत्यों के लिए भड़काया। यह सरदार, जिसकी जिहादियों के साथ लगातार शत्रुता रही और उसके भाई दमिश्क के राजकुमार दोकक ने बातनी अथवा हशीशिनों के प्रवास अथवा उपनिवेशन का समर्थन किया, क्योंकि वह उनके सिद्धान्त से सहमत था। इसका कारण यह था कि वह एक बुरा मुसलमान अथवा स्वतन्त्र विचारक था। उसने उनके साथ गहरी मित्रता की और ऐसा करते समय वह अपने कुफ्र व संकुचित दृष्टिकोण वाली नीति पर चलते समय जनता एवं भावी सन्तानों का हित भूल गया। एक सुदृढ़ स्थान सरमीन अबुलफतह का निवास-स्थान बना। (सरमीन अलप्पो के दक्षिण में एक दिन में तय की जा सकने वाली दूरी पर था।) अबुलफतह हसन सबा का भतीजा था। हसन सबा सीरिया में उसका पूर्वपुरुष था—वैसे ही जैसे कोहिस्तान, कोमिश और इराक में हुसैन केनी, रईस मुज़फ्फर और बुजुर्ग-उम्मीद उसके पूर्वपुरुष थे। कुछ वर्ष बाद जब अपामिया के निवासियों ने अपने मिस्री गवर्नर खलफ के विरुद्ध सरमीन के सेनापति अबू ताहिर असेग की सहायता मांगी, तब उसने उसकी हत्या करवा दी और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अलप्पो के राजकुमार रिजवान के नाम पर शहर पर कब्जा कर लिया। उसने किले पर अपना कब्जा बनाए रखा। लेकिन वह तानक्रेद का प्रतिरोध न कर सका। शहर ने उसके समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया और वह अपने वचन के विपरीत अबू ताहिर को बन्दी बनाकर अन्तियोक ले गया। उसने रक्षाशुल्क मिलने पर ही उसे रिहा किया। अरबी इतिहास लेखक कमालुद्दीन ने इस कारण तानक्रेद पर वचनभंग का अभियोग लगाया है और दूसरी ओर जहादों के ईसाई इतिहास लेखक एक्स निवासी अलबर्ट ने उसे इस बात के लिए दोषी ठहराया है कि उसने ऐसे दुष्ट गुंडे को जीवनदान दिया। लेकिन तानक्रेद ने उसके साथियों को, जिनके जीवन के बारे में कोई समझौता न हुआ था, खलफ के पुत्रों के प्रतिशोध के हवाले कर दिया और अबुलफतह स्वयं यातना के क्रोध के फलस्वरूप इस संसार से विदा हो गया। इसके शीघ्र बाद तानक्रेद ने हशीशिनों से कफ़लाना का किला हथिया लिया।

अबू तहर ने अपने संरक्षक रिज़वान के पास लौटने के बाद हत्या की योजनाओं में और अधिक प्रभावशाली रोल अदा किया। अबू हर्ब ईसा (अर्थात् यशू, युद्धों का पिता) जो खोजन्द का एक धनी व्यापारी था और बातनी का पक्का शत्रु था, जिसने उन्हें घायल करने के लिए बड़ी राशियां व्यय की थीं, एक धनी कारवां के साथ अलप्पो पहुंचा। इस कारवां में ५०० ऊंट थे। खुरासान की सीमाओं से रई का निवासी एक हशीशिन, जिसका नाम अहमद था, जो नासिर का पुत्र था, उसके साथ हो लिया। वह इस अवसर की प्रतीक्षा में था कि उसकी हत्या करके अपने भाई के खून का बदला ले, जो अबू हर्ब की प्रजा द्वारा पहुंचाई गई चोटों का शिकार हो गया था। अलप्पो पहुंचने पर हत्यारे ने अबू तहर और उसके संरक्षक रिजवान से भेंट की, जिसे उसने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए शीघ्र ही अपनी ओर मिला लिया, क्योंकि लूट की सम्पत्ति और हशीशिनों से हर्ब की सुविदित शत्रुता ने उसे प्रतिशोध के लिए निमन्त्रित किया। अबू तहर ने अपनी योजना पर अमल के लिए हशीशिनों और रिजवान को रक्षक दिए। एक दिन जब अबू हर्ब अपने गुलामों से घिरा अपने ऊंट गिन रहा था, हत्यारों ने उस पर आक्रमण किया, लेकिन पूर्व इसके कि वे अपने शिकार के हृदय को छलनी करते, वे सब बहादुर और वफादार गुलामों द्वारा पहुंचाई गई चोटों के शिकार हो गए। इन गुलामों ने अपने मालिक की रक्षा के लिए अपने साहस और लगाव का परिचय दिया। सीरिया की शहजादी ने, जिसे अबू हर्ब ने इस बात की सूचना दी, आतिथ्य के इस कलंकपूर्ण भंग के लिए रिजवान की बहुत निन्दा की। रिजवान ने यह झूठ बोलकर छुटकारा हासिल किया कि उसका इस मामले में कोई हाथ नहीं। इस प्रकार जहां एक ओर दुनिया ने उसके कृत्य की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भयानकता को महसूस किया, उसे उस सार्वजनिक तिरस्कार का भी सामना करना पड़ा, जो सब झूठे लोगों के भाग्य में होता है। इस्माईलियों के विरुद्ध अलप्पो के निवासियों के प्रतिदिन बढ़ते हुए रोष से बचने के लिए आबू तहर अपने खूनी साथियों के पास वापस अपने देश में पहुंच गया।

जैसे अपामिया के विरुद्ध बातनियों का अभियान विफल रहा, वैसे ही शिजर पर उनका आक्रमण असफल रहा। बातनी चाहते थे कि वे शिजर को मोनकद के परिवार से छीन लें और अपने अधिकार में कर लें। जब इस किले के निवासी ईस्टर समारोह के सिलसिले में ईसाइयों के मेले भाग लेने शहर में गए हुऐ थे, हशीशिनों ने इस पर अधिकार कर लिया और मुख्य द्वार पर मोरचाबन्दी कर ली। नगरवासियों के लौटने पर पत्नियों ने रात के समय खिड़कियों के रास्ते रस्सों से उन्हें ऊपर खींच लिया और हशीशिनों को निकाल बाहर किया।

इसके शीघ्र बाद मुसल का शहजादा मैंदूद जब दमिश्क में सहभोज के एक दिन जामा मस्जिद के आंगन में शहर के शहजादे तुग्तगीन के साथ टहल रहा था, तब वह उनके छुरों का शिकार हो गया।

एक हशीशिन ने उसे छुरा घोंप दिया, जिस पर तुरन्त उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया। इसी वर्ष अलप्पो के शहजादा रिजवान का देहान्त हो गया। वह इस्माईलियों का महान् रक्षक था और अपनी रक्षा व अपनी सत्ता के विस्तार के लिए उनकी तलवारों और छुरों का इस्तेमाल करता था। उसकी मृत्यु उनकी सत्ता के प्रारम्भ का चिह्न था। नपुंसक लूलू ने, जिसने रिजवान के पुत्र १६-वर्षीय युवक अकरास के साथ सरकार चलाई अपनी, सत्ता की शुरुआत ही सब बातनियों की हत्या के साथ की। ये हत्याएं कानूनी ढंग से कम की गईं—अन्धाधुन्ध हत्याकाण्ड के रूप में अधिक।

कम से कम सौ पुरुष, स्त्रियां और बच्चे टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए और लगभग दो सौ जीवित जेल में डाल दिए गए। अबुल फतह—वह नहीं, जिसे खलफ के पुत्रों ने यातनाएं दे-दे कर मार डाला था, अपितु सुनार आबू ताहिर के पुत्र की, जो उसके ईरान लौटने पर सीरिया में हशीशिनों के मुखिया के नाते उसका उत्तराधिकारी बना, भी उतनी ही भयानक दशा हुई (जिसका वह पात्र था) जो उसके नामराशि की हुई थी। इराक की ओर अभिमुख उसके द्वार पर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए, उसके अंग जला दिए गए, लेकिन उसका सिर प्रदर्शन के लिए सीरिया में घुमाया गया। ज्योतिषी के भाई दई इस्माईल को, जिसने रिजवान के साथ अपने और अपने सम्प्रदाय के अच्छे सम्बन्ध स्थापित कर लिए थे, अपने प्राणों से इसका मूल्य चुकाना पड़ा, अनेक इस्माईलियों को दीवार के ऊपर से खाई में फेंक दिया गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईरान से नए-नए आए मिशनरी दिमलातश का पुत्र हसामुद्दीन जन रोष से डरकर राका भाग गया, जहां उसका देहान्त हो गया। अनेक अन्य लोगों ने भी भागकर प्राण बचाए और वे सीरिया के नगरों में बिखर गए। कुछ अन्यों ने जो संघ के घातक सन्देह से बच निकले, अपने भाइयों की निन्दा की और उनकी हत्या कर डाली। उनके खजाने खोज लिए गए और जब्त कर लिए गए। उन्होंने अनेक ढंगों से और खून-खराबा करके अपने पर किए गए अत्याचारों का बदला लिया। बगदाद के खलीफा द्वारा दमिश्क के तुग्तगीन अतावेग को दिए गए साक्षात्कार में एक के बाद एक तीन षड्यन्त्रकारियों ने खुरासान के गवर्नर अमीर अहमद वल पर आक्रमण किया। सम्भवत: उन्होंने गलती से उसे अतावेग समझ लिया। वे तीनों अमीर के साथ गिर पड़े। वे तीनों छुरों के लक्ष्य थे। अमीर तो वस्तुत: उनका जानी दुश्मन था और कई बार उनके किलों को घेर चुका था। प्रान्तों के गवर्नर—शान्ति सुव्यवस्था की रक्षा के लिए राज्य के मुख्य उपकरण—उनके स्वाभाविक शत्रु थे और इस नाते अन्य सबकी अपेक्षा अधिक उनके छुरों के लक्ष्य थे। अलप्पो का गवर्नर वेदियाई और उसका एक पुत्र उनका शिकार हो गया। उक्त पुत्र अमीर इलगासी के दरबार में जा रहा था। उसके अन्य पुत्रों ने दो हत्यारों को चीर डाला, लेकिन तीसरा झपट कर आगे आया और उसने उनमें से एक पर, जो पहले ही घायल था, घातक आक्रमण किया। उसे पकड़ लिया गया और शहजादा तुग्तगीन और शहजादा इलगासी के समक्ष लाया गया। उसे केवल कैद की सजा दी गई, लेकिन उसने डूब कर मरने की इच्छा प्रकट की।

अगले वर्ष इलगासी को अलप्पो में इस्माईलियों के मुखिया अबू मुहम्मद से एक सन्देश मिला, जिसमें प्रार्थना की गई थी कि शरीफ का किला उसके कब्जे में दे दिया जाए। इलगासी ने उसकी सत्ता से डरकर झूठमूठ कह दिया कि वह ऐसा करने को तैयार है, लेकिन उसकी सहमति लेकर दूत के लौटने से पूर्व ही अलप्पो के निवासियों ने दीवारें ध्वस्त कर दीं, खाइयां भर दीं और किले को शहर के साथ मिला कर एक कर दिया। इब्न खश्शाव को, जिसने यह प्रस्ताव इसलिए रखा था कि किले पर कब्जे से इस्माईलियों की शक्ति न बढ़ जाये, अपने खून से अपने प्रस्तावों का मूल्य चुकाना पड़ा।

कुछ वर्ष बाद उन्होंने बेतलाहा किले के कब्जे के लिए दमिश्क के प्रसिद्ध शहजादे नूरुद्दीन से इसी आशय की प्रार्थना की, जो प्रकटत: उसी प्रकार स्वीकृत कर ली गई और उसी तिगड़म से निरर्थक बना दी गई, क्योंकि नूरुद्दीन की गुप्त उकसाहट पर नगर-निवासियों ने इस्माईलियों को मजबूत आधार बनाने से रोकने के लिए तुरन्त ही किलेबन्दियों को नष्ट करना प्रारम्भ कर दिया। संघ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शहजादों से इतना डर गया कि वे उन्हें अपने देशों के मजबूत स्थान देने से इनकार करने का साहस न जुटा पाये और उन्होंने इस बात को तरजीह दी कि उक्त स्थानों को हशीशिनों की सत्ता और सम्पूर्ण प्रभुता के हवाले करने की बजाय उन्हें नष्ट कर दिया जाये।

ईरान में भी उनके प्रतिशोध ने सर्वाधिक प्रसिद्ध व्यक्तियों को अपना लक्ष्य बनाया। बड़े नजीर निजामुलमुल्क का पुत्र फखरुलमुल्क अबुलमुसाफिर अली, जो अपने पिता से मिले पद पर सुल्तान मुहम्मद और सन्दजार के शासन काल में बैठा था और योग्यता व परिश्रम से काम करता रहा था और जिसे विरासत में पद के साथ हशीशिनों से घृणा भी मिली थी, और मिकेल का पुत्र, तुगरुल कामाई, सन्दजार के भाई का दादा, जो सेल्जुक साम्राज्य का सत्तारूढ़ सुलतान था, ये सबके सब हत्या के लक्ष्य बनाये गए। ये पश्चाद्वर्ती लोगों के लिए खूनी सबक था, जिन्हें सबा ने इनसे भी बड़े खतरों का डर दिखाकर चेतावनी दी। उसने इस बात को अधिक व्यावहारिक समझा कि भावी खतरे से अपने शक्तिशाली शत्रुओं को बार-बार रोका जाए। उसने उन्हें आतंक द्वारा दुर्बल बनाने को तरजीह दी —बजाय इसके कि बार-बार की हत्याओं से प्रतिशोध की घटनाओं में व्यर्थ ही वृद्धि की जाये। उसने सुलतान के एक गुलाम से लाभ उठाया, जिसने सो रहे सुलतान के सिर के समीप वाली भूमि पर अपना छुरा खुभो दिया। जागने पर जब सुलतान ने घातक हथियार पर नजर डाली, तो वह आतंकित हो गया, लेकिन उसने अपना भय प्रकट न होने दिया। कुछ दिन बाद परमाधिकारी ने संघ की शैली में उसे पत्र लिखा, जो उनकी कटारियों की तरह छोटा और चुभने वाला था। पत्र में लिखा था कि 'यदि हम सुलतान के शुभचिन्तक न होते, तो हम अपना छुरा भूमि में घोंपने की बजाय उसके सीने में घोंप देते।"

सन्दजर, जिसने कोहिस्तान में इस्माईलियों के किलों के विरुद्ध कुछ सैनिक भेजे थे, घेरा डालने की इस चेतावनी के बाद कुछ अधिक डर गया, क्योंकि उसका भाई मुहम्मद, जिसने इराक, अलामुत और लमसिर में इस्माईलियों के दो सुदृढ़तम किलों के अताबेग नुश्तगीन शरगर द्वारा एक वर्ष से अधिक समय तक घेरे जाने के लिए कारण प्रस्तुत किए, ठीक उस समय मर गया, जब वे परम संकट में पड़ जाने के बाद आत्मसमर्पण करने ही वाले थे। यह मृत्यु हशीशिनों के बहुत अनुकूल पड़ी। यह घटना उनकी नीति के कारण तो घटी ही थी, संयोग का भी इसमें उतना ही हाथ था। इस नीति के अन्तर्गत छुरे पर तो विश्वास किया ही जाता था, जहर पर भी उतना ही विश्वास किया जाता था। इस घटना से सावधान होकर सन्दजर ने तीन शर्तों पर इस्माईलियों से सुलह करनी चाही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्रथम—वे अपने किलों की नई किलेबन्दियां न करेंगे, द्वितीय—वे कोई हथियार अथवा गोला-बारूद न खरीदेंगे और तृतीय—वे और अधिक घर्मान्तरण न करेंगे। लेकिन क्योंकि कानूनदान जिन्होंने, जिन्होंने संघ की अपवित्रता की खुली निन्दा की थी और उसके लिए संघ के अनुयायियों को उत्पीड़ित करने के लिए जोरदार शब्दों में आवाज उठाई थी, उनके साथ किसी समझौते अथवा सुलह के लिए तैयार न थे, आम जनता ने सुलतान पर सन्देह करना प्रारम्भ कर दिया कि वह उनके (संघ वालों के) अपवित्र सिद्धान्तों का पक्षधर है। इस सबके बावजूद हसन और सन्दजर में सुलह हो गई और इस्माईलियों ने किदकोह जिले में सन्दजर को न केवल सब शुल्कों और चुंगियों से छूट दे दी, अपितु कूमियों के राजस्व का एक भाग भी संघ की वार्षिक पेन्शन के रूप में उनके नाम कर दिया। इस प्रकार हत्यारों का यह समाज शक्ति और सत्ता की दृष्टि से प्रतिदिन बढ़ता गया।

लेकिन सन्दजर ने हशीशिनों के प्रति सहिष्णुता के संकेत राज्यारोहण के बाद ही प्रदर्शित न किए थे, अपितु उससे १२-१४ वर्ष पूर्व ही प्रारम्भ कर दिए थे। खुरासान से इराक तक की अपनी यात्रा के दौरान वह रईस मुसाफिर दमगन से मिलने गया, जो अपनी उम्र और प्रभाव के कारण आदरणीय था और जैसा हम पहले ही देख चुके हैं, जिसने अपने आपको हसन सावा का अनुयायी घोषित कर दिया था और तिगड़म से उसके लिए अमीर डेविड हबशी के खजाने हासिल कर लिए थे। कुछ अधिकारियों ने उनकी वापसी का प्रस्ताव रखा, लेकिन मुसाफिर के यह कहने पर कि उसने इस स्थान के निवासियों को सुलतान की निजी प्रजा समझकर सदा मेहरबानियों से लादा है, हसन सावा ने उस पर सम्मानसूचक पदार्थों की वर्षा की। इस प्रकार नये सिद्धान्त के पिता के रूप में सम्मानित और प्रतिष्ठित होकर रईस मुसाफिर का १०१ वर्ष की उम्र में देहान्त हुआ।

हसन सावा अपने अत्यन्त निष्ठावान् शिष्यों और निकटतम सम्बन्धियों के बाद तक जीवित रहा। ये वे लोग थे, जिनके बारे में प्रतीत होता था कि वे मैत्री बन्धनों और सगोत्रता के कारण सम्प्रभुता के उत्तराधिकार के मामले में उच्चतम अधिकार पायेंगे। उसका भतीजा और सीरिया में परममठाधीश अबुलफतह शत्रु की तलवार का शिकार हो गया; कोहिस्तान में परममठाधीश हुसैन केनी एक एक हत्यारे के छुरे का शिकार हो गया था—सम्भवतः हसन के दो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुत्रों में से एक उस्ताद के छुरे का—और उसका भाई अपने ही पिता के हाथों से मारा गया था, जिसे अपना खून बहाने में भी मजा आता था। बिना किसी सबूत अथवा अपराध की जांच के उसनें उन्हें कुर्बान कर दिया, इसलिए नहीं कि उन्होंने कोई कानून तोड़ा था, अपितु केवल इसलिए कि उसे हत्या करने में मजा आता था और उस भयानक नीति पर आचारण करना अच्छा लगता था, जिस पर चलते हुए संघ ने सम्बन्धों अथवा मैत्री के सब बन्धन तोड़ दिए थे और अपवित्रता व हत्या के बन्धनों को और भी अधिक कसकर अपना लिया था। उस्ताद की, जिसे यह नाम सम्भवत: इसलिए दिया गया था, क्योंकि जनमत ने परमाधिकारी के रूप में उसे उसके पिता का उत्तराधिकारी मान लिया था, केवल इस सन्देह के कारण हत्या कर दी गई कि वह हुसैन की हत्या से सम्बन्धित है और उसके भाई की इसलिए कि उसने शराब पीली थी। मतलब यह कि उस्ताद की हत्या इसलिए की गई, क्योंकि उसने अपराध से जो बिना आदेश के किया गया था, अपने पिता के विशेषाधिकार में हस्तक्षेप किया था और उसके भाई की इसलिए, क्योंकि उसने इस्लामवाद के सबसे कम आवश्यक कानूनों में से एक को तोड़ा था, यद्यपि उसका पालन संघ की पद्धति का ग्रंश था। अपने दो पुत्रों को मौत के घाट उतरवाकर परमाधिकारी ने अदीक्षितों और दीक्षितों को बाहरी पूजा सम्बन्धी ग्रादेशों और आन्तरिक अनुशासन के नियमों की अवज्ञा के प्रतिशोध का खूनी उदाहरण प्रस्तुत कर दिया, लेकिन इस प्रकट ध्येय के अतिरिक्त साबा के पुत्र के समक्ष एक अन्य ध्येय भी था—वह अपनी नस्ल को ही समाप्त करना चाहता था—सम्भवत: अपने पुत्रों को, क्योंकि वे अपने पिता क लम्बे शासन से निराश हो चुके थे और अधीरता से उसका स्थान लेने की आशा कर रहे थे। सम्भव है कि इसी कारण उसने उन्हें अयोग्य माना—ऐसे व्यक्ति, जिन्होंने आज्ञा का पालन करना न सीखा हो अथवा जिनमें आवश्यक शाही गुण न हों अथवा सम्भव है कि उसने उन्हें इसलिए एक ओर कर दिया हो, ताकि कहीं संघ उत्तराधिकारी के रूप में चलने वाले राजवंश का रूप लेकर डूब न जाये और परमाधिकारियों के अनुक्रम का फैसला मस्तिष्क और चरित्र एवं अधर्मिता और अपवित्रता की निकटतम नातेदारी से हो। सामान्यत: मानव-प्रकृति इतनी दानवी नहीं होती कि इतिहास लेखक किसी काम के अनेक सन्दिग्ध उद्देश्यों में से निकृष्टतम उद्देश्य के पक्ष में अपना फैसला दे, लेकिन इस पापी समाज के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संस्थापक के सन्दर्भ में, जिसने हशीशिनों के इस हत्यारे संघ की स्थापना की, भयानकतम ही अधिक सम्भव है।

नये सिद्धान्त के सर्वाधिक ध्येयनिष्ठ प्रचारकों में से, जिनकी हमने अभी चर्चा की है, दाई (प्रचारक) किया बुजुर्ग-उम्मीद, जिसने लेमिन के किले पर कब्जा करने के बाद उसे बीस वर्ष तक नहीं छोड़ा था, और लैंपिटनैंट अबूअली (कास्विन में दाई अर्थात् प्रचारक) अभी तक जीवित थे। जब साबा के पुत्र ने महसूस किया कि अब उसका अन्त निकट आ रहा है, तब उसने उन्हें अलामुत बुलाया और अपनी आखिरी वसीयत द्वारा उन दोनों में शासन को इस ढंग से बांट दिया कि अबू अली को बाहरी शासन और नागरिक प्रशासन मिला और किया बुजुर्ग-उम्मीद को वास्तविक परमाधिकारी के नाते उच्चतम आध्यात्मिक सत्ता और संघ का शासन मिला। इस प्रकार हसन साबा का देहान्त बहुत लम्बी उम्र पाकर हुआ। सत्तर वर्ष से अधिक बीत चुके थे, जब तोगरुल के शासनकाल में बीस वर्ष का यह युवक ईमान मुवाजिक के शिष्य के रूप में निजामुल्मुल्क के साथ पढ़ता था। वह यातना की शय्या पर न मरा—वैसे उसे अपने अपराधों के फलस्वरूप मरना इसी तरह चाहिए था—अपितु अपनी स्वाभाविक मौत मरा—वह कटारों से नहीं मरा, जो उसने अपने श्रेष्ठ और महत्तम समकालीनों के सीनों में घोंपे थे, अपितु उम्र के प्रभाव के कारण। वह ३५ वर्ष तक रक्तरंजित शासन करता रहा, जिसके दौरान वह न केवल कभी भी अलामुत के किले से न निकला, अपितु इस लम्बी अवधि में अपने कमरे के छज्जे पर भी दो बार से अधिक न आया। वह एक ही स्थान पर जम कर बैठा रहता था, एक ही योजना पर डट कर काम करता था, वह नर-संहार और विद्रोह द्वारा साम्राज्यों के तख्ते पलटने पर विचार करता था अथवा अपने संघ के लिए नियम और कामुकता व अपवित्रता के गुप्त सिद्धान्त की प्रश्नोत्तरी लिखता था।

अपनी सत्ता के केन्द्र पर स्थिर रहकर उसने अपनी परिधि को खुरासान और सीरिया के अन्तिम छोरों तक बढ़ा लिया था—अपने हाथ में कलम लेकर उसने अपने हशीशिनों के छुरों का पथ प्रदर्शन किया। युद्ध और महामारी की तरह वह स्वयं विधाता के हाथ में था—कमजोर सम्राटों और भ्रष्टाचारी राष्ट्रों को सजा देने के लिए चाबुक के रूप में।

दूसरा अध्याय समाप्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षु: को श्रद्धांजलियां

आर्य केन्द्रीय सभा की बैठक में वक्ताओं के उदगार

[हमारे कार्यालय प्रतिनिधि से]

२८ दिसम्बर बुधवार का दिन था—शाम के चार बजे थे। स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु: जी के निधन को एक सप्ताह वीत चुका था लेकिन उनके मित्रों परिचितों, सम्बन्धियों और प्रशंसकों के शोक का ज्वार-भाटा थमने में ही न आ, रहा था। ऐसे समय उस स्वर्गस्थ आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए दिल्ली की लगभग दो सौ आर्यसमाजों के संगठन आर्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान में आर्यसमाज दीवानहाल में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री और आर्यसमाज दीवानहाल के प्रधान श्री सूर्यदेव ने इस सभा के सभापतित्व के लिए आर्यसमाज के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती का नाम प्रस्तुत किया। स्वामीजी ने आसन ग्रहण किया और अत्यन्त आत्मीयतापूर्ण शब्दों में वेदभिक्षु: जी के सम्वन्ध में अपने हार्दिक उदगार प्रकट किए। स्वामी जी ने बताया कि वेदभिक्षु: जी ने उन्हीं की (स्वामी जी की) प्रेरणा से अपने जीवन के अन्तिम दिनों में दो दुर्लभ ग्रन्थ प्रकाशित किए ——वदिक सम्पत्ति और इनसाइड कांग्रेस। "उनसे मेरा परिचय केवल दस वर्ष पुराना था, फिर भी वे मेरे घनिष्ठ आध्यात्मिक मित्र थे। वे हमारे धार्मिक परिवार के सदस्य थे। यतिमण्डल के सदस्य होने के नाते अक्सर उनसे भेंट होती रहती थी। उन्होंने अपनी ओर से पहल करके मेरी कुछ पुस्तकें दयानन्द संस्थान से प्रकाशित कीं। वानप्रस्थी होने के नाते वे अपने परिवार को छोड़ चुके थे। आर्यसमाज—हिन्दू समाज ही उनका परिवार था। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति होना कठिन दिखाई देता है। मैं उन्हें अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि भेंट करता हूं।"

स्वामीजी के बाद भारतीय जनता पार्टी की दिल्ली शाखा के प्रधान और भूतपूर्व मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री केदारनाथ साहनी वेदभिक्षु: जी को अपनी श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए माइक पर आए। उन्होंने कहा कि "मुझे तो आश्चर्य इस बात का है कि वेदभिक्षु: जी सदृश सात्त्विक आहार-विहार वाले व्यक्ति तक सिरासिस आफ लिवर जैसी भयानक बीमारी पहुंची कैसे? साहनीजी ने वेदभिक्षु: जी के साथ अपने सम्बन्धों की चर्चा करते हुए कहा कि वेदमन्दिर और दयानन्द संस्थान उनकी अमिट निशानियां हैं। उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनकी इन निशानियों को चिरस्थायी रूप देने का प्रयत्न करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सनातन धर्म महासभा के प्रधान श्री प्रेमचन्द गुप्त ने उन दिनों की याद दिलाई, जब वे गोहत्या निरोध सत्याग्रह के सिलसिले में वेदभिक्षु: जी के साथ तिहाड़ जेल में बन्द थे। "कुछ दिन पूर्व मैं एक सड़क दुर्घटना में घायल हो गया, तो वेदभिक्षु: जी स्वयं अस्वस्थ होते हुए भी मेरी मिजाज-पुरसी के लिए अस्पताल में आये। तब यह कल्पना भी न की जा सकती थी कि वे इतनी जल्दी संसाररूपी रंगमंच से विदा हो जायेंगे और मुझे उनके शोक में आयोजित श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करना पड़ेगा। हिन्दुओं को संगठित करने के लिए उन्होंने जो प्रयत्न किए, वे अविस्मरणीय हैं। मैं अपने एक पुराने सहयोगी को श्रद्धांजलि भेंट करता हूं।"

गुप्तजी के बाद आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र "आर्यजगत्" के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार ने अत्यन्त भावपूर्ण शब्दों में वेदभिक्षु:जी को श्रद्धांजलि भेंट करते हुए कहा कि सन् १९६५ में जब पोप बम्बई आये और पूरी भारत सरकार उनकी चापलूसी में लगी हुई थी, तब वेदभिक्षु: जी ने (जिनका नाम तब पंडित भारतेन्द्रनाथ था) अकेले उनके भारत आगमन का तीव्र विरोध किया और देश को ईसाई षड्यन्त्रों से सचेत किया। वेद भाष्य के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने लगभग दो वर्ष तक नमक, मीठा और अन्न का त्याग किए रखा; जिससे उनका शरीर जर्जर हो गया। उनके हृदय में हिन्दू समाज की रक्षा के लिए क्रान्ति करने की जो आग धधक रही थी, उससे उनका स्वास्थ्य डगमगा गया, फिर भी वे अपने स्वास्थ्य की चिन्ता न करके काम में जुटे रहे—यहां तक कि दौरों में होने वाली आहार सम्बन्धी अनियमितताओं के कारण उनके जिगर ने जवाब दे दिया और वे इस रोग के शिकार हो गए। "मैं अपने एक पुराने साथी को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि भेंट करता हूं।"

अखिल भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष और भूतपूर्व संसद् सदस्य प्रो० बलराज मधोक लम्बे दौरे को बीच में ही छोड़कर उसी दिन सुबह दिल्ली लौटे थे। उनका गला बैठा हुआ था, फिर भी वे वेदभिक्षु: जी को श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए सभा में आए। उन्होंने कहा कि आज जब हिन्दुओं के एक सांझे मंच की आवश्यकता है, वेदभिक्षु: जी का चले जाना हिन्दू समाज की अपूरणीय क्षति है। उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हिन्दुओं का एक सांझा राजनैतिक मंच हो और वे हिन्दू राज्य की स्थापना के लिए संगठित हों।

"प्रखर राष्ट्रभक्त और निर्भीक पत्रकार"

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने महात्मा वेदभिक्षु: को एक प्रखर राष्ट्रभक्त और निर्भीक पत्रकार बताया। उन्होंने सरकार से मांग की कि वेदभिक्षु: जी की धर्मपत्नी पण्डिता राकेशरानी पर शासन द्वारा चलाये गये लगभग दो दर्जन अभियोग वापिस लिये जायें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(सभा में उपस्थित विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों ने रामगोपाल जी की इस मांग का समर्थन किया।)

रामगोपाल जी ने कहा कि जो काम बड़ी-बड़ी संस्थाएं मिलकर भी न कर सकीं, वह वेदभिक्षु: जी ने अकेले कर दिखाया। इस सिलसिले में उन्होंने "वैदिक सम्पत्ति" के प्रकाशन की चर्चा की और कहा कि कारणवश सार्वदेशिक सभा ने इस काम को हाथ में न लिया, लेकिन वेदभिक्षु: जी इसे पूर्ण करने में सफल रहे।

रामगोपाल जी ने बहन राकेशरानी को आश्वस्त करते हुए कहा कि वे अपने आप को एकाकी न समझें। "वेदभिक्षु: जी के अधूरे कार्य को पूरा करने में आर्यसमाज आपको पूर्ण सहयोग देगा।"

प्रसिद्ध साहित्यकार और "दिवंगत हिन्दीसेवी" ग्रन्थमाला के लेखक श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' ने बताया कि किस प्रकार जब सार्वदेशिक सभा ने उनकी पुस्तक "वन्दना के स्वर" को प्रकाशित करने में असमर्थता प्रकट की, तब भारतेन्द्रनाथजी ने इसे सहर्ष प्रकाशित करना स्वीकार किया। "मेरी ग्रन्थमाला "दिवंगत हिन्दीसेवी" में "वैदिक सम्पत्ति" के लेखक पण्डित रघुनन्दन शर्मा का जीवन परिचय सम्मिलित है। काश, ग्रन्थमाला का वह खंड भारतेन्द्रनाथ जी (वेदभिक्षु: जी) के जीवित रहते प्रकाशित हो जाता।"

भारत सरकार के भूतपूर्व उपप्रधान मन्त्री बाबू जगजीवनराम जी स्वास्थ्य खराब होने के बावजूद सभा में आए। (इससे पूर्व वे वेदभिक्षु: जी की मिजाज-पुरसी के लिए पन्त अस्पताल भी गए थे।) उन्होंने कहा कि वैदिक वाङ्मय का जनता की भाषा में अनुवाद कर उसे सर्वसाधारण के लिए बोधगम्य बनाना समय की मांग है। महात्मा वेदभिक्षु: ने इस दिशा में जो कार्य किया और इस प्रकार वैदिक साहित्य व भारतीय संस्कृति की गरिमा से जनसाधारण को लाभान्वित किया, वह शतमुख से सराहनीय है। अपने इस कार्य से उन्होंने भारतीय संस्कृति के प्रत्येक अभिमानी के हृदय में अपनी स्मृति को चिरस्थायी बना दिया। वे अकेले ही अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे। उनके द्वारा प्रारम्भ किए गए कार्य को पूरा करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इनके अतिरिक्त दिल्ली प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा, दलित वर्ग के नेता श्री चिन्तामणि आर्य, यूनीवार्ता के वरिष्ठ उप-सम्पादक श्री बनारसीसिंह, आर्यमहिला सभा की प्रधाना श्रीमती प्रेमशीला महेन्द्र और अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के कोषाध्यक्ष श्री इन्द्रसेन शर्मा ने भी वेदभिक्षु: जी की स्मृति में श्रद्धासुमन अर्पित किए। पण्डित अभिविनय भारथी ने "जय भारतेन्द्र ! जय वेदभिक्षु: !" शीर्षक कविता के माध्यम से अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। (यह कविता जन-ज्ञान के पिछले अंक में प्रकाशित हो चुकी है।)

(शेष पृष्ठ १२१ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमें अभिमान है कि हम हिन्दू हैं

वह व्यक्ति हिन्दू है जो हिमगिरि के धवल शृंगों से महोदधि की उत्ताल तरंगों तक विस्तृत इस भूखण्ड को अपनी पितृभूमि के रूप में मान्यता देता है, जो रक्त सम्बन्ध की दृष्टि से उसी महान् जाति का वंशज है, जिसका प्रथम उद्भव वैदिक सप्तसिन्धुओं में हुआ था और जो निरन्तर अग्रगामी होता अन्तर्भूत को पचाती तथा महनीय रूप प्रदान करती हुई हिन्दू जाति के नाम से सुख्यात हुई है। जो उत्तराधिकार की दृष्टि से अपने आपको उसी जाति का स्वीकार करता है तथा इस जाति की उस संस्कृति को अपनी संस्कृति के रूप में मान्यता देता है जो संस्कृत भाषा में संचित है—जिसकी अभिव्यक्ति इस जाति के इतिहास, साहित्य, कला, धर्मशास्त्र, व्यवहारशास्त्र, रीति-नीति, विधि-संस्कार और पर्वों के माध्यम से हुई है। इसके साथ ही उस व्यक्ति के लिए यह भी अनिवार्य है कि वह उपर्युक्त बातों के साथ इस देश को अपनी पुण्यभूमि, अपने अवतारों, ऋषियों, महर्षियों की अवतारस्थली एवं इसके कण-कण को तीर्थस्थली समझता हो। हिन्दुत्व के लक्षण हैं—एक राष्ट्र, एक जाति तथा एक संस्कृति। इन सभी लक्षणों को संक्षेप में इस भांति प्रस्तुत किया जा सकता है कि वही व्यक्ति हिन्दू है जो सिन्धुस्थान (हिन्दुस्थान) को केवल पितृभूमि ही नहीं, अपितु पुण्यभूमि भी स्वीकार करता है। हिन्दुत्व के प्रथम दो लक्षणों राष्ट्र तथा जाति का समावेश पितृभूमि शब्द में हो जाता है और तृतीय लक्षण एक संस्कृति की अभिव्यक्ति "पुण्यभूमि" शब्द से होती है, क्योंकि संस्कृति में ही सब संस्कार समाविष्ट हैं और वही किसी भूमि को पुण्यभूमि का रूप प्रदान करती है। उपर्युक्त परिभाषा को और भी अधिक संक्षिप्त रूप में निम्नलिखित श्लोक में प्रस्तुत किया जा सकता है—

आसिन्धु सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः॥

—वीर सावरकर

गुप्ता इन्वैस्टमैन्ट एण्ड कंस्ट्रक्शन
कम्पनी, बम्बई के सौजन्य से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्रेमचन्द्र शास्त्री

पुत्र ने पिता को हराया

बच्चो! बभ्रुवाहन का नाम आप में से बहुत कम ने सुना होगा। यह अर्जुन का पुत्र था। जिस प्रकार त्रेता युग में लव और कुश का युद्ध अपने पिता रामचंद्र जी के साथ हुआ था, उसी प्रकार द्वापर युग में बभ्रुवाहन का भी युद्ध अपने पिता अर्जुन के साथ हुआ था। उसमें बभ्रुवाहन ने अपने पिता को हरा दिया था। इसकी कथा इस प्रकार है—

महाराजा युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ करने का विचार किया और इसके लिए श्री कृष्ण जी की सलाह ली। श्री कृष्ण जी ने कहा कि अब अच्छा अवसर है। आप अश्वमेध यज्ञ अवश्य कीजिए। श्री कृष्ण की बात मानकर युधिष्ठिर ने यज्ञ करने का विचार पक्का बना लिया।

वेदव्यास मुनि ने युधिष्ठिर से कहा कि—हे युधिष्ठिर! चैत्र की पूर्णिमा में तुम्हारी दीक्षा होगी, इसलिए यज्ञ की सामग्रियों को इकट्ठा करो! अश्वविद्या जानने वाले सूत और ब्राह्मण तुम्हारी यज्ञ सिद्धि के लिए घोड़े की परीक्षा करें। घोड़े की परीक्षा हो जाने पर शास्त्र के अनुसार उसे छोड़ो और वह घोड़ा तुम्हारे यश को प्रदर्शित करता हुआ समस्त पृथ्वी पर भ्रमण करे। मुनि की आज्ञा से युधिष्ठिर ने सब सामग्री इकट्ठी कर ली। फिर मुनि ने कहा कि घोड़ा आज ही छोड़ो। युधिष्ठिर के पूछने पर घोड़े की रक्षा करने के लिए मुनि ने कहा कि अर्जुन पृथ्वी को जीतने में समर्थ है, उसके पास दिव्य अस्त्र, दिव्य धनुष और दिव्य बाण विद्यमान हैं, इसलिए अर्जुन ही उस घोड़े की रक्षा करे। मुनि की आज्ञा से युधिष्ठिर ने अपने परम प्रतापी वीर भाई अर्जुन से कहा कि जाओ, तुम इस घोड़े की रक्षा करो। तुम्हारे सिवाय अन्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोई भी वीर इसकी रक्षा करने में समर्थ नहीं है। उन्होंने फिर कहा कि हे वीर ! यदि कोई राजा तुम्हारे विरुद्ध आचरण करे, तो जिस भांति तुम्हारे साथ उसका युद्ध न हो वही उपाय करना और उन राजाओं को मेरे इस यज्ञ का वृत्तान्त कहके यज्ञ के अवसर पर आने के लिए उन्हें निमन्त्रण देना।

इतना कह अश्वमेध यज्ञ के लिए वह घोड़ा छोड़ दिया गया। वीर अर्जुन सफेद घोड़े पर चढ़कर धर्मराज युधिष्ठिर की आज्ञानुसार अपने गाण्डीव धनुष को चढ़ाकर उस यज्ञ के घोड़े के पीछे-पीछे चलने लगे। उस समय उस घोड़े और गाण्डीवधारी अर्जुन को देखने के लिए नर-नारियों की अपार भीड़ एकत्र हो गई। वे लोग कहने लगे कि देखो, वह घोड़ा जा रहा है, उसके पीछे महाबाहु कुन्तीपुत्र अर्जुन धनुष धारण करके जा रहे हैं। कुछ पुरुषों ने जाते हुए अर्जुन को देखकर कहना आरम्भ किया कि हे अर्जुन ! तुम्हारा कल्याण हो, तुम गमन करो, फिर आना। तुम्हारा मंगल हो, तुम्हारे मार्ग भयरहित हों। नर-नारियों के ऐसे मधुर वचन सुनकर अर्जुन चलने लगे। पाण्डवों द्वारा जो देश पहले जीते गए थे, घोड़ा उन्हीं देशों में विचरण करने लगा। वहां पर अर्जुन का घोर महायुद्ध हुआ। वे लोग अर्जुन की शरण में आकर निवेदन करने लगे कि हमें आज्ञा कीजिए, हम वही करेंगे। अर्जुन ने उन्हें अश्वमेध यज्ञ में आने का निमंत्रण दिया।

त्रिगर्त्त के बाद यज्ञ का घोड़ा प्राग्ज्योतिषपुर में गया। वहां भी भगदत्त के पुत्र वज्रदत्त ने घोड़े को पकड़ा। अर्जुन का उससे भी भयंकर युद्ध हुआ। इसी प्रकार वह घोड़ा आगे-आगे चलता रहा और अर्जुन ने वहां-वहां के लोगों को युद्ध में परास्त करके अपने आधीन किया और अश्वमेध यज्ञ में आने का निमन्त्रण दिया।

अर्जुन ने मणिपुर की राजकन्या चित्रांगदा से विवाह किया था। घोड़ा सभी देशों में विचरता हुआ मणिपुर में प्रविष्ट हुआ। वहां का राजा बभ्रुवाहन अपने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पिता अर्जुन का आगमन सुनकर अनेक प्रकार की भेंट और धन को लेकर ब्राह्मणों सहित विनीतभाव से उसके समीप आया। वभ्रु-वाहन के इस प्रकार आने पर अर्जुन के क्षात्रधर्म का स्मरण कर क्रोधपूर्वक उससे कहा कि तुम्हारा यह कार्य ठीक नहीं है। तुम क्षत्रियधर्म के वाहर हो। मैं युधिष्ठिर के यज्ञीय घोड़े की रक्षा करता हुआ तुम्हारे राज्य में आया हूं, तुम मेरे साथ युद्ध क्यों नहीं करते? हे मूर्ख! तू क्षत्रिय धर्म के वाहर हुआ है, मेरे युद्ध के लिए आने पर, जब तू युद्ध न करके शान्ति का व्यवहार कर रहा है, तव तुझे धिक्कार है। मैं तो युद्ध के लिए आया हूं और तू स्त्रियों की भांति मुझे शांत करना चाहता है। यदि मैं शस्त्र रहित होकर तेरे पास आता, तो तेरा ऐसा करना ठीक होता। पिता द्वारा वार-वार तिरस्कार के वचन सुनकर महातेजस्वी राजा वभ्रु-वाहन को जोश आ गया और उसने युद्ध करने का विचार वना लिया। वह सुवर्ण से वने कवच आदि धारण करके एक सौ तर-कस लेकर युद्ध की सब सामग्रियों के साथ तेज दौड़ने वाले उत्तम घोड़े के रथ पर बैठ गया। अनन्तर उसने यज्ञ के घोड़े के निकट जाकर उसे पकड़ लिया। अर्जुन ने जब देखा कि उसके पुत्र वभ्रुवाहन ने घोड़े को पकड़ लिया है तो वह वहुत प्रसन्न हुआ और उसको रोकने लगा, दोनों में युद्ध आरम्भ हो गया। राजा वभ्रु-वाहन ने विषैले सर्प सदृश विष में बुझे हुए वाणों से वीर अर्जुन को पीड़ित किया। इसी प्रकार देवासुर-संग्राम के समान उन दोनों पिता-पुत्र का भयंकर युद्ध होने लगा। तत्पश्चात् वभ्रुवाहन ने हंसकर एक ऐसा वाण मारा जो पंखसहित अर्जुन के शरीर में घुस गया। इससे अर्जुन को वहुत पीड़ा हुई और वह अचेत हो गया। फिर सावधान होकर अर्जुन ने अपने पुत्र कहा कि हे महावाहो वभ्रुवाहन, तुम धन्य हो। मैं तुम्हारा ऐसा कार्य देखकर परम प्रसन्न हुआ हूं। पुत्र! तुम क्षण-भर युद्ध में स्थिर रहो, मैं तुम्हारे ऊपर वाणों को छोड़ता हूं। यह कह अर्जुन उसके ऊपर वाण वर-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साने लगा। वभ्रुवाहन ने गाण्डीव से छूटे हुए उन बाणों को मन्त्रों से दो-दो तीन-तीन टुकड़े करके गिरा दिया। अर्जुन के दिव्य वाणों ने वभ्रुवाहन के रथ की सोने से वनी ध्वजा काट दी और हंस के उसके वड़े-वड़े घोड़ों को मार डाला। राजा वभ्रुवाहन अत्यन्त क्रुद्ध होकर पैदल ही अपने पिता के साथ युद्ध करने लगा।

अपने पुत्र के पराक्रम से अत्यंत प्रसन्न होकर अर्जुन ने उसे अधिक पीड़ित नहीं किया। वभ्रुवाहन ने वाला स्वभाव के कारण उत्तम पंखवाली पत्री से पिता का हृदय छेद डाला। वह बाण अर्जुन के अन्दर घुस गया और उसने बहुत कष्ट दिया। उस पत्री से बेहोश होकर अर्जुन पृथ्वी पर गिर पड़ा। यह देख वभ्रुवाहन ने वाण छोड़ना वन्द कर दिया। अर्जुन के वाणों से वभ्रुवाहन भी अति घायल हो गया था, इसलिये पीड़ा को सहन न करके वह भी बेहोश होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। वभ्रु-वाहन की माता चित्रांगदा ने जब देखा कि पिता और पुत्र दोनों ही बेहोश होकर गिर पड़े हैं तो वह अत्यन्त दुःखी होकर रणभूमि में आ पति के पास बैठकर शोक-सन्तप्त हृदय से रोने लगी। अनन्तर सावधान होकर वह अर्जुन के पास आकर कहने लगीं—हे प्रिय, आप कुरुकुल के परम प्रिय हैं, आप उठिए। मैं आपके इस घोड़े को मुक्त करती हूं, आप घोड़े का अनुसरण कीजिए।

यह कह चित्रांगदा लम्बी सांस छोड़ती और बहुत विलाप करती हुई अपने प्राण त्यागने का निश्चय करके पति के दोनों पैर पकड़कर बैठ गई। इतने में वभ्रुवाहन की मूर्च्छा टूट गई और उसने माता को देखकर कहा—इससे बढ़कर और क्या दुःख होगा जो सदा सुख भोगने योग्य मेरी माता पिता के पीछे मर रही है! हाय! माता ने सर्वशस्त्रधारियों में श्रेष्ठ मृत पति को देखा है। जब मैं और मेरी माता, हम दोनों ही जीवित हैं तो ज्ञात होता है कि इस लोक में मृत्युकाल के आए विना पुरुष की मृत्यु किसी प्रकार नहीं होती। मैंने युद्ध में पितृ-हत्या की है, मैं महापापी हूं, मुझे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या प्रायश्चित्त करना चाहिए !

इसके अनन्तर बभ्रुवाहन ने आचमन करके प्रतिज्ञा की कि यदि मेरे पिता न उठेंगे तो मैं इस रणभूमि में अपना शरीर सुखा दूंगा। पितृहत्या के पाप से मेरा किसी तरह छुटकारा नहीं, मुझे निश्चय ही नरक मिलेगा। पितृ-शोक से व्याकुल राजा बभ्रुवाहन ने माता सहित अनशन व्रत धारण कर लिया।

इसके बाद चित्रांगदा और बभ्रुवाहन ने अमोघ औषधियों से अर्जुन का उपचार किया। उन औषधियों के प्रभाव से, बहुत समय के सोये हुए पुरुष की भांति आंखें मलते हुए वीरवर अर्जुन उठ खड़े हुए। पिता को उठा देखकर वे दोनों अति प्रसन्न हुए। पिता ने पुत्र को आलिंगन करके उसका मस्तक सूंघा।

अब अर्जुन अपने पुत्र बभ्रुवाहन से बोला कि हे पुत्र! आगामी चैत्री पूर्णिमा में युधिष्ठिर का अश्वमेध यज्ञ होगा, तुम माता और मन्त्रियों सहित वहां आना। बभ्रुवाहन ने अर्जुन से प्रार्थना की कि मैं अश्वमेध यज्ञ में अवश्य आऊंगा, आप आज एक रात्रि यहीं विश्राम कर कल चले जाइए। अर्जुन ने कहा कि मैं तो घोड़े के पीछे-पीछे चल रहा हूं, घोड़ा यदि नहीं रुकेगा तो मैं भी नहीं रुक सकता। तुम्हारा मंगल हो, मैं अब जाता हूं। इतना कह कर अर्जुन वहां से घोड़े के पीछे-पीछे चल दिया।

बालको ! बभ्रुवाहन की वीरता आपने देखी ! उसने अपने पिता अर्जुन को भी, जिसे युद्ध में कोई भी नहीं जीत सकता था, युद्ध में हरा दिया। ×

(पृष्ठ ११५ का शेष)

अन्त में श्री सूर्यदेव ने एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसमें वेदभिक्षु: जी के कार्यों का विस्तृत उल्लेख करने के बाद श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित लोगों का यह संकल्प व्यक्त किया गया कि वेदभिक्षु: जी के अधूरे कार्य को न केवल पूरा किया जायेगा, अपितु दुगुने उत्साह के साथ जारी रखकर उसे विस्तार दिया जाएगा।

सभा में कालकाजी, श्रीनिवासपुरी, लाजपतनगर, शाहदरा, पटेलनगर, गाजियाबाद सदृश सुदूरवर्ती स्थानों से भी सैंकड़ों लोग वेदभिक्षु: जी को अश्रुपूरित नयनों से श्रद्धांजलि अर्पित करने आए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गांधी ने कहा था—

देश के विभाजन से पहले मेरे शरीर के दो टुकड़े होंगे

मैं अहिंसा का पुजारी होने के नाते प्रस्तावित विभाजन का बलपूर्वक विरोध नहीं कर सकता, यदि भारत के मुसलमान वास्तव में चाहें। परन्तु मैं भारत के विभाजन के कार्य में स्वेच्छा से भाग नहीं ले सकता। मैं उसका विरोध करने में प्रत्येक अहिंसात्मक उपाय का इस्तेमाल करूंगा। विभाजन एक मिथ्यावाद है। मेरी आत्मा इसके खिलाफबगावत करने लगती है कि हिन्दुत्व और इस्लाम दो विरोधी संस्कृतियां और सिद्धांत हैं। मैं इस विचार के खिलाफ हूं कि लाखों भारतीयों ने, जो कल तक हिन्दू थे, आज सिर्फ इस्लाम ग्रहण कर लेने से अपनी राष्ट्रीयता को भी बदल दिया है।

(हरिजन, १३ अप्रैल १९४०)

एम्बिट कार्पोरेशन

एटलांटा बिल्डिग, बम्बई

के सौजन्य से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिए

१.	चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	६० पैसे
२.	भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षु:	५० पैसे
३.	क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	५० पैसे
४.	हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु:	५० पैसे
५.	मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	५ रु०
६.	हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	५० पैसे
७.	पोस्टर दो प्रकार के	८० पैसे
८.	इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	५० पैसे
९.	शुद्धि का मंत्र—कुंवर चांदकरण शारदा	८० पैसे
१०.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी	५० पैसे
११.	हिन्दू जागो ! देश बचाओ !	५० पैसे
१२.	इस्लाम—एक परिचय	५० पैसे
१३.	Bible in the Balance	६० पैसे
१४.	A Challenge to the Christian Faith	२५ पैसे
१५.	पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु:	५० पैसे
१६.	पादरियों को चुनौती	५० पैसे
१७.	बाइबिल को चुनौती—ओम्प्रकाश त्यागी	५० पैसे
१८.	क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	५० पैसे
१९.	...और पादरी भाग गया	५० पैसे
२०.	Christianity Unmasked	१.०० पैसे
२१.	The Clarion Call	४० पैसे
२२.	जन-ज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक	६ रु०
२३.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	५० पैसे
२४.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	५० पैसे
२५.	तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	६० पैसे
२६.	जन-ज्ञान का महान् हिन्दू विशेषांक	६)

१००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत और
५००० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन
प्रत्येक आदेश के साथ १/४ धन अगाऊ भेजें ।

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

१. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाए जाएं।

२. मजहव के आधार पर पुलिस, सेना व सभी सरकारी विभागों में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

३. कश्मीर, असम व देश के सभी भागों में पाकिस्तानी घुस-पैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

४. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

५. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाए और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाए।

६. अल्पसंख्यक-वहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग वन्द हो और तुष्टी-करण की नीति समाप्त की जाए।

७. कश्मीर सम्वन्धी धारा ३७० तुरन्त हटाई जाए और वहां भारत के नागरिकों के वसने की व्यवस्था हो।

८. मजहव के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

९. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उनको वोट का अधि-कार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथपत्र भरने का नियम बनाया जाए, जिसमें वह स्वीकार करे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत के प्रति रहेगी।

१०. गोहत्या का कलंक तुरन्त मिटाया जाए।

११. विहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का आदेश तुरन्त रद्द किया जाये।

अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान वी नां।
पंज तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां ॥
जगत भिखारी फिरत है सबको दाता राम।
कहु नानक मन सिमर तिह पूरन होवहि काम ॥
चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होय।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहि कोय ॥
जो उपजियो सो विनस है परो काल के गाल।
नानक हर गुन गाय ले छांड सकल जंजाल ॥
राम गयो रावण गयो जाको वहु परिवार।
कह नानक थिर कछु नहि सुपने जियु संसार ॥
झूठ बखान कहा करे जग सुपने जियु जात।
इनमें कछु तेरो नहिं नानक कहियो बखान ॥
विरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की।
लोभ ग्रसयो दसहु दिस धावत आस लगयों धन की ॥
संग सखा सव तज गये कोऊ न निवाहियो साथ।
कह नानक एह विपत में टेक एक रघुनाथ ॥

—श्री गुरु नानकदेव जी

जो हमको हरमेस उचरि है।
ते सव नरक कुंड महिं परि है ॥

—दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज

पंजाबी चन्दू हलवाई कराचीवाला

प्रधान कार्यालय—१८५, वालकेश्वर मार्ग, तीनवत्ती, वम्बई-४००००६

१. जवेरी वाजार २. ग्रांट रोड ३. कोलाबा ४. दादर टी० टी० ५. वरल नाका ६. सर्कल ७. ठाकुरद्वार ८. सूर्योदय स्टोर्स चर्च गेट ९. घाटकोपर (पश्चिम) १०. लिंकिंग रोड, वांदरा ११. रेलवे स्टेशन के सामने, सांताक्रुज (पश्चिम)

कारखाना—'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रान्ट रोड, वम्वई-४००००७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

१.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य ४४४)
२.	सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	४०)
३.	गीता का वैदिक भाष्य (पं० आर्यमुनि)	२५)
४.	वेदांजलि : ३६५ मंत्रों की प्रेरक व्याख्या	३०)
५.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या— पं० चमूपति)	१५)
६.	ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में : क्षितीश वेदालंकार	१५)
७.	संस्कारविधिः [सजिल्द] छोटा साइज	१)
	बड़ा साइज	१५)
८.	सरस्वतीन्द्र जीवन-चरित्र	३०)
९.	अग्निहोत्र दर्पण (डा० रामनाथ वेदालंकार)	२०)
१०.	सत्यार्थ-प्रकाश (१० | १५ इंच) स्थूलाक्षर	१५१)
	आर्ट पेपर पर	२५१)
११.	ज्योति स्तम्भ :	१०)
१२.	दयानन्द दर्शन :	१०)
१३.	योगासन :	२)
१४.	योग और ब्रह्मचर्य :	३)
१५.	दयानन्द चित्र दर्शन :	२०)
१६.	श्रीमद्दयानन्दप्रकाश :	२०)
१७.	LIGHT OF TRUTH	३०)
१८.	प्रकृति और सर्ग : आचार्य उदयवीर शास्त्री	६)
१९.	अथर्ववेद परिचय :	६)
२०.	संक्षिप्त महाभारत :	६)
२१.	वाल्मीकि रामायण :	६)

बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाएं।

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, पो० ऑ० अलीपुर, दिल्ली-३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने ग्राम-नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित कीजिए

सबसे पहले आप समिति के उद्देश्य और मांगें पढ़ डालिए। यदि आप उनसे सहमत हों तो कम से कम अपने १६ साथी और वनाइए। इस प्रकार २० सदस्य वनाकर उनके फार्म तथा उनके पूरे शुल्क का ड्राफ्ट "अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति" के नाम का वनाकर केन्द्रीय कार्यालय, नई दिल्ली को भेजिए। साथ ही स्वीकृति के लिए पत्र भी लिखें।

स्वीकृति प्राप्त होने पर आप में से जिन्हें संयोजक वनाया जाए— वे एक अस्थायी कोषाध्यक्ष व मंत्री नियुक्त कर लें तथा अपने यहां विधिवत् कार्यालय वना लैटर-हैड, रसीद बुक आदि छपवा लें। स्थापना के दो मास के भीतर आप एक कार्यकर्ता सम्मेलन बुलाएं और रात्रि को सार्वजनिक सभा हिन्दू रक्षा सम्मेलन के रूप में रखें।

आपका लक्ष्य अधिक से अधिक सदस्य वनाना हो। अपने सदस्यता शुल्क व दान से सम्मेलन कीजिए। साहित्य वांटिए, पोस्टर लगाइए और संगठन को सुदृढ़ बनाइए।

२० सदस्यों के बाद बने सदस्यों का चौथाई शुल्क आप केन्द्र को भेजेंगे। दान रूप में एकत्र सम्पूर्ण धन आप अपने क्षेत्र में व्यय कर सकेंगे, किन्तु आपको सारा हिसाव नियमानुसार रखना होगा।

केन्द्र कभी भी आपके आय-व्यय की जांच कर सकेगा और केन्द्र को यह भी अधिकार होगा कि वह अनियमितता प्रतीत होने पर आपकी समिति भंग कर नयी समिति गठित कर सके।

हिन्दू रक्षा समिति वस्तुतः राष्ट्र के गौरव, परम्पराओं, इतिहास और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए कृतसंकल्प सर्वस्व-समर्पित देशभक्त का संगठन है। अतः सव इसी दिशा में सोचते हुए सभी कार्य सम्पन्न करें, ताकि सफलता मिल सके।

हम किसी भी संकट में सेवा के लिए सदा प्रस्तुत हैं।

(प्रो०) धर्मवीर, प्रधान मंत्री
अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, करौलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'जन-ज्ञान' मासिक की एजेंसी के नियम

१—कम से कम १० प्रतियां प्रतिमास मंगाने पर एजेंसी दी जा सकेगी।

२—दो रुपया प्रति के हिसाब से रक्षा धन अमानत रूप में जमा कराना होगा, जो एजेंसी समाप्त होने पर लौटा दिया जाएगा।

३—दस प्रतियां बीस रुपये में प्रतिमास भेजी जायेंगी।

४—कम से कम बीस प्रतियां मंगाने पर एक रुपया पचहत्तर पैसे प्रति के हिसाब से भेजी जाएंगी।

५—प्रतियां घटाने-बढ़ाने की सूचना सम्बन्धित मास की २५ तारीख तक धन सहित मिल जानी चाहिए।

६—बची हुई प्रतियां अभिकर्त्ता अपने व्यय पर लौटा सकेंगे।

७—किसी भी विवाद का निर्णय दिल्ली न्यायक्षेत्र के अन्तर्गत होगा। दयानन्द संस्थान के अध्यक्ष का निर्णय अभिकर्त्ता को मान्य होगा।

धन-मनीआर्डर-ड्राफ्ट "दयानन्द संस्थान" के नाम से ही भेजें।

—प्रबन्धक

हमारा नया साहित्य

१. इस्लाम क्यों छोड़ा ?

मूल्य : ५० पैसे

२. The Clarion Call

मूल्य : ४०

३. जय हिन्दू : पृष्ठ २२८

मूल्य : ६

४. मोपला (उपन्यास) वीर सावरकर

मूल्य : ५ रु०

अधिक से अधिक मंगाएं : बांटें

दयानन्द संस्थान

वेद मंदिर, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) D—C—201/Regd. No. 107119/65

वेद मन्दिर पो० आ० अलीपुर दिल्ली-३६

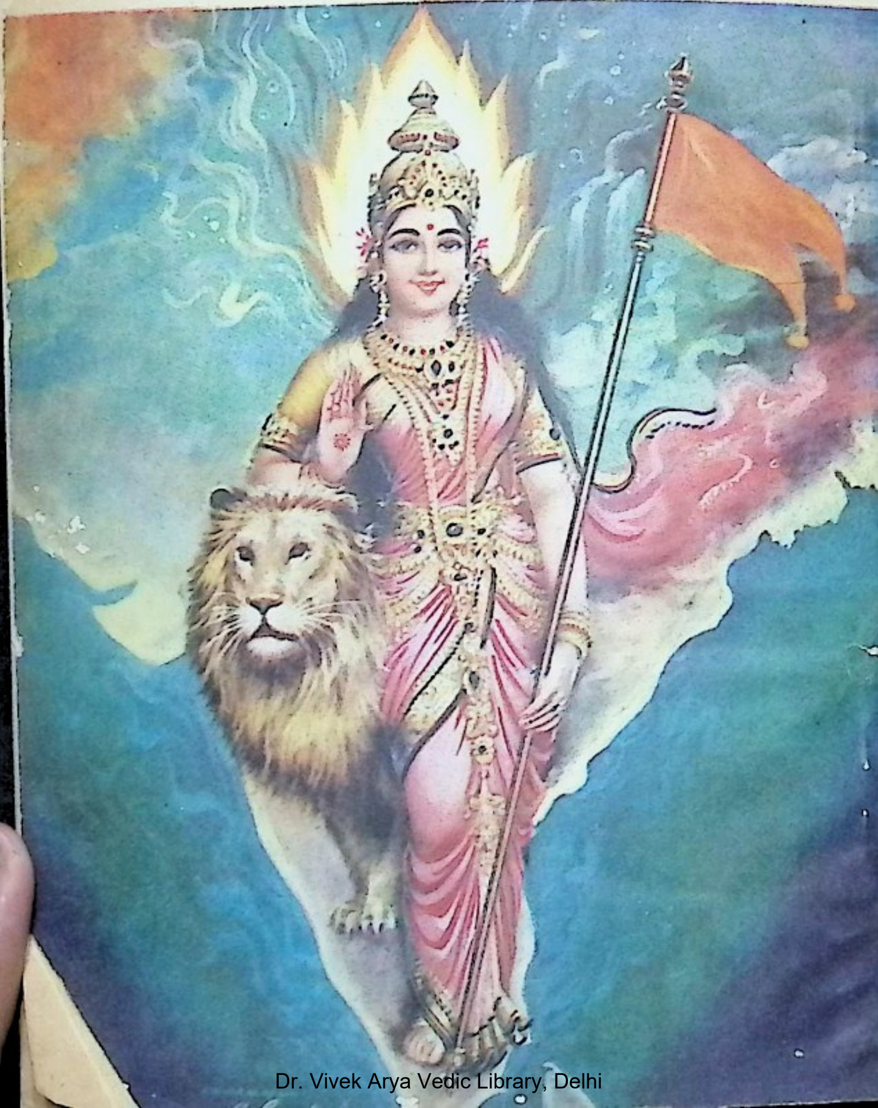

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi